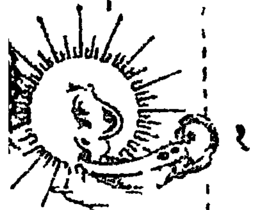




प्राक्कथन

श्रावक के अनेक धार्मिक कृत्यों में से पूजा और दान को आगम मे मुख्य बताया है। इसके लिये आचार्यप्रवर श्री कुन्दकुन्दस्वामीने रयणसार में कहा है कि:—

दाणं पूजा मुक्खं सावयधम्मे ण सावया तेण विणा।
झाणाज्झयणं मुक्खं जइधम्मं ण तं विणा तहा सोवि ॥११॥

अर्थात्—श्रावक धर्म में दान और पूजा मुख्य हैं, इनके विना वह श्रावक नहीं है। यति धर्म में ध्यान और अध्ययन प्रधान है। इनके बिना वह यति नहीं है।

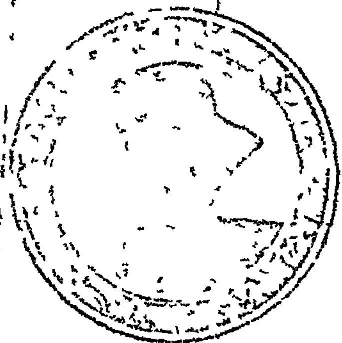
श्री सोमदेवसूरी कहते हैं कि:—

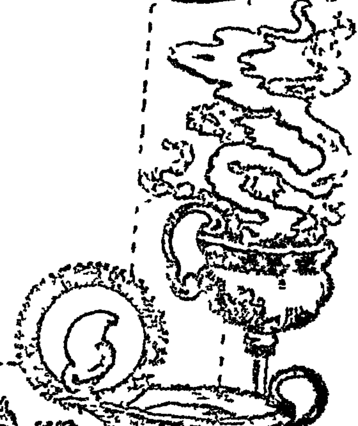
देवपूजामनिर्माय मुनीननुपचर्य च
यो भुञ्जीत गृहस्थः सन् स भुञ्जीत परं तमः ॥ यश. आ. ८









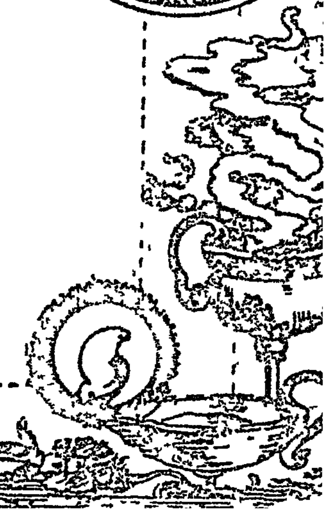



भावार्थः— जो गृहस्थ होकर बिना देवपूजा किये और मुनियों को दान दिये बिना ही यदि भोजन करले तो वह घोर अन्धकार का भागी होता है।

भगवान् जिनसेन स्वामीने भी देवपूजा को आर्यषट्क मे गिनाकर वह आर्योंका मुख्य एवं आवश्यक कार्य बताया है।

प्रसन्नता की बात है कि स्व एव परका यह परम मगलकारक कार्य सदा से अब तक बराबर चला आ रहा है। यद्यपि यह सत्य है कि ज्यों ज्यों समाज का ह्रास होता गया है और उसके वैभव मे अन्तर पड़ता गया है त्यों त्यों उसके अन्य धार्मिक कार्यों के साथ २ इस विषय मे भी पर्याप्त न्यूनता आगई है, फिर भी दि. जैन समाज मे यह अभी तक चला आरहा है और प्रायः सर्वत्र ही न्यूनाधिक रूप मे पाया जाता है यह अत्यन्त हर्ष का विषय है।

प्रायः भारत के सभी भागो मे बिखरी पड़ी या पाई जाने वाली मूर्तियों आदि ऐतिहासिक एव पुरातत्त्व सम्बन्धी सामग्री का सूक्ष्मेक्षिका के द्वारा पर्याप्त पर्यवेक्षण करने पर यह विदित हुए बिना नहीं रह सकता कि दि. जैन धर्म का यह देव पूजन से सम्बन्ध रखने वाला विषय प्राचीनतम होने के सिवाय भारत मे बहुत कालतक व्यापक रूप से सम्मान्य रह चुका है जिसकी कि तथ्यता को अच्छी तरह सिद्ध कर सकने वाले प्रमाणो का दैव दुर्विपाक अथवा तद्विषयक रुचिमान् श्रीमानो और धीमानों

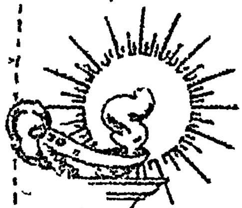



की विरलता के कारण भूगर्भ से बाहर दृश्य जगत् में आना भी असभव नहीं तो असभव सरीखा अवश्य दिखाई दे रहा है; फिर भी जो कुछ दिखाई में आ चुका है या आ रहा है उससे यह स्पष्ट हुए विना नही रहता कि जिन भक्ति और पूजा का मार्ग सदा चला जाय इसके लिये अनेकों श्रीमानों और भूपतियोने प्राचीन समय मे अपरिमित व्यय करके उसके आयतनों—मूर्तियो और मन्दिरो का निर्माण किया था।

वास्तव में जिनेन्द्र भगवान् की पूजा, भक्ति, आराधना या उपासना ऐसी ही वस्तु है जो कि परिणामों मे वीतरागता के साथ २ परम शान्ति का प्रदान तो करती ही है साथ ही विशिष्ट पुण्यबन्ध के द्वारा इस भव तथा पर भव में महान् कल्याणों एव अभ्युदयों का भी प्रसव किया करती है।

शास्त्रो मे पूजन के पाच भेद बताये गये हैः—नित्य, आष्टाह्निक, चतुर्मुख, कल्पद्रुम, और इन्द्रध्वज। प्रस्तुत "सिद्ध चक्र मडल विधान" नित्य पूजा के ही एक प्रकार से सम्बन्ध रखता है।

यद्यपि यह विधान प्राय· आष्टाह्निक पर्व के दिनो में ही किया जाता है किन्तु इसका विषय—सम्बन्ध आष्टाह्निक पूजा के विषय भूत नन्दीश्वर द्वीप सम्बन्धी ५२ चैत्यालयों से सर्वथा भिन्न सिद्ध भगवान् के गुणो से है जो कि नित्य पूजा से सम्बन्धित है। आष्टाह्निक पर्व के दिनो मे कालकृत पवित्रता के सिवाय इसके किये जाने का सभवतः कारण यह भी है कि मैनासुन्दरी ने इन्ही दिनो मे इस विधान को करके महान् फल प्राप्त किया था।





सिद्ध चक्र ह्रीँ मंडल विधान



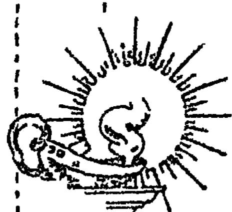




प्राय भारत वर्ष में इस विधान का सर्वत्र जैन समाज में प्रचार पाया जाता है। मालवा तथा खासकर इन्दौर मे तो प्रतिवर्ष ही प्रायः यह होता रहता है और कभी २ तो बहुत ही उच्च समारोह के साथ हुआ करता है। इसी वर्ष के आषाढ मास में दि. जैन समाज के अनभिषिक्त सम्राट् श्रीमन्त सेठ दा. वी. ती. शि. रा. ब. रा. भू. रा. रा. रा र. जैन दिवाकर श्रीमान् सर सेठ हुकमचन्दजी सा. की तरफ से कितने बड़े और सुन्दर समारोह के साथ यह विधान मनाया गया था उसकी महत्ता का अनुभव प्रत्यक्ष द्रष्टा ही कर सकते है जिसको कि देखने के लिये बाहर की भी जनता करीब १५ हजार की सख्या में उपस्थित हुई थी और जब कि उपस्थित समाज के सिवाय दि. जैन समाज की सभी भोजनशालाओं तथा स्थानीय जैन अजैन सभी भोजनालयों में आप की तरफ से भोजन कराया गया था। यह तो एक असाधारण समारोह था परन्तु अन्य श्रीमानों के द्वारा भी बहुत कुछ समारोह पूर्वक यहां यह विधान होता ही रहता है। ऐसे अवसरों पर इस विधान की शुद्ध मुद्रित प्रतियो की आवश्यकता का अनेक बार अनुभव किया गया है। अतएव इस को मुद्रित कराकर प्रकाशित किया जा रहा है।

यद्यपि कुछ वर्ष पहले सूरत से स्व. कविवर सतलालजी कृत एक सिद्ध चक्र मंडल विधान छप कर प्रकाशित हो चुका है. परंतु वह सस्कृत नही, हिन्दी है। संस्कृत का यह विधान जहां तक हम समझते है अभीतक कहीं से प्रकाशित नही हुआ है।

सिद्ध चक्र ह्रीं मंडल विधान





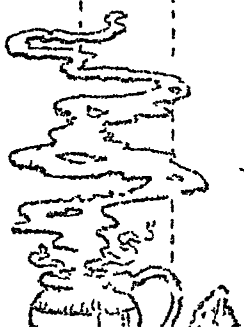
यह विधान उपर्युक्त अनेकोपाधि विभूषित रावराजा मर श्रीमन्त सेठ हुकमचन्दजी सा. के पौत्र एव मशीर बहादुर जैनरत्न श्रीमन्त सेठ राजकुमारसिहजी सा M. A., L. L. B के पुत्र स्व वीरेन्द्रकुमारसिहजी की स्मृति में उनके माता-पिता द्वारा प्रकाशित हो रहा है. जोकि इस विषय के खास रुचिमान् है। क्योंकि श्रीमान् भैया सा (राजकुमारसिहजी सा.) पूजन के खास प्रेमी है: इतनाही नहीं वल्कि आपका यह नियम है कि किसी खास प्रतिवन्ध के विना इन्दौर में रहते हुए विना पूजन किये कभी भोजन नहीं करते। आपने अपने गृह चैत्यालय में अपनी रुचि के अनुसार विशालकाय एव अत्यन्त मनोहर श्री १००८ चन्द्रप्रभु भगवान् की तथा एक सिद्ध भगवान् की प्रतिमा भी विराजमान करवाई है। और आप वहां नित्य ही पूजन किया करते है। आपके ही समान आपकी धर्मपत्नी [लाडी सा.] श्रीमती साहित्य-विशारदा सौ. प्रेमकुमारीजी सा भी सभी गृहस्थी के कार्यों में कुशल एव बुद्धिमती होने के सिवाय धर्म-रोचिष्णु है। आप दोनो ही की रुचि और इच्छा के अनुसार यह विधान प्रकाशित हो रहा है।

स्व. चि. वीरेन्द्रकुमारसिंहजी का जन्म श्रावण कृ. ४ स. १९९१ ता ३०-७-३४ और स्वर्गवास आषाढ शु. २ सं. १९९८ को हुआ। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आपका इलाज अच्छे से अच्छा और अपरिमित व्यय करके जो कुछ भी हो सकता था किया गया, किन्तु अत्यन्त दु.ख के साथ कहना पड़ता है कि वैद्यों, हकीमों और डॉक्टरों के सभी उपाय चिर प्रयत्न करने पर भी व्यर्थ ही गये और आपने सबके

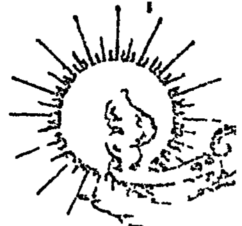




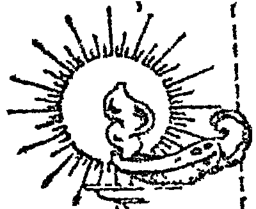


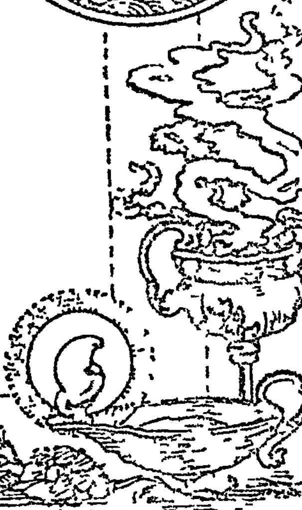


सामने देखते २ ता. २६-६-४१ की काल रात्रि में इन्द्रभवन को सदाके लिये सूना कर दिया। दादी रोती रहगई, बाबा हताश होकर हा हा करते ही रह गये, माता कुछ क्षण तक निश्चेष्ट और स्तब्ध रही और उसके बाद मूर्छित होकर गिरगई, पिता दहाड मारकर गिरगये और गुणों को याद कर २ के रोते ही रह गये, भाई बन्धु और दूसरे सभी स्नेही किकर्तव्य विमूढ हो गये। मतलब यह कि यह मर्त्यलोक का इन्द्रभवन क्षणभर में शोक का सागर बन गया और हाहाकार से सर्वत्र क्षुब्ध होगया। परन्तु क्या किया जा सकता था। बाल युवा वृद्ध. सरोग नीरोग, राजा रक, सज्जन दुर्जन आदि सभी को समान दृष्टि से देखने वाले अर्थतः विषमदृष्टि किन्तु नाम से समदृष्टि—यमराज की वक्र दृष्टि मे रच मात्र भी अंतर डाल सकने वाला उपाय, क्या अनन्तबल के धारक, सम्पूर्ण नरों सुरों और असुरों के द्वारा वन्द्य, त्रिलोकी पति तीर्थकर भगवान् भी प्राप्त कर सके है ? नही। अतएव इस अवसरपर भी सबको हाथ मलते ही रह जाना पड़ा और वह इन्द्रभवन की कली असमय—अत्यल्प काल मे ही सदा के लिये मुरझागई। जिनको जिस तरह भी मालुम हुआ उन सभीने तार चिट्ठी या समाचार पत्रों के द्वारा कुटुम्बियोंके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए स्वर्गीय आत्मा की सद्गति के लिये सद्भावना प्रकट की। बहुत से सज्जनोने प्रत्यक्ष उपस्थित होकर और बहुतसोंने परोक्षरूप से तारों या चिट्ठियों के द्वारा शोकाश्रुओ को प्रवाहित किया। परन्तु इससे क्या हो सकता था। घटित दुर्घटना का विघटन तो असभव ही था।





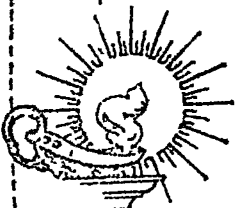




स्व. धीरेन्द्रकुमार बालक होने पर भी सभी भाइयों में बुद्धिमान स्नेही सरलपरिणामी मृदुभाषी अत्यन्त सुन्दर उदारहृदय भाग्यशाली और होनहार थे। उनकी स्मृति के लिये ही यह पूजनग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है जो कि स्वय मगलरूप है और इसके अनुसार पूजन में प्रवृत्ति करने वालों के अनन्त पापका विध्वस एव पुण्यराशि का संचय करने वाला है।

प्रस्तुत विधान की प्रेस कापी एक ही प्रति पर से की गई है जो कि इन्दौर के दि. जैन उदासीना-श्रम में स्थित अमर ग्रन्थालय से हमको प्राप्त हो सकी थी। इन्दौर के अन्य मन्दिरों में भी इसकी प्रतियां हैं परन्तु वे सब अमर ग्रन्थालय की पुस्तक पर से ही लिखी गई है। जिसपर से हमने प्रेस कापी की है, यद्यपि वह जगह २ शुद्ध भी कीगई है, फिर भी पर्याप्त अशुद्ध है। हमसे जहांतक भी हो सका है उसको शुद्ध करके ही प्रेस कापी करने का प्रयत्न किया है फिर भी इसमें जो कुछ अशुद्धियां रहगई है या हमसे ठीक नहीं हो सकी है हम उनके लिये पाठकों से क्षमा चाहते है; और विद्वानों से प्रार्थना करते है कि वे उनको शुद्ध एवं ठीक करलेने की कृपा करें।

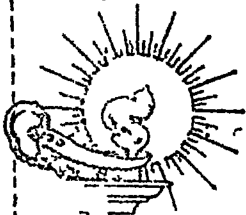
पाठक महानुभाव विधान को पढकर स्वय समझ सकेंगे कि वह किसी एक विद्वान् की सम्पूर्ण कृति न होकर एक संग्रहीत पाठ है; जिसके कि कर्ता भट्टारक श्री शुभचन्द्रजी है।





प्रस्तुत पाठ में एक ही जयमाला दो पूजनों में पाई जाती थी हमने वैसा न करके श्री १०८ आचार्य प्रवर पूज्यपाद स्वामी कृत सिद्धस्तोत्र को उस जयमाला की जगह रख दिया है। और उसका हिन्दी आशय भी अन्य जयमालाओंकी तरह हमने नहीं लिखा है। उसकी जगह हमने उक्त सिद्धस्तोत्र का बा. जुगलकिशोरजी सा. मुख्तार कृत पद्यानुवाद ही रखदिया है जो कि प्रायः सुन्दर है। इसके लिये हम मुख्तार सा. के आभारी है।

आठवीं पूजा के जितने मंत्र है वे सब महापण्डित आशाधरजी कृत सहस्रनाम के आधार पर ही है. इन नामों का अर्थ समझने में प्रायः विद्वानो को भी कठिनता प्रतीत होती थी, अतएव बम्बई के श्री १०५ ऐलक पन्नालाल दि. जैन सरस्वती भवन से प्राप्त श्री श्रुतसागर सूरिकृत प्राचीन संस्कृत टीका के आधार पर हमने ऐसे शब्दों की निरुक्ति और अर्थ देदिया है। कुछ महानुभावों की इच्छा थी कि आठवीं पूजा के मंत्रों को भगवज्जिनसेनाचार्यकृत सहस्रनाम के द्वारा परिवर्तित करदेना चाहिये. उनके संतोष के लिये भ. जिनसेनाचार्य के सहस्रनामगर्भित मंत्र भी अन्त मे देदिये गये है। अतएव इस पाठ मे आठवीं पूजा का मंत्र भाग दुहरा हो गया है। पूजन करने वाले सज्जनों को इनमें से यथारुचि किसी भी एक पाठ का उपयोग करलेना चाहिये।









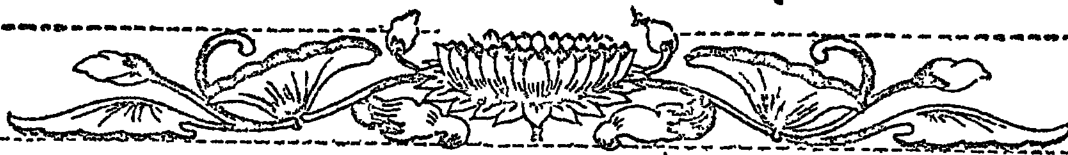




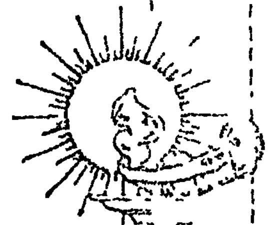
यद्यपि सशोधन करने में हमने पूरी सावधानी रक्खी है फिर भी कहीं २ हमने सदेहवश जैसा का तैसा भी पाठ छोड़ दिया है. इसके सिवाय हमारे अज्ञान, प्रमाद, अथवा दृष्टिदोष से भी जो अशुद्धिया रहगई हों या गलतियां होगई हों उनके लिये पाठकों से हम पुनः क्षमा मागते है और विद्वानों से नम्रतापूर्वक उनका संशोधन करलेने की प्रार्थना भी करते है।

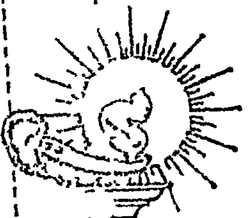
प्रकृत पाठ के सम्पादन मे ऊपर लिखे अनुसार बम्बई के श्री. १०५ ऐ. प. दि. जैन सरस्वती भवन के सिवाय इन्दौर के उदासीनाश्रम के अमर ग्रन्थालय तथा श्री सेठ माणिकचन्द मगनीरामजी को गोट के श्री १००८ शान्तिनाथ चैत्यालय दीतवारा के ग्रन्थभंडार से भी हमको यथावश्यक ग्रन्थसामग्री प्राप्त हुई है. अतएव हम उन ग्रथभंडारों और उनके अधिकारियों के अत्यन्त आभारी है।

पूजन का कुछ भाग बम्बई में भी छपा है वहांपर प्रेस की सुव्यवस्था करानेमें श्रीयुत पं. नाथूरामजी प्रेमी से हमको बहुत सहायता प्राप्त हुई तथा श्रीयुत पं. रामप्रसादजी शास्त्री से हमको पूजन के कुछ अन्तिम भाग के संशोधन आदि के लिये सहयोग प्राप्त हुआ है—क्योंकि हमारे बम्बई से इन्दौर चले आने पर उस भाग का संशोधन आपने ही किया है, अतएव दोनों सज्जनों के भी हम अत्यन्त आभारी हैं।







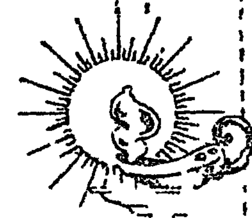
मंडल की रचना के सम्बन्ध में इतना कहदेना ही पर्याप्त है कि इन्दौर में अनेक प्रकार से इसकी रचना हुआ करती है, उनमेसे यहांपर स्थानीय मारवाड़ी मन्दिर के अधिकारियों के सौजन्य से प्राप्त चित्र के आधार पर एक शिखराकार रचना का ब्लाक तयार कराकर चित्र दिया जारहा है. फिर भी जो सज्जन परिमंडल—गोल आकार में चाहें उन्हे वैसा बना लेना चाहिये और यथाविधि पूजन करना चाहिये।

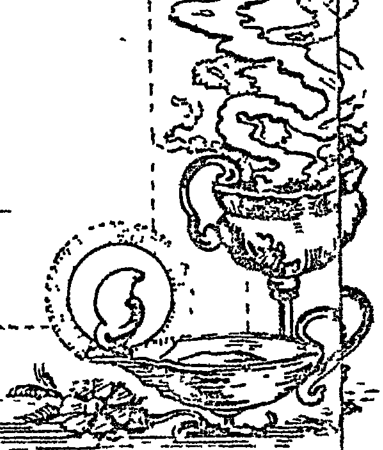
पूजन की सामग्री में एक व्यक्ति के लिये कम से कम लगभग तीस सेर अक्षत और करीब २ उतने ही पुष्प तथा दो हजार चालीस श्रीफल लगते है. दूसरी सामग्री भी इसी अनुमान से समझलेनी चाहिये।

हम यहांपर प्रकाशक महोदय की उस तीव्र पुण्यानुबन्धिनी सद्‌भावना की हार्दिक सराहना करते हैं जिसके कि कारण आजकल कागज की असाधारण महंगाई ही नहीं दुर्मिलता के होते हुए भी यह प्रकाशित हो रहा है। हम आशा करते हैं कि धर्मात्मा भव्य पुरुष इससे यथेष्ट लाभ लेकर प्रकाशक महोदय की भावना को सफल करते हुए अनन्त पुण्य का सचय करेंगे।

—खूबचन्द जैन.







श्रीशुभचन्द्राचार्यकृतम्. श्रीसिद्धचक्रसहस्रगुणीपूजामंडलाविधानम् ।

प्रणम्य श्रीजिनाधीशं लब्धिसाम्राज्यसंयुतम् ।
श्रीसिद्धचक्रयंत्रस्यार्चां सहस्रगुणां ब्रुवे ॥ १ ॥

अथ यजमानलक्षणम्,

विनीतो बुद्धिमान् प्रीतो, न्यायोपात्तधनो महान् ।
शीलादिगुणसम्पन्नो, यष्टा सोऽत्र प्रशस्यते ॥ २ ॥

अर्थ—विनयशील, बुद्धिमान्, प्रीतियुक्त, न्याय से धन उपार्जन करने वाला, शील आदि गुणों से सयुक्त, महान् पुरुष ही जिनागम मे विधान करने वाला यजमान प्रशसायोग्य कहा गया है ।

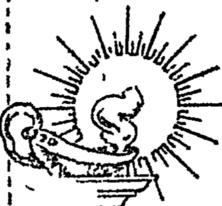
अथ याजकलक्षणम्,

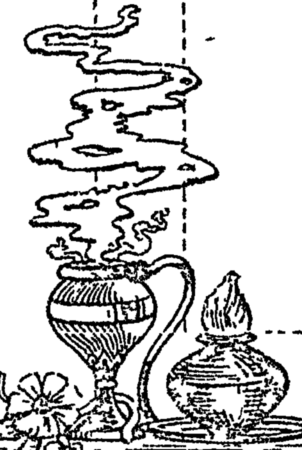
देशकालादिभावज्ञो, निर्मलो बुद्धिमान् वरः ।
सद्वाण्यादिगुणोपेतो, याजकोऽत्र प्रशस्यते ॥ ३ ॥

अर्थ—देश काल आदि के भावको जाननेवाला, निर्मल, बुद्धिमान्, श्रेष्ठ, समीचीन वाणी आदि गुणो से युक्त याजक जिन शास्त्र मे प्रशंसा योग्य माना गया है ।

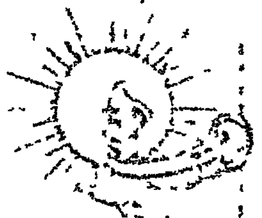
---

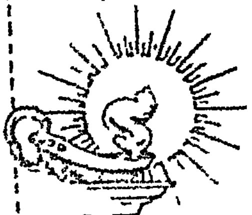
१ मूलप्रति में 'निर्मलो वुद्धिमान्' का निर्मल बुद्धिवाला अर्थ किया गया है । २ मूलप्रति में 'सत्य वचन बोलना', एसा अर्थ किया गया है । वह भी ठीक है ।











अथ आचार्यलक्षणम्,

दर्शनज्ञानचारित्रसंयुतो ममतातिगः ।
प्राज्ञःप्रश्नसहश्चात्र गुरुः स्यात् क्षांतिनिष्ठितः ॥ ४ ॥

अर्थ—जो सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्र से युक्त, ममता से रहित, विद्वान्, प्रश्न को सहन करने वाला–प्रश्न सुनकर घबडाने वाला नहीं है, क्षमा युक्त–क्रोध रहित है, वह जिन शास्त्र में गुरु-आचार्य माना गया है ।

अथ मंडपलक्षणम्,

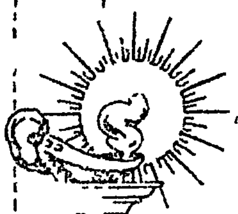
निर्मलं पृथुलं घंटानारिकातोरणान्वितम् ।
प्रलंबपुष्पमालाढ्यं चतुर्द्वाकुंभसंयुतम् ॥ ५ ॥
भेरीपटहकंसालतालमार्दलनिस्वनैः ।
श्रीकुलीनस्त्रीगीताढ्यं मंडपं कारयेद् बुधः ॥ ६ ॥

अर्थ—मंडल जिस में मांडा जाय वह मंडप विद्वान् पुरुष को ऐसा बनवाना चाहिये जो निर्मल-स्वच्छ हो, संकुचित न हो-पर्याप्त बडा हो, घंटा पताका तोरणोंसे युक्त हो, बडी २ पुष्प मालाओं से पूर्ण





१ मूलप्रति में इसका अर्थ 'प्रश्न सहित उत्तर के जानने वाला' ऐसा किया गया है । २ इसका अर्थ 'निर्मल चंदोवा' से युक्त किया गया है । यहां पर चदोवा का वाचक कोई शब्द नहीं है । किन्तु मंडल पर चंदोवा होना आवश्यक है ।





हो, तथा जिसके चारो कोणो मे कुभ रक्खे गये हों, एवं भेरी पटह कॅसाल झाझ मजीरा के शब्दो के साथ २ सुदर कुलीन स्त्रियो के गीतो से जो परिपूर्ण है ।

अथ सामग्रीलक्षणम् ।

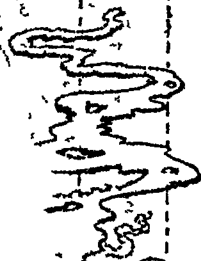
स्वभावोत्कर्षणी पूजा नेत्रमानसहारिणी ।
सामग्री शस्यते सद्भिर्निखिलानंदकारिणी ॥ ७ ॥



अर्थ—पूजा अपने भावो-परिणामोको वढानेवाली-उनमे उत्कर्ष लानेवाली है । अतएव सत्पुरुषोके द्वारा उसकी सामग्री वही प्रशसनीय मानी जाती है जो हर्ष मे उत्कर्ष करनेवाली हो, नेत्र और मन को हरण करनेवाली हो, सभी को आनन्द के देने वाली अथवा सम्पूर्ण आनन्द का प्रदान करने वाली हो ।

अथ यंत्रोद्धारः ।

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम्,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ ८ ॥



अर्थ—इस विधि के अनुसार सिद्ध यंत्र का उद्धार करे । उसकी रचना करे अथवा किसी वने हुए यत्र की स्थापना करे ।















अथ प्रथमपरिधौ कर्णिकाकारयंत्रैः सहाष्टकोष्टकपूजा ।

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥
सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

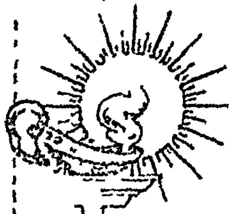
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर सवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठ' ठ.
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

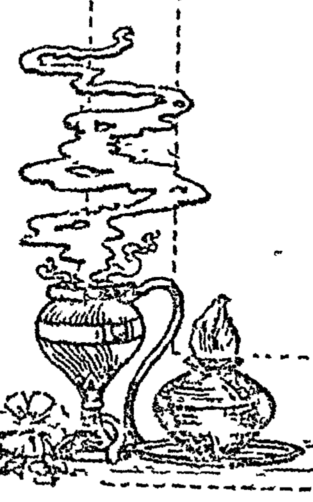
हलां चयो विना यैस्तु सुप्रसिद्धोऽर्धमातृकः ।
तैः स्वरैः महितं पूर्वदिश्यनाहतमर्चये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ ए ऐ ओ औ अं अः
अनाहतविद्यायै नमः पूर्वदिशि अर्धं निर्वपामीति स्वाहाः

आग्नेय्यां कादिसद्वर्णरुपेतानाहतं यजे ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ २ ॥

१—मूल्य प्रति में "सुभगै" की जगह सर्वत्र "सुरभै" तथा "उद्धैः" की जगह "उघै" पाठ है। एक जगह "द्रव्यैः" ऐसा संशोधित पाठ भी है। "सुभगै" की जगह "सुरसै" भी ठीक मालुम होता है।





ॐ ह्रीं क ख ग घ ङ अनाहतविद्यायै नमः अग्निदिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दक्षिणस्यां चवर्गेण युतानाहतमर्चये ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं च छ ज झ ञ अनाहतविद्यायै नम दक्षिणदिशि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

दक्षिणोत्तरकोणे वा टवर्गाद्यमनाहतम् ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं ट ठ ड ढ ण अनाहतविद्यायै नमः नैऋतादिशि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

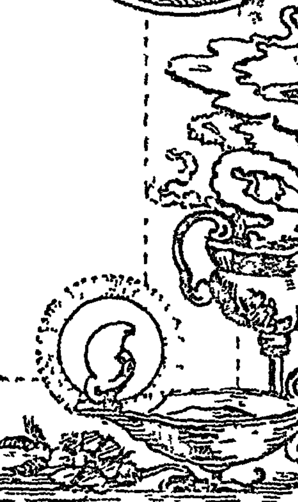
अनाहतं च वारुण्यां तवर्गोपेतमर्चये ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ५ ॥

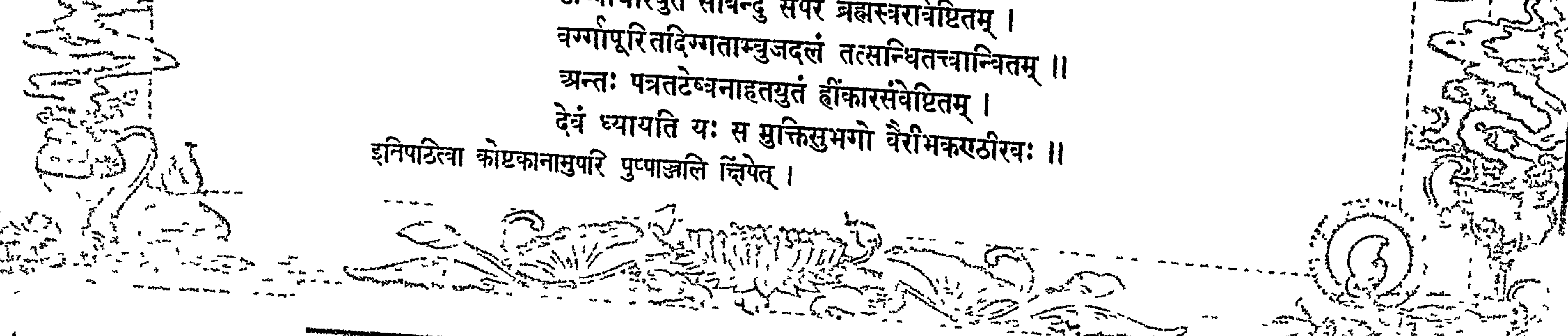
ॐ ह्रीं त थ द ध न अनाहतविद्यायै नमः पश्चिमदिशि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

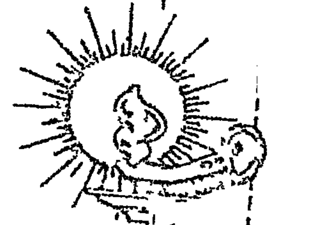
पवर्गोपेतमर्हामि वायव्यायामनाहतम् ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं प फ ब भ म अनाहतविद्यायै नमः वायव्यदिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।











यजे यरलवोपेतं कौबेर्यां दिश्यनाहतम् ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाचतादिभिः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं य र ल व अनाहतविद्यायै नमः उत्तरदिश्यर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यजेऽनाहतमैशान्यां युतं शषसहाचरैः ।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगंधाचतादिभिः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श ष स ह अनाहतविद्यायै नमः ऐशानादिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अत्र, "ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः" इति मन्त्रस्याष्टोत्तर शतं जाप्य देयम् ।

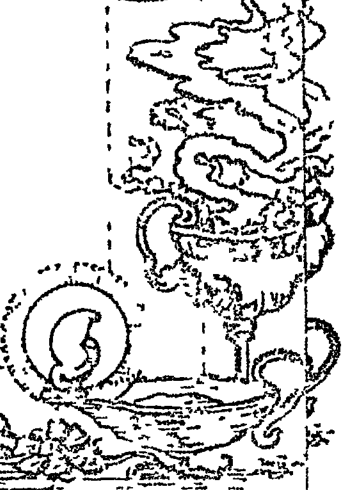
अथाष्टकोष्ठकपूजा ।

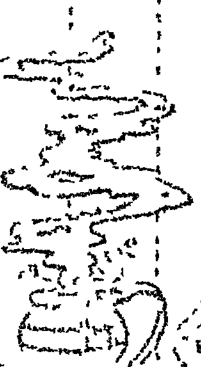
ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ॥
अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥

इतिपठित्वा कोष्टकानामुपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।





अथ स्थापना ।

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥
सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठ. ठः, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् ।

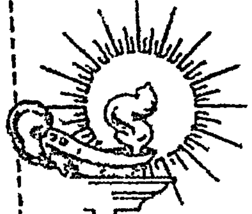
अथाष्टकम् ।

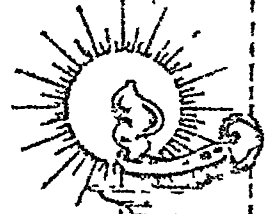
सिद्धौ निवासमनुगं परमात्मगम्यम् ।
हीनादिभावरहितं भववीतकायम् ॥
रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानाम् ।
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

१ ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाहा ।

२ ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाहा ।











३ ॐ ह्रीं दर्शनगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाहा ।

४ ॐ ह्रीं वीर्यगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जल नि. स्वाहा ।

५ ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जल नि. स्वाहा ।

६ ॐ ह्रीं अवगाहनगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जल नि. स्वाहा ।

७ ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जल नि. स्वाहा ।

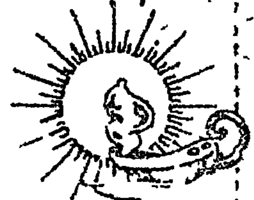
८ ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जल नि. स्वाहा ।

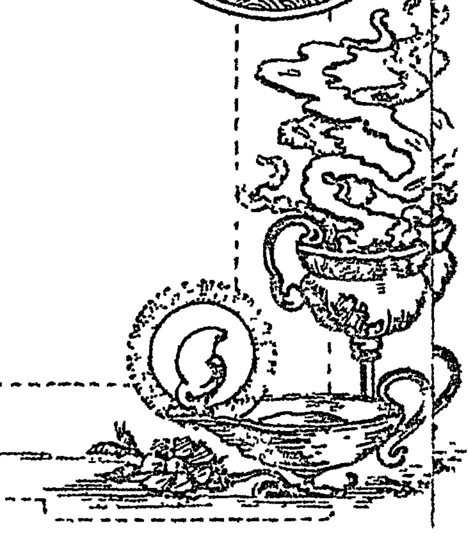
(आगे चन्दनादिक भी इन्हीं आठ मंत्रों को बोलकर आठ २ बार चढ़ाना चाहिये । केवल "जल" की जगह "चन्दन, अक्षतान्, पुष्पाणि" आदि शब्द बदल देना चाहिये ।)

आनन्दकन्दजनकं घनकर्ममुक्तम् ।
सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतम् ॥
सौरभ्यवासितभुवं हरिचन्दनाद्यैः ।—
गन्धैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ २ ॥ चन्दनम्







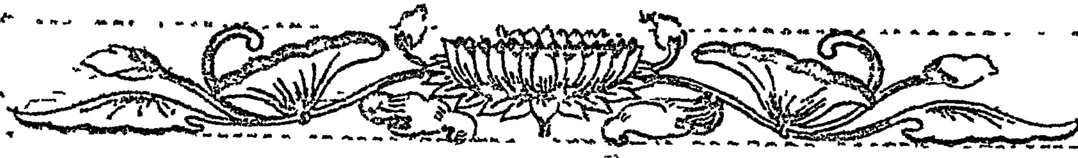


सर्वावगाहनगुणं स्वसमाधिनिष्ठम् ।
सिद्धस्वरूपनिपुणं कमलं विशालम् ॥
सौगन्ध्यशालिवनशालिवराक्षतानाम् ।
पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

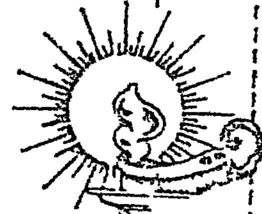
नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञम् ।
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाव्यतीतम् ॥
मन्दारकुन्दकमलादिवनस्पतीनाम् ।
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि

ऊर्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं ।
ब्रह्मादिबीजसहितं गगनावभासम् ॥
क्षीरान्नमाज्यवटकै रसपूर्णगर्भैः ।
नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्

आतंकशोकभयरोगमदप्रशान्तं ।
निर्द्वन्द्वभावधरणं महिमानिवेशम् ॥

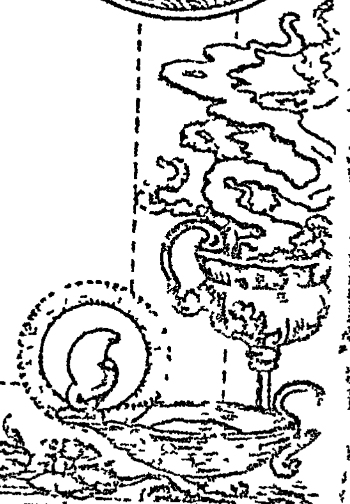










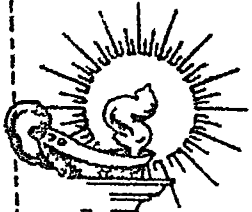
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातै ।—
दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥ दीपम्

पश्यन् समस्तभुवनं युगपन्नितान्तम् ।
त्रैकाल्यवस्तुविषये निविडप्रदीपम् ॥
सद्द्रव्यगंधघनसारविमिश्रितानां ।
धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥ धूपम्

सिद्धासुराधिपतियक्षनरेन्द्रचक्रै ।—
ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैश्च वन्द्यम् ॥
नारंगपूगकदलीफलमातुलिंगै[1]; ।
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥ फलम्

गंधाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः संगं वरं चन्दनम् ।
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकम् ॥

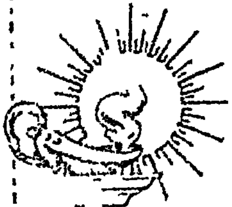
१—कहीं २ "नारिकेलै." ऐसा भी पाठ है ।













धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये ।
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोतरं वाञ्छितम् ॥ ९ ॥ अर्घम्

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपम् ।
सूक्ष्मस्वभावपरमं यदनन्तवीर्यम् ॥
कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यबीजम् ।
वन्दे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रम् ॥ १० ॥ पुष्पांजलिः

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा, इति मंत्रस्य पूर्ववदष्टोतरं शतं जाप्यं देयम् ।

अथ जयमाला ।

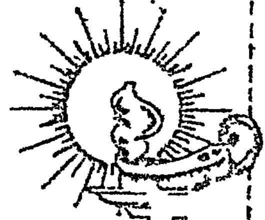
पणविवि परमेसुर णौमि जिणेसुर ।
नासियदुक्कियकम्ममलु ॥
पुण अक्खिभि भत्तिय णियमणसत्तिय ।
सिद्धचक्कजयमालपलु ॥ घत्ता
तमालासमासंपडाशीसिकेशा ।
खरा दारुणा लोयणारत्तवेषा ॥







सिद्ध चक्र ह्रीं मंडल विधान





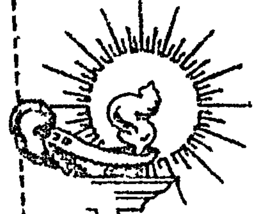


गहाभूयवेदाल णासंति चक्कम् ।
वरं भावयंणे मणो मिद्धचक्कम् ॥ १ ॥

ततो भीसणोच्छंकदाढा कराला ।
चलालोयणा ढीहजीहा विशाला ॥
वमीहुंति मिंहाइ दाढीनचक्कं ।
वरंभावयंणेमणो मिद्धचक्कं ॥ २ ॥

सरोसा मघोरा महाकालरूवा ।
जनूगरि आशीविया दुट्ठभावा ॥
मकोहा ण डंकंति होणायचक्कं ।
वरंभावयंणे मणो मिद्धचक्कं ॥ ३ ॥

जरो खेय रोगावली गंडमाला ।
पमेहाइ रूवावना कुट्ठसूला ॥
विनाशंति सासानिला वाहिचक्कं ।
वरं भावयंणे मणोमिद्धचक्कं ॥ ४ ॥









सधूमावलीभीसणासंजलंता ।
फुलिंगाइ मेलंति चंडा दिगंता ॥
न डाहंति देही सिहीजालचक्कं ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ॥ ५ ॥

सकल्लोललोलावहोलातरंगा ।
अपारा य घोषावदी सिंधुगंगा ॥
अगाधा सुतारंति हो णीरचक्कं ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ॥ ६ ॥

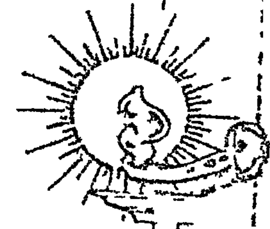
कसापासकुंतासभल्लायमल्ला ।
सकोदंडवाणा करे भिंडमाला ॥
न मारंति तं संगरे चोरचक्कं ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ॥ ७ ॥

सगाढा विबंधा घना घोरबंधा ।
असेसानियंगा उबंगा विबंधा ॥









विमुंचंति सासुंखलायं सचक्कं ।
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ॥ ८ ॥

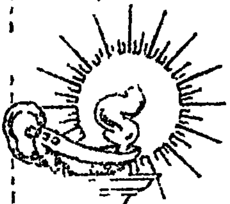
सुणीसग्गिभाणेण कम्मट्ठणासं ।
ललाटे सुवीयं करे मोक्खवासं ॥
कुणेदी यकी दिट्ठि भाणं पहाओ ।
सुछंदोवि एसो भुयंगप्पयाओ ॥ ६ ॥

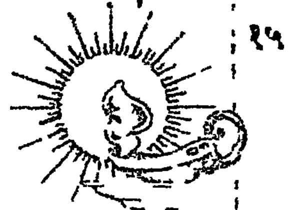
इयवरजयमाला परमरसाला ।
विधुसेणेन वि कहियथुहिं ॥
जो पढइ पढावइ नियमणि भावइ ।
सो णरु पावइ सिद्धसुहं ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं सम्मत्त णाण दंसण वीरिय सुहम अवग्गहण अगुरुलघु अव्वाह अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा ॥ पूर्णार्घम् ॥







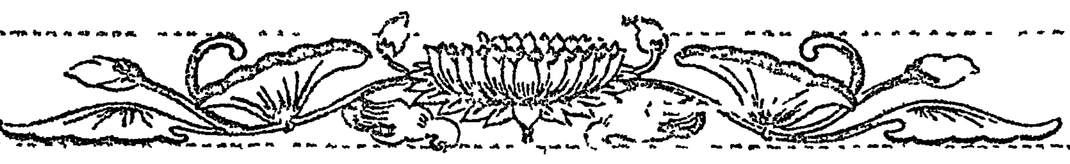
प्रथम जयमाला का अर्थ

दुष्कृत—पापरूपी कर्ममलो को जिन्होने सर्वथा नष्ट कर दिया है ऐसे परमेश्वर जिनेश्वर भगवान को प्रणाम और नमस्कार करके भक्तिपूर्वक और अपनी मनःशक्ति के द्वारा सिद्धचक्र की जयमाला का वर्णन करता हूं ॥ १ ॥

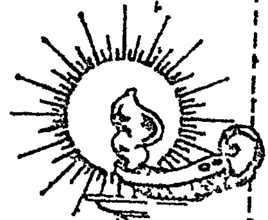
मन मे अच्छी तरह से जो सिद्धचक्र का ध्यान करता है उसका; काले बिखरे हुए और भयंकर है शिर के केश जिसके, रूक्ष और दारुण है नेत्र जिसके, ऐसी रक्तवर्ण वाली व्यन्तरीका अथवा ग्रह तथा भूत वेताल आदि का भय नष्ट होजाया करता है ॥ १ ॥

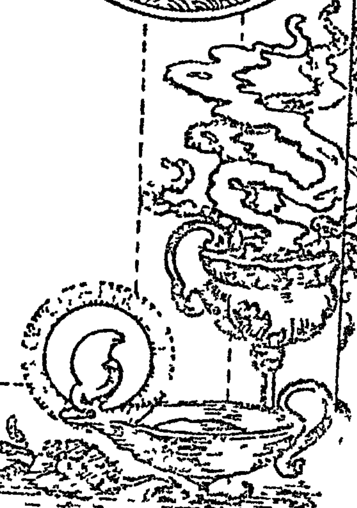
भीषण है उत्सग—क्रोड—बाहुमध्य और दाढ जिसकी तथा उनके कारण जो विकराल है, जिसके नेत्र चलायमान है, जिह्वा अत्यन्त दीर्घ है, ऐसे विशाल सिंह और दाढवाले सभी जीवों का समूह सिद्धचक्र की भावना करने वाले के वश मे होजाया करता है ॥ २ ॥

रोषयुक्त घोर महाकाल रूप दुष्ट भावों वाले क्रुद्ध आशीविष जाति के सर्प भी उसको नहीं काटते जो मनमे सिद्धचक्र की भले प्रकार भावना किया करता है ॥ ३ ॥







ज्वर क्षय गडमाला कुष्ट शूल आदि रोग अथवा श्वास और वातादि व्याधियां उनकी नष्ट होजाया करती है जो मन में सिद्धचक्र का अच्छी तरह चिन्तवन किया करते हैं ॥ ४ ॥

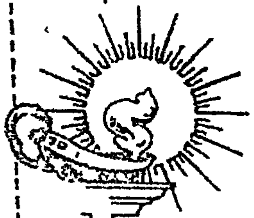
इस सिद्धचक्र की भावना करने वाले को धूमसहित भीषण जलती हुई, जिसके प्रचण्ड स्फुलिंग सब तरफ उड रहे है, अग्नि की ज्वालाओ का समूह दग्ध नहीं कर सकता ॥ ५ ॥

कल्लोलो से चचल बहुत तरंगवाली अपार शब्द करती हुई अगाध गगा सिंधु आदि नदिया उस मनुष्य को पार कर देती है जो इस सिद्धचक्र का मन में चिन्तवन किया करता है ॥ ६ ॥

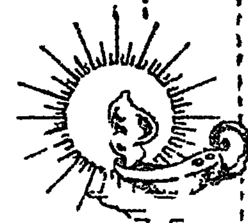
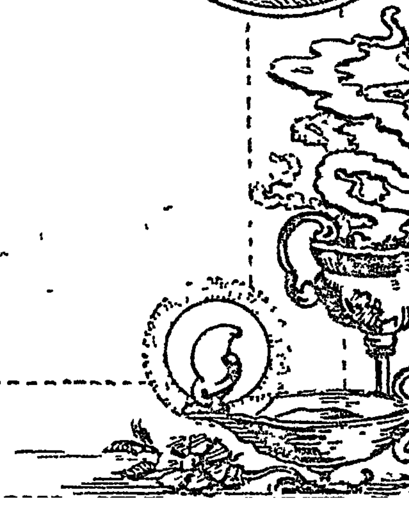
कशा पाश कुत-बर्छी भाला शूल आदि धारण करने वाले या जिनके हाथ में धनुष-बाण भिंडमाल है, ऐसे व्यक्ति और चोरों का समूह युद्ध मे उस व्यक्ति को नहीं मार सकते जो सिद्धचक्र का मन मे भले प्रकार चिन्तवन करता है ॥ ७ ॥

अत्यन्त गाढ ओर सघन भी बंधन जिन्होने कि समस्त अगउपांगो को जकड़ रक्खा है खुल जाते है और उन व्यक्तियो की शंखलाएं टूट जाती है जो कि इस सिद्धचक्र का मन मे स्मरण करते है ॥ ८ ॥

उस सिद्धचक्र का निःसग ध्यान करने स आठो ही कर्मोंका विनाश होता है, ललाट में सुवीर्य प्रकट होता और हाथ में मोक्ष लक्ष्मी का निवास हुआ करता, तथा जिसके दृष्टि पात से सूर्य के समान





तेज प्राप्त हुआ करता है, जिसका कि यहा भुजंगप्रयातछन्द के द्वारा वर्णन किया गया है ॥ ९ ॥

इस प्रकार चन्द्रसेन के द्वारा जिस अत्यन्त रसाल-रसवती उत्तम जय माला का वर्णन किया गया है उसको जो पढेंगे, पढावेंगे, या अपने मन में धारण करेंगे वे मनुष्य सिद्धि सुखको प्राप्त करेंगे ॥ १० ॥

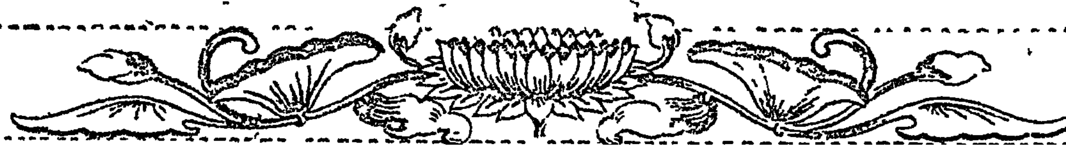
अथ द्वितीय परिधिषोडशदलपूजा

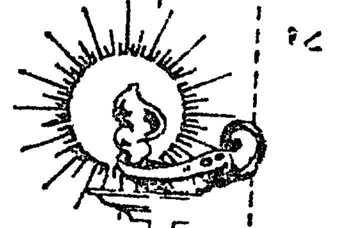
ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ॥
अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवं ध्यायति यः समुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥ पुष्पाजलिम्

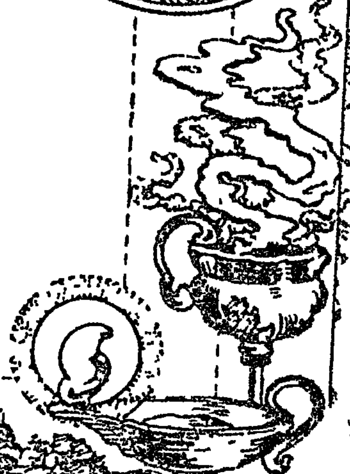
अथ स्थापना—

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं 'नित्यं' निरामयं ।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥









सकलामरेन्द्रसेव्यं, ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर सवौषट् ।

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ।

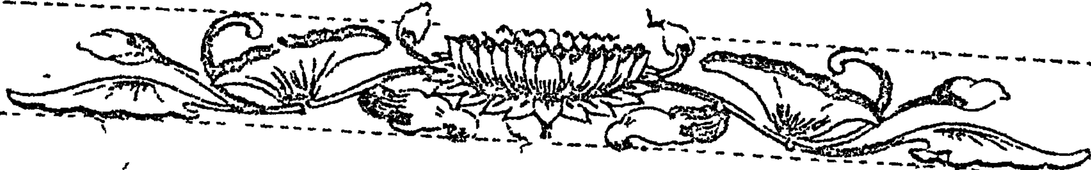
ॐ ह्रीं णमोसिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् ।

अथाष्टकम्—

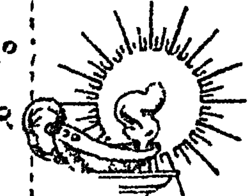
रम्यैर्जलैर्मिश्रितचन्दनौघैः, संसारतापाहतये सुशान्त्यै ।
जलांजलिप्राप्तरजोभिशान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ १ ॥

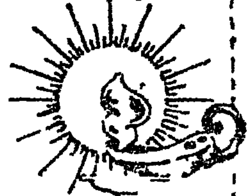
ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा, इति समुच्चयमंत्र ।

१ ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः जलं नि स्वाहा, २ ॐ ह्रीं अनंतज्ञानाय नमः जलं नि स्वाहा ।
३ ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः जलं नि स्वाहा, ४ ॐ ह्रीं अनन्तसुखाय नमः जलं नि स्वाहा ।
५ ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्वाय नमः जलं नि. स्वाहा, ६ ॐ ह्रीं अनन्तसूक्ष्माय नमः जलं नि. स्वाहा ।







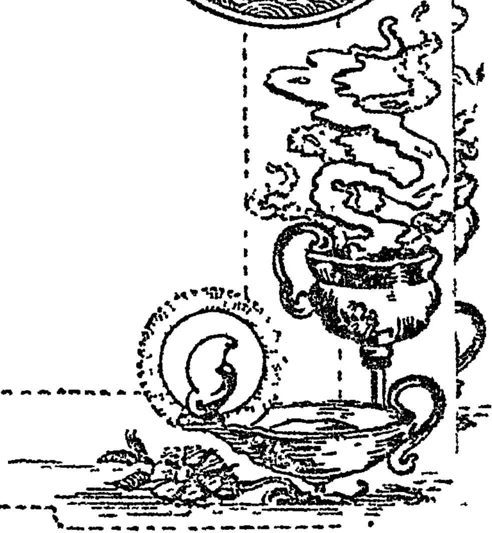
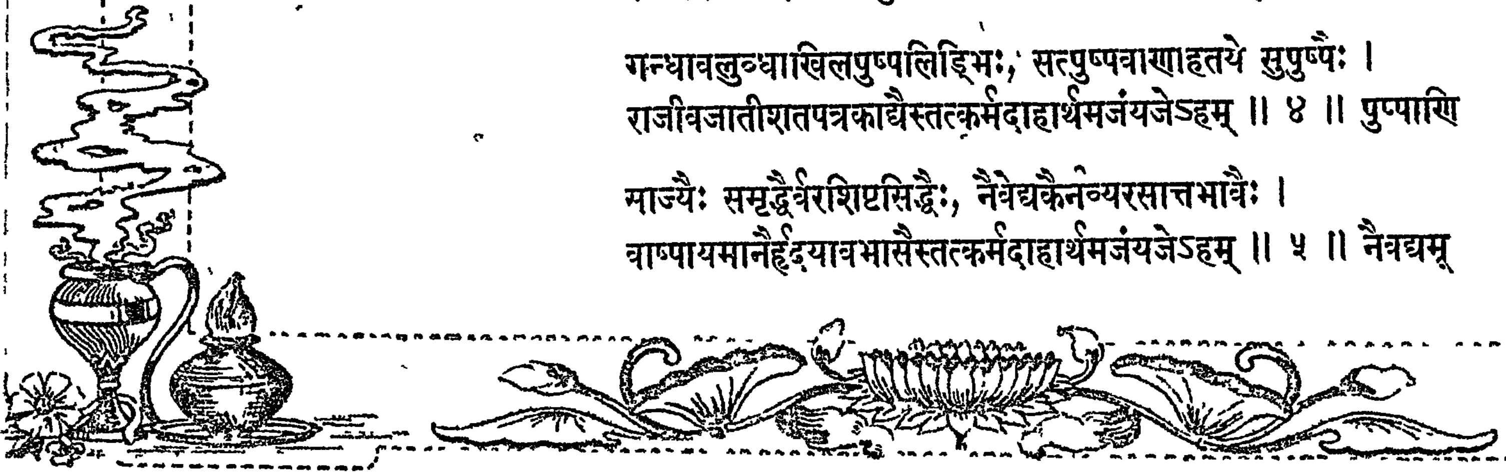

७ ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः जल नि. स्वाहा,	८ ॐ ह्रीं अवगाहनाय नमः जल नि. स्वाहा।
९ ॐ ह्रीं अक्षोभाय नम. जल नि. स्वाहा,	१० ॐ ह्रीं अचलाय नम॰ जल नि स्वाहा।
११ ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नम. जल नि. स्वाहा,	१२ ॐ ह्रीं अभेद्याय नम. जलं नि. स्वाहा।
१३ ॐ ह्रीं अजराय नम जलं नि स्वाहा,	१४ ॐ ह्रीं अमराय नम॰ जल नि. स्वाहा।
१५ ॐ ह्रीं अप्रमेयाय नमः जल नि. स्वाहा,	१६ ॐ ह्रीं अविलीनाय नम जल नि. स्वाहा।

सत्कुंकुमैः सज्जतरैः सुगन्धैः, संतप्तहेम्नश्च रसैरिनेद्धैः।
सचन्दनैर्नन्दितभृंगवृन्दैस्तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ २ ॥ चन्दनम्

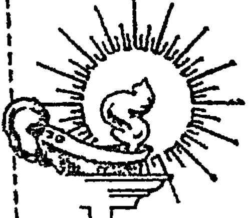
पुंजैरिवाखण्डवपुस्य दीर्घैः स्वच्छैर्मुनीनां मनसा समानैः।
रम्यैरखण्डाक्षतनव्यपुंजैस्तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

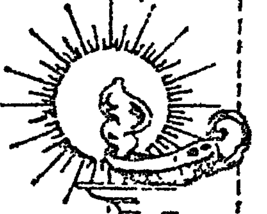
गन्धावलुब्धाखिलपुष्पलिड्भिः, सत्पुष्पवाणाहतये सुपुष्पैः।
राजीवजातीशतपत्रकाद्यैस्तत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि

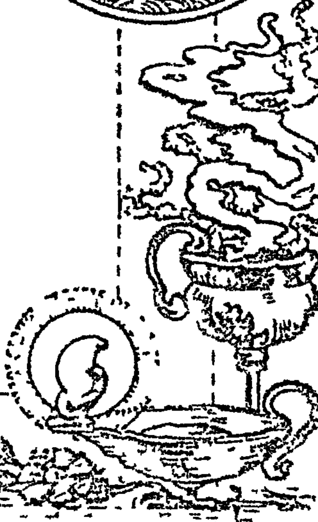
माज्यैः समृद्धैर्वरशिष्टसिद्धैः, नैवेद्यकैर्नव्यरसात्तभावैः।
वाष्पायमानैर्हृदयावभासैस्तत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम् ॥ ५ ॥ नैवद्यम्

पू०
२





दीप्रैः सुदीपैर्दलितान्धकारैः, चन्द्राज्यरत्नोत्तमजैरतीद्धैः ।
अज्ञानतामस्यनिवारणाय, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ ६ ॥ दीपम्

एनःसमूहाहतये नितान्तं ज्ञानादिदाहोद्भवधूमकैर्वा ।
सद्धूपधूमैर्धृतधर्मसिद्ध्यै तत्कर्मदाहार्थमजंयजेहम् ॥ ७ ॥ धूपम

घोंटासुनारंगसुलांगलीभिर्द्राक्षासुराजादनदाडिमाद्यैः ।
फलैर्निराशाफलभावलब्ध्यैतत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम् ॥ ८ ॥ फलम्

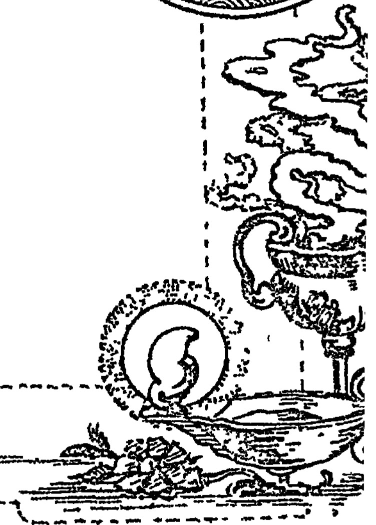
दृग्ज्ञानसम्यक्त्वसुवीर्यसूक्ष्मं सद्गाहसत्सप्तममव्यबाधम् ।
त्रिकर्मभावं कुसुमांजलीभिस्तत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम् ॥ ९ ॥ अर्घम्

सिद्धान् सिद्धमहोदयान्गुणगणाधीशानहं तोष्टवी,—
म्याकारेण हि किंचिदूनवपुषः पूर्वाच्छरीराद्ध्रुवम् ।
अष्टानिष्टमहारिकर्मनिगडैर्मुक्तांश्चिदानन्दकां,—
स्त्रैलोक्याग्रनिवासिनःश्रितवतो मुक्त्यंगनां सास्वतीम् —पुष्पांजलिः

ॐ ह्रीं असिआउसा नमः, इतिमंत्रेणाष्टोत्तरशत जाप्यम् ।







अथ जयमाला—

अपनीतविकल्पसमूहरणं, भुविभस्मितकर्मघनाग्निगणम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ १ ॥

धृतचिन्मयरूपमरूपयुतं सुरराजनराधिपशेषनुतम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ २ ॥

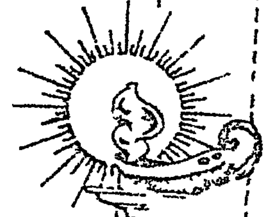
विगतातपसादविषादरतिं गुरुशान्तिगतं हतपापमतिम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ३ ॥

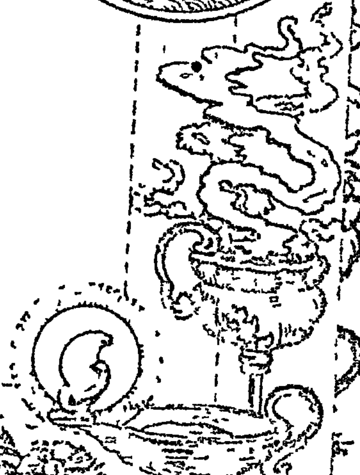
मदखेदमहीधरनाशपविं भयभीमनिशाचरचारुरविम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ४ ॥

वरमुक्तिवधूरमणं विरणं चिदनंतगुणं जितकामकणम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ५ ॥

वरधीक्षणसौख्यसुवीर्यमयं निजबोधविलोकितवस्तुचयम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ६ ॥





गतसंसृतिसागरपारमरं हतदोपकपायकलंकभरम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ७ ॥

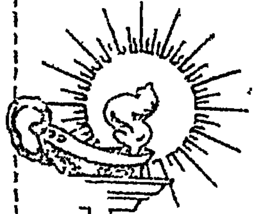
शुचिकेवलदर्शनवोधधरं हतसंभवजातिविनाशजरम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ८ ॥

स्वरसामृतमंथररूपमजं भुवनत्रयमस्तकवारगजम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ९ ॥

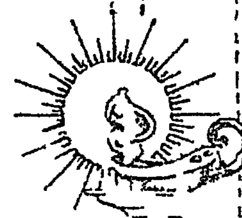
समभावविभासितजीवगुणं परमाचलनित्यगुणाभरणम् ।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ १० ॥

वत्ता—

यन्नामग्रहणादरेपु जगतीपृष्ठे फणीभारयो,—
भीमा वारिचरा मृगेशशरभाः सौख्याय यान्ति क्षणात् ।
प्राप्यन्ते-स्मरणेन दिव्यविपयाश्चार्घं हि तस्मै ददे ।
वश्या सिद्धगणाय सिद्धिरमणी यद्ध्यानतो जायते ॥ पूर्णार्घम्







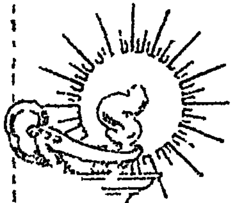


चिद्रूपं सिद्धचक्रं यो यायजेद्भक्तिमानसः ।
पद्मकीर्तिसमो भूत्वा लभते सिद्धिसंगतिम् ॥ आशीर्वादः

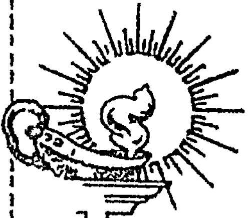
द्वितीय जयमाला का अर्थ

दूर कर दिया है विकल्प समूह—अनेक तरह के सकल्प विकल्पों के रण-कोलाहल को जिन्होंने, लोक में कर्मरूपी सघन अग्नि के समूह को जिन्होंने भस्म—शांत कर दिया है, और जिनके भाव अनेक गुणों से शोभित है ऐसे परमातमरूप सिद्धों के समूह को मै नमस्कार करता हू ॥ १ ॥

चैतन्यस्वरूप को जो प्राप्त होगये है, देवेन्द्र नरेन्द्र और धरणीन्द्र के द्वारा भी जिनको नमस्कार किया गया है, आतप साद—खेद विषाद और रति से जो रहित हैं, महान् शान्ति को प्राप्त, नष्ट कर दिया है पापरूप मति को जिन्होंने, मद और खेद-रूपी पर्वत का नाश करने के लिये जो वज्र के समान है, भयरूपी भयकर निशाचर के लिये जो सुन्दर सूर्य के समान है, जो उत्तम मुक्तिरूपी वधू के रमण, शब्द अथवा गति से रहित, तथा चित्स्वरूप अनतं गुणों के धारक है, जिन्होंने काम के अंश को भी जीत लिया है; जो उत्तम ज्ञान दर्शन सुख और वीर्य, इस तरह अनन्त चतुष्टय स्वरूप है, जिन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा समस्त वस्तुओं को देख लिया है, जो ससाररूपी समुद्र के पार को भले प्रकार प्राप्त होगये है, जिन्होने





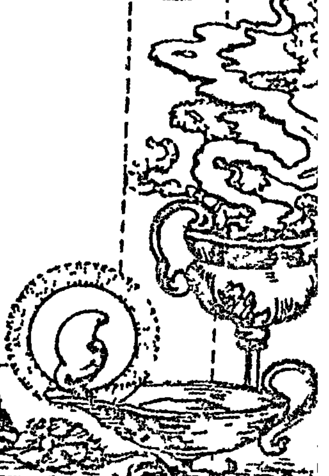


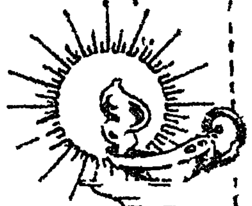

सर्वसाधारण संसारी जीवों में पाये जाने वाले दोष-क्षुधा-पिपासा-चिन्ता आश्चर्य आदि तथा कषायरूपी कलंक के भार को नष्ट कर दिया है, पवित्र केवल ज्ञान और दर्शन को जो धारण करने वाले है, जिन्होंने संसार के जन्म मरण और जरा रूप क्लेश का नाश कर दिया है, आत्म रस रूपी अमृत से जो मथर हैं; पुनः जन्म धारण करने वाले नहीं है, भुवनत्रय के मस्तकरूपी द्वार का उद्घाटन करने के लिये गज के समान हैं; समभाव के द्वारा जिन्होंने जीव के-अपनी आत्मा के या जीवों के गुणो को प्रकाशित कर दिया है, उत्कृष्ट निश्चल और नित्य गुण ही हैं आभरण जिनके, ऐसे अनेक गुणो से शोभायमान परमात्मा सिद्ध परमेष्ठियों को मेरा नमस्कार हो.

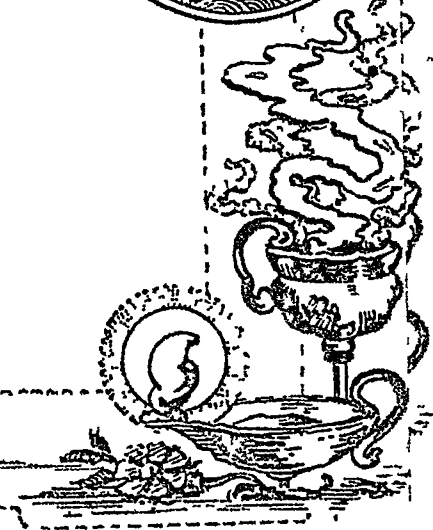
इस जगत में जिनके नाम मात्र का स्मरण करने में आदरभाव रखने वाले व्यक्तियों को सर्प हाथी आदि घात करने वाले तथा भयकर जलचर जीव या सिंह अष्टापद आदि क्षणभर मे उल्टे सुखशांति के निमित्त बनजाते है, जिनका चिंतवन करने से दिव्य विषयों को प्राप्ति हुआ करती है, एवं जिनका ध्यान करने से सिद्धिरूपी रमणी वशीभूत होजाया करती है, उन सिद्ध परमेष्ठियों को मै अर्घ—पूर्णार्घ अर्पण करता हू ॥

भक्ति से परिपूर्ण है मन जिसका ऐसा जो व्यक्ति चिद्रूप सिद्ध भगवान का अतिशय करके और पुनः २ पूजन करता है वह " पद्मकीर्ति " के समान होकर सिद्धि को प्राप्त किया करता है ॥







अथ तृतीयपरिधिद्वात्रिंशत्कमलदलपूजा ।

उर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ।
अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम्,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ १ ॥ पुष्पाञ्जलिः

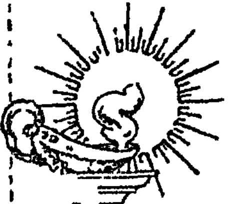
निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्

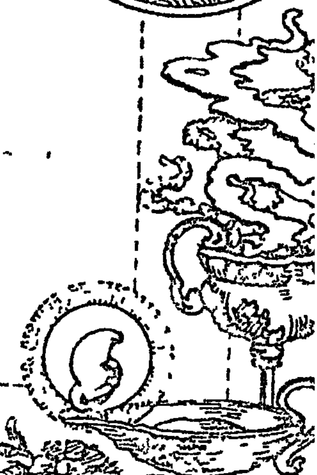
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ२ ठःठः

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव२वषट्





पृ० ३

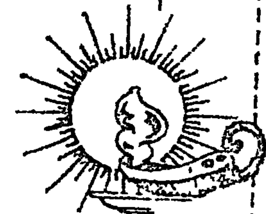


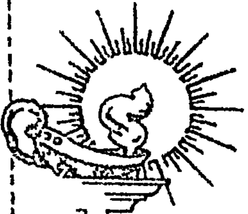

अथाष्टकम्—

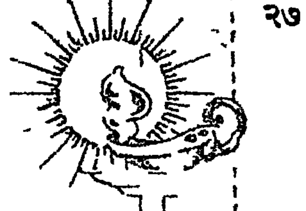
निजमनोमणिभाजनभारया शमरसैकसुधारसधारया ।
सकलबोधकलारमणीयकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । जलम् ॥ इति समुच्चयमंत्रः ।

अथ प्रत्येक मंत्राः—१ ॐ ह्रीं परमशुद्धचैतन्याय नमः स्वाहा । २ ॐ ह्रीं शुद्धचैतन्याय नमः स्वाहा । ३ ॐ ह्रीं शुद्धज्ञानाय नम' स्वाहा । ४ ॐ ह्रीं शुद्धचिद्रूपाय नमः स्वाहा । ५ ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा । ६ ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय नमः स्वाहा । ७ ॐ ह्रीं शुद्धावलोकिने नमः स्वाहा । ८ ॐ ह्रीं शुद्धदृढाय नम. स्वाहा । ९ ॐ ह्रीं शुद्धस्वयभुवे नमः स्वाहा । १० ॐ ह्रीं शुद्धयोगिने नमः स्वाहा । ११ ॐ ह्रीं शुद्धजाताय नमः स्वाहा । १२ ॐ ह्रीं शुद्धतपसे नमः स्वाहा । १३ ॐ ह्रीं शुद्धमूर्तये नमः स्वाहा । १४ ॐ ह्रीं शुद्धसुखाय नमः स्वाहा । १५ ॐ ह्रीं शुद्धपावनाय नमः स्वाहा । १६ ॐ ह्रीं शुद्धशरीराय नमः स्वाहा । १७ ॐ ह्रीं शुद्धप्रमेयाय नमः स्वाहा । १८ ॐ ह्रीं शुद्धोपयोगाय नमः स्वाहा । १९ ॐ ह्रीं शुद्धभोगाय नमः स्वाहा । २० ॐ ह्रीं शुद्धात्मने नमः स्वाहा । २१ ॐ ह्रीं शुद्धार्हज्जाताय नमः स्वाहा । २२ ॐ ह्रीं अशुद्धिनिपाताय नम स्वाहा । २३ ॐ ह्रीं शुद्धार्हगर्भवासाय नमः स्वाहा । २४






ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धवासाय नमः स्वाहा । २५ ॐ ह्रीं शुद्धपरमवासाय नमः स्वाहा । २६ ॐ ह्रीं शुद्धसिद्ध-परमात्मने नमः स्वाहा । २७ ॐ ह्रीं शुद्धानन्ताय नमः स्वाहा । २८ ॐ ह्रीं शुद्धशान्ताय नमः स्वाहा । २९ ॐ ह्रीं शुद्धभदन्ताय नमः स्वाहा । ३० ॐ ह्रीं शुद्धनीरूपाय नमः स्वाहा । ३१ ॐ ह्रीं शुद्धनिर्वाणाय नमः स्वाहा । ३२ ॐ ह्रीं शुद्धसदर्भगर्भाय नम स्वाहा ॥ जलम् ॥




सहजकर्मकलंकविनाशनैरमलभावसुवासितचन्दनैः ।
अनुपमानगुणावलिनायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥ चन्दनम्

सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैः सकलदोषविशालविशोधनैः ।
अनुपरोधसुबोधनिधानकम् सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ३ ॥ अक्षतान्

समयसारसुपुष्पसुमालया सहजकर्मकरेण विशोधया ।
परमयोगबलेन वशीकृतम् सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ४ ॥ पुष्पम्

अकृतबोधसुदिव्यनैवेद्यकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ।
निरवधिप्रचुरात्मगुणालयं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्

सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः रुचिविभूतितमःप्रविनाशनैः ।
निरवधिं सुविकाशप्रकाशनैः सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ६ ॥ दीपम्











निजगुणाक्षयरूपसुधुपकैः स्वगुणघातिमलप्रविनाशनैः ।
विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ७ ॥ धूपम्

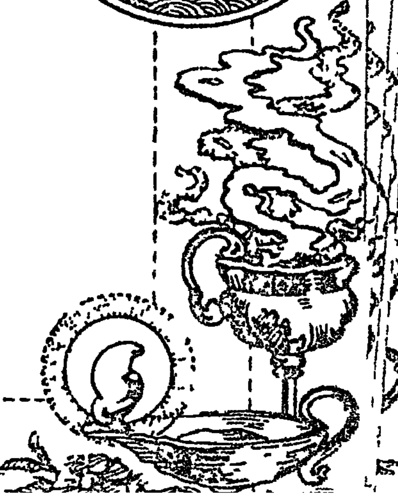
परमभावफलावलिसंपदा सहजभावविभावविशोधया ।
निजगुणास्फुरणात्मनिरंजनं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ८ ॥ फलम्

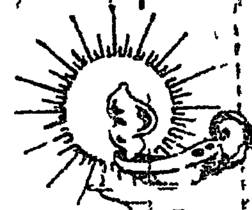
नेत्रोन्मीलविकाशभावनिवहैरत्यन्तबोधाय वै,
सद्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः ।—
यश्चिन्तामणिशुद्धभावपरमज्ञानात्मकैरर्चयेत्,
सिद्धःस्यात्तमगाधबोधममलं संचर्चयामो वयम् ॥ ९ ॥ अर्घम्

त्रैलोक्येश्वरवन्दनीयचरणाः प्रापुःश्रियं शास्वतीम्,
यानाराध्य निरुद्धचण्डमनसः सन्तोपि तीर्थंकराः ।
सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशदाव्याबाधताद्यैर्गुणै,—
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥ १० ॥ पुष्पांजलिः

ॐ ह्रीं असिआउसा नमः, इतिमंत्रेणाष्टोतरशतं जाप्यं देयम् ।









अथ जयमाला—

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस ।
सुधाम विबोधनिधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १ ॥

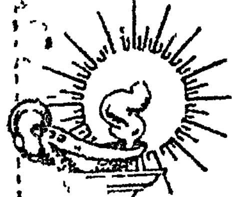
विदूरितसंसृतिभाव निरंग, शमामृतपूरित देव विसंग ।
अबंध कषायविहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ २ ॥

निवारितदुष्कृतकर्मविपाश, सदामलकेवलकेलिनिवास ।
भवोदधिपारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ३ ॥

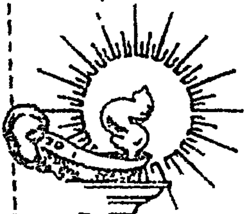
अनंतसुखामृतसागर धीर, कलंकरजोभरभूरिसमीर ।
विखण्डितकाम विराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ४ ॥

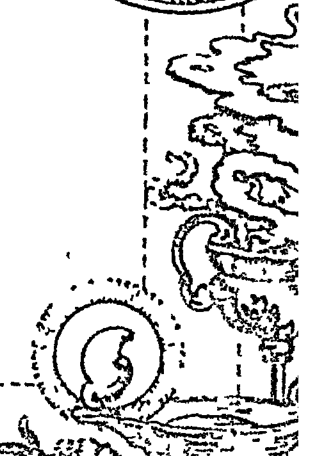
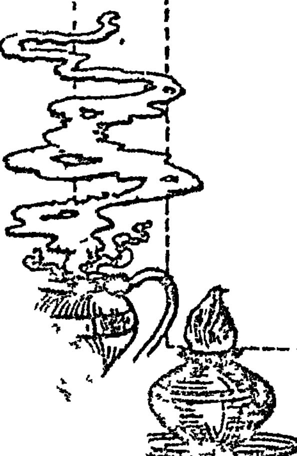
विकारविवर्जित तर्जितशोक, विबोधसुनेत्रविलोकितलोक ।
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ५ ॥

रजोमलखेदविमुक्त विगात्र, निरंतरनित्यसुखामृतपात्र ।
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ६ ॥







नरामरवन्दितनिर्मलभाव, अनन्तमुनीश्वरपूज्य विहाव ।
सदोदय विश्वमहेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ७ ॥

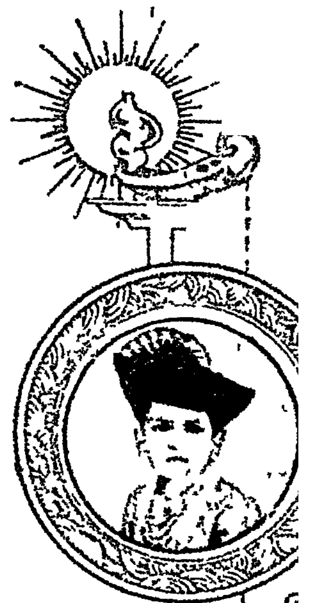
विदंभ वितृष्ण विदोप विनिद्र, परापरशंकरसार वितंद्र ।
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ८ ॥

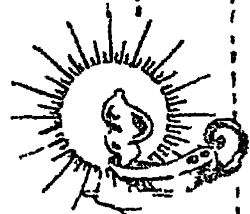
जरामरणोज्झित वीतविहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार ।
अचिन्त्यचरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ९ ॥

विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ ।
अनाकुल केवल सार्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १० ॥

घत्ता—असमसमयसारं चारुचैतन्यचिन्हम्,
परपरणतिमुक्तं पद्मनन्दीन्द्रवन्द्यम् ।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धचैतन्यादिगुणयुक्तसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा ॥ इतिपूर्णार्घम् ।



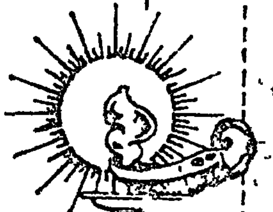




तीसरी जयमाला का अर्थ

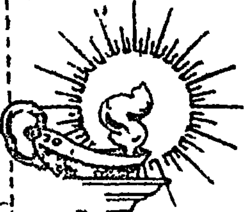


रागरहित, सदारहनेवाले, शान्त–क्रोधादिरहित, निरश–विभागरहित-अखरड, रोगरहित, निर्भय, निर्मल, भेदविज्ञानपूर्ण आत्मस्वरूप, उत्तम तेज स्वरूप, उत्कृष्टज्ञान के निधान-खजाने हे मोहरहित विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ १ ॥ सासारिक भावो से दूर, अगरहित, शम परिणामरूपी अमृत से पूर्ण, देव, सगरहित, निर्बंध और कषायरहित निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ २ ॥ पाप कर्म के पाश–जाल का जिन्होने निवारण कर दिया है, जो सदा निर्मल केवल ज्ञान की क्रीडा के निवास स्थान है, ससार समुद्र के पार को प्राप्त हो चुके है, ऐसे शांत निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ३ ॥ अनन्त सुख रूपी अमृत के समुद्र, धीर, पापरूपी धूलि के भार को उडादेने के लिये प्रवल समीर–वायु के समान, कामदेव की अन्तिम सीमा को भी खण्डित करने वाले निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ४ ॥ विकार भाव से रहित, शोक को ताडित करने वाले, विशिष्ट ज्ञानरूपी नेत्र के द्वारा देख लिया है लोक को जिन्होने, जिनका कोई हरण नहीं कर सकता, ऐसे शब्दरहित, विरंग-संसाररूपी नाटक के रगस्थल अथवा कषायोंके युद्ध स्थल से विगत, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो । ॥ ५ ॥ अज्ञान और अदर्शनरूप मल के खेद से रहित, अशरीर, विच्छेदरहित नित्य सुख के

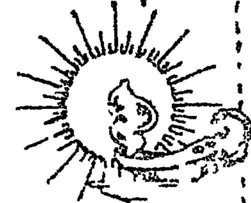



पात्र, सम्यग्दर्शन के द्वारा शोभायमान, नाथ निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ६ ॥ मनुष्यों और देवोंके द्वारा वन्दित है निर्मल भाव जिनके, अनन्त मुनीश्वरों के द्वारा पूज्य, मुख के विकार से रहित, सदा रहनेवाला है उदय जिनका, पूर्ण तेज के स्वामी, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ७ ॥ दंभरहित, तृष्णा से शून्य, विगत दोष, निद्रा रहित, पर 'और अपर कल्याण के करने वाले, साररूप, निरालस्य, कोप रहित, रूप रहित और शंका रहित निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ८ ॥ जरा और मरण से रहित, तथा गमनागमन से भी रहित, विशिष्ट चिन्ता-ध्यानादिके विषय, निर्मल, अहंकार रहित, अचिन्त्य है चरित्र जिनका ऐसे, हे दर्परहित' निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ९ ॥ वर्ण रहित, गध रहित, मान-लोभ-माया-शरीर-शब्द और शोभा से रहित, आकुलतासे रहित, केवल-एकाकिन्-शुद्धात्मन्, सबके लिये हितकर, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ १० ॥ इस तरह अनुपम समयसाररूप, सुन्दर चैतन्य ही है चिन्ह जिनका, पुद्गलकेनिमित से होने वाली परिणातिसे मुक्त, पद्मनन्दी आचार्य के द्वारा वन्द्य, सम्पूर्ण गुणों के निवासस्थान, विशुद्ध सिद्धचक्र का जो स्मरण करता है, उनको नमस्कार करता है, या उसकी स्तुति करता है, वह मुक्ति को प्राप्त हुआ करता है ॥ ११ ॥








अथ चतुर्थपरिधौ चतुःषष्ठि दल पूजा ।

उर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
वर्ग्गापूरितदिग्गताम्बुजदलंतत्संधितत्त्वान्वितम् ॥
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥
पुष्पं दत्वा स्थापनां कुर्यात् ॥

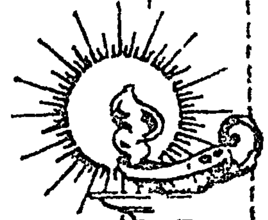
निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

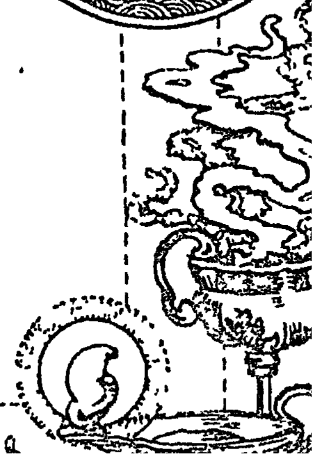
सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्









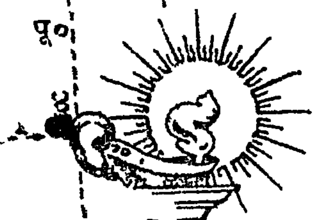
ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

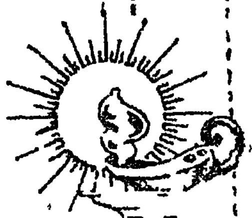
अथाष्टकम्

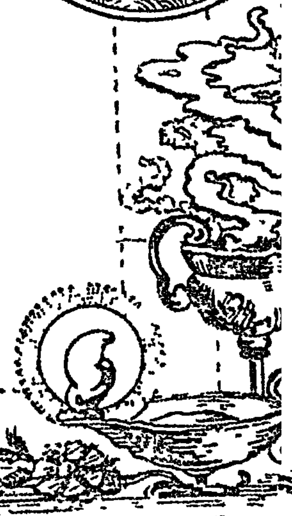
जयति जयति यस्य प्राभवं सम्यगात्मो,—
दयविजितविपक्षं विश्वकल्याणबीजम् ।
सुरसरिदमलाम्भोधारयाऽऽराधनीयम्,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं र्हं असिआ उसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं जल स्वाहा, इतिसमुच्चयमंत्रः







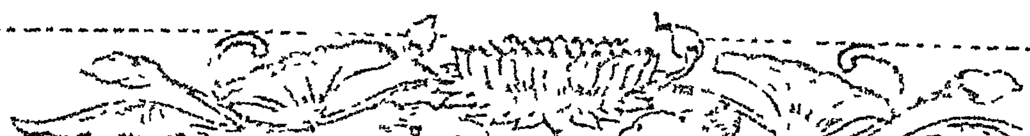


अथ प्रत्येक मंत्रा

१ ॐ ह्रीं अर्हं जिनसिद्धेभ्यो नम स्वाहा, २ ॐ ह्रीं अर्हं केवलर्द्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ३ ॐ ह्रीं अवधिबुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः स्वाहा, ४ ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययबुद्धिऋद्धिसिद्धेभ्योनमः स्वाहा, ५ ॐ ह्रीं अर्हंबीजबुद्धिसिद्धेभ्योनम' स्वाहा, ६ ॐ ह्री अर्हं कोष्ठबुद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ७ ॐ ह्रीं अर्हं पादानुसारिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ८ ॐ ह्रीं अर्हं सभिन्नसश्रोतृसिद्धेभ्यो नम स्वाहा, ९ ॐ ह्रीं अर्हं दूरास्वादनदर्शनस्पर्शनघ्राणश्रवणर्द्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १० ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वित्वसिद्धेभ्यो नम. स्वाहा, ११ ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वित्वसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १२ ॐ ह्रीं अर्हं अष्टागमहानिमितबुद्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १३ ॐ ह्री अर्हं प्रज्ञाश्रमणर्द्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १४ ॐ ह्री अर्हं प्रत्येकबुद्धसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १५ ॐ ह्री अर्हं वादित्वर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः स्वाहा, १६ ॐ ह्री अर्हं णमोविज्जाहराण स्वाहा, १७ ॐ ह्रीं अर्हं जलजंघातंतुपुष्पपत्रश्रेरायग्निशिखाचारणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १८ ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगामित्वर्द्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १९ ॐ ह्रीं अर्हं विक्रियार्द्धिसिद्धिप्राप्तेभ्यो नम. स्वाहा, २० ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं स्वाहा, २१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दीत्तितवाण स्वाहा, २२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाण स्वाहा, २३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं स्वाहा, २४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाण स्वाहा, २५ ॐ ह्रीं अर्हं







णमो घोरपरक्कमाण स्वाहा, २६ ॐ ह्रीं अर्हं घोरबभयारीण स्वाहा, २७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणोवलीणं स्वाहा, २८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिवलीणं स्वाहा, २९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं स्वाहा, ३० ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसंहिपत्ताण स्वाहा, ३१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहपत्ताणं स्वाहा, ३२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसाहिपत्ताण स्वाहा, ३३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मॅलोसहिसिद्धाणं स्वाहा ३४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विडोसंहिपत्ताणं स्वाहा, ३५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सवोसँहिपत्ताण स्वाहा, ३६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आंसीविसाण स्वाहा, ३७ ॐ ह्रीं अर्हं दिट्ठिविसाणं स्वाहा, ३८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसंरसर्द्धिसिद्धाणं स्वाहा, ३९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविपसिद्धाणं स्वाहा, ४० ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवणिं स्वाहा, ४१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीण स्वाहा, ४२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं स्वाहा, ४३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं स्वाहा, ४४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहानसाणं स्वाहा, ४५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहालयाणं स्वाहा, ४६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सत्तड्ढिपत्ताण स्वाहा, ४७ ॐ ह्रीं अर्हं विपहरणर्द्धिप्रासेभ्योनमः स्वाहा, ४८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं स्वाहा, ४९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सघसिद्धाण स्वाहा, ५० ॐ ह्रीं

---

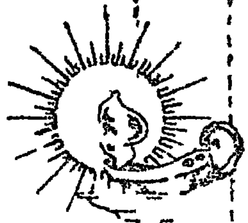
१ आमर्श —हस्तपादादिना सस्पर्श.। २ खेल'—निष्ठीवनम्। ३ जल्ल'—स्वेदालम्बनं रजः। ४ मल —कर्णदन्तादि-समुद्भव. ५ विड्जार । ६ अंगप्रत्यंगनखद-तादिरवयवः तत्सस्पर्शी वाय्वादि मर्व । ७ आस्याविषा —उग्रविपसंपृक्तो ऽप्याहारो येषामास्यगतो निर्विर्षो भवति, यदीयास्यनिर्गतवच श्रवणात महाविपपरीता अपि निर्विषा भवन्ति। ८ येषामालोकनमात्रेणातितीव्रविषदूषिता अपि विगतविषा भवन्ति। ९ ये रमर्द्धिप्राप्ता यतय यं ब्रुवते '' म्रियस्व '' स तत्क्षणाव महाविषपरीत. सन म्रियते ते आस्यविषा ।







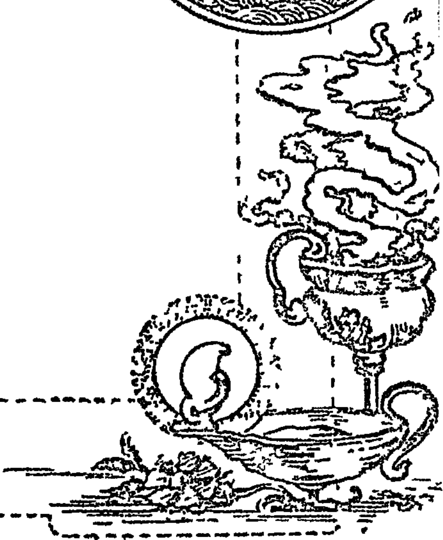




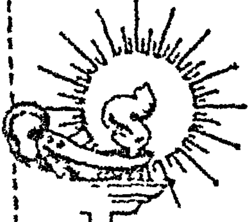

अर्हं णमो भयवदो महदिमहावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसीण स्वाहा, ५१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाण स्वाहा, ५२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ध्येयसिद्धाणं स्वाहा, ५३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वस्तुबुद्धाणं स्वाहा, ५४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो स्वत्तिसिद्धाणं स्वाहा, ५५ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अर्हत्तिसिद्धाण स्वाहा, ५६ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमात्मसिद्धाण स्वाहा, ५७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परब्रह्मसिद्धाण स्वाहा, ५८ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमगसिद्धाण स्वाहा, ५९ ॐ ह्रीं अर्हं णमो प्रकाशसिद्धाणं स्वाहा, ६० ॐ ह्रीं अर्हं णमो स्वयंभूसिद्धाण स्वाहा, ६१ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अनन्तगुणसिद्धाण स्वाहा, ६२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमानन्तगुणसिद्धाण स्वाहा, ६३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोकवासिसिद्धाण स्वाहा, ६४ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अनाद्यनुपमसिद्धाण स्वाहा.

उदयति परमात्मज्योतिरुद्योति यस्मात् ।
विशदविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
शुचितरघनसारोल्लासिभिश्चन्दनौघै,—
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ २ ॥ चन्दनम् ॥

अहमहमिकयोच्चैः सम्यगाराधनायाम् ।
सुरनरखचरेन्द्राः यस्य भक्त्या यतन्ते ॥
ललितसदकपुंजैः केवलज्ञानहेतो,—
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ३ ॥ अक्षतान् ॥







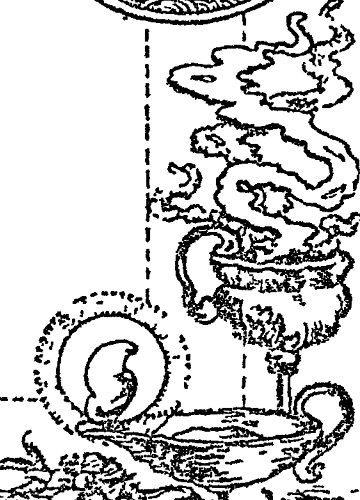


भवभयगुरुपारावारपारं लभन्ते,
विहितशिवसमृद्धेः सेवया यस्य सन्तः ।
कमलवकुलकुंदोदारमंदार पुष्पै–,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ॥

जननवनहुताशं छिन्नसन्मोहपाशम्,
शमितमदनमानं विश्वविद्यानिदानम् ।
चरुभिरुरुगुणौघं प्रीणितप्राणिसंघम् ।
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ॥

चिदचिदखिलजीवाजीवभेदादिवेद्यम्,
सकलभुवननेत्रं ज्ञानमाविष्करोति ।
स्मरणमपि यदीयं दीपदीप्रप्रभौघैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ६ ॥ दीपम् ॥

भवति न भवभाजां ध्यानतो यस्य पीडा,
ग्रहदितिशितिरक्षःप्रेतभूतप्रसूता ।




अगुरुतुहिनभास्वच्चन्दनोद्भूतधूपैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ७ ॥ धूपम् ॥

फलमतुलमनंतं मुक्तिसौख्यं प्रदीप्तम्,
फलति विपुलसेवा सम्यगात्रिःकृतोच्चैः ।
असदृशमहिमश्रीमंदिरं मातुलिंगै,—
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ८ ॥ फलानि ॥

अभिनवजलगंधामंदमंदारमाला,—
ललितममलमर्घं संददाम्यादरेण ।
गणधरवलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी,
सुरहरिमहितायाः प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

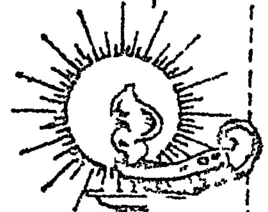
ॐ ह्रीं असिआउसानमः एतन्मंत्रेणाष्टोतर शतं जाप्यं देयम् ।

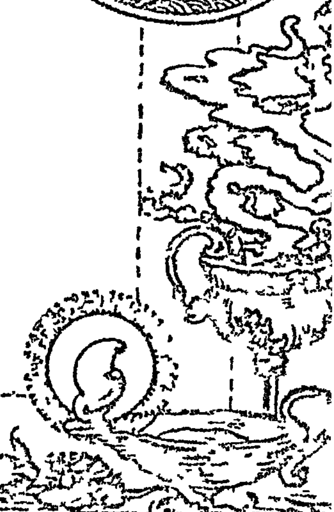
अथ जयमाला—

योगीन्द्रैर्निजमानसे प्रतिदिनं संचिन्तनीयाः स्वयम्,
देवा इन्द्रनरेन्द्रपूजितपदा दुष्कर्मविच्छित्तये ।








कर्माष्टविवर्जिता वसुगुणालंकरभूताः सदा,
सिद्धान्तान् जयमालया विमलया भक्त्या स्तवीमि श्रिये ॥ १ ॥

महादृढमोहविधेः परमुक्त, स्वकीयगुणद्रविणद्युतिरक्त ।
चिदात्मरुचे निजजात विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ २ ॥

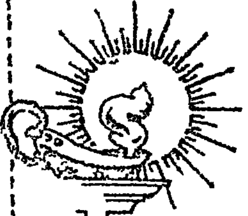
चिदावरणक्षयनिश्चितवास, स्वनंतपदार्थविभेदसमास ।
चिदात्मचितो निजर्जीतनिकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ३ ॥

स्वकातमवर्जित दर्शनधार, स्वलेपितदर्शनलोपकभार ।
सुकेवलदर्शनतोय विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ४ ॥

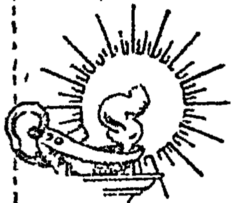
सुदृक्चिदनंतसुशक्तिकदेह, क्षयंकृतविघ्नकरव्रजगेह ।
चिदात्मसुवीर्यगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ५ ॥

क्षयंगतनाम चिरंधृतसूक्ष्म, समीपविनिर्मिततद्गुणलक्ष्म ।
चिदात्मकसूक्ष्मगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ६ ॥

अरूप्यवगाहनभावसुपूर, चतुर्विधपापविकर्दमदूर ।
ततस्त्वमनंतगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ७ ॥







निरस्तगुरुत्वलघुत्वकभाव, तथा भवकाननदुःसहदाव ।
द्विधातुलकर्मगतेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ८ ॥
द्विधाहतदुःखदवेदनपक्ष, स्वकात्मसमर्पितशास्वतसौख्य ।
अबाधकदेवगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं अर्ह असिआ उसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पूर्णार्घम् स्वाहा ।

घत्ता—विधुतकुविधिपाशं मुक्तिलीलाविलासम्,
परमगुणनिवासं चित्सरोराजहंसम् ।
विनुतनृपसुचक्रैः संस्तुतं सिद्धचक्र ।—
मतनु च निजभक्त्या वन्दते शौभचन्द्रः ॥ १० ॥

इत्याशीर्वादः

चतुर्थ जयमालाका अर्थ

मै उन सिद्ध भगवान्‌की, मोक्षलक्ष्मीकी प्राप्तिके लिये भक्तिपूर्वक विमल जयमालाके द्वारा स्तुति करता हूं जिनका अपने मनमें स्वयं योगीन्द्र भी दुष्कर्मोंकी व्युच्छित्तिके लिये चिन्तवन करते है, जिनके चरण कमल इन्द्र तथा नरेन्द्रोंके द्वारा भी पूजित है, कर्मरूप अवधसे जो रहित, और सदा अष्ट गुणोंके अलंकारभूत है ॥ १ ॥







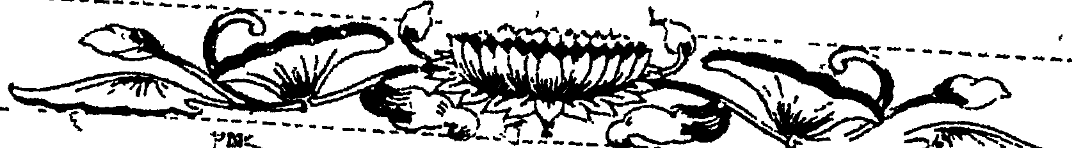


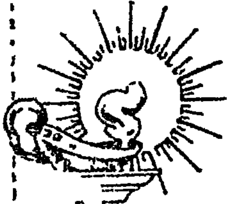

महान् दृढ मोहकर्मसे सर्वथा रहित, अपने गुणरूपी सुवर्णकी कांतिसे रंजित, चित्स्वरूप रुचिके धारक, अपने स्वरूपमे ही उत्पन्न, शरीर रहित, सिद्धसमूह सदा मुझे पवित्र करो ॥ २ ॥ चेतनाके आवरण करनेवाले—ज्ञानावरण दर्शनावरणके क्षयसे निश्चित है वास जिनका, अनन्त पदार्थोंका भेद करके भले प्रकार रहनेवाले, ... हे सिद्धसमूह सदा मुझे पवित्र करो ॥ ३ ॥.................. ॥ ४ ॥ सम्यग्दर्शनज्ञानरूप अनंत शक्तिके पिंड, नष्ट कर दिया है विघ्न करनेवाले कर्म समूहको जिन्होने, चित्स्वरूप अनन्त वीर्य गुणके स्वामी अशरीर सिद्धसमूह मुझे सदा पवित्र करो ॥ ५ ॥ क्षयको प्राप्त हो गया है नाम कर्म जिनका, सूक्ष्मत्व गुणको धारण करनेवाले, अपने निर्मितगुण ही हैं चिन्ह जिनका, चित्स्वरूप सूक्ष्मगुणके स्वामी अशरीर सिद्ध निकाय मुझे सदा पवित्र करो ॥ ६ ॥ अरूपी, अवगाहन गुणसे पूर्ण, चार तरहके आयु कर्मरूप कीचड़से दूर, अनंतगुणोके स्वामी अशरीर सिद्ध निकाय मुझे सदा पवित्र करो ॥ ७ ॥ गुरुत्वलघुत्वभावसे रहित, संसार रूपी वनकी दुःसह अग्निका जिन्होंने निरसन कर दिया है, दो प्रकारके अतुल गोत्रकर्मसे राहित स्वामी अशरीर सिद्धनिकाय सदा मुझे पवित्र करो ॥ ८ ॥ दोनोही तरहके दुःख देनेवाले वेदनीय कर्मके पक्षका जिन्होंने घात कर दिया है, स्वयंका प्राप्त कर लिया है शास्वत सुख जिनने ऐसे बाधारहित गुणोके स्वामी देव अशरीर सिद्धनिकाय सदा मुझे पवित्र करो[3] ॥ ९ ॥





१-२-इनका अर्थ ठीक २ हमारी समझमें नहीं आ सका। ३-इस जयमालाके दूसरे आदि पद्यमे क्रमसे मोह ज्ञानावरण—दर्शनावरण—अन्तराय—नाम—आयु—गोत्र—और वेदनीय इन आठ कर्मोंके अभावसे प्राप्त गुणोंकी अपेक्षा सिद्धोंकी महिमाका वर्णन किया गया है।









अथ पंचमपरिधिगताष्टविंशोत्तरशतदलपूजा ।

ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ॥
अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ १ ॥

(पुष्पं दत्वा स्थापनां कुर्यात्)

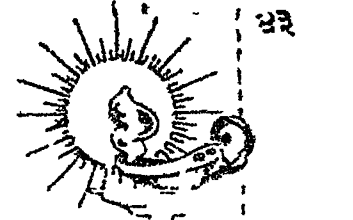
निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसंव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्

,, ,, ,, ,, ,, अत्र तिष्ठ २ ठः ठः

,, ,, ,, ,, ,, अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्







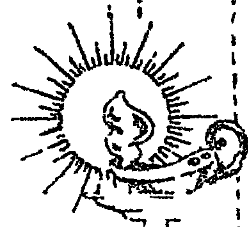
अथाष्टकम्—

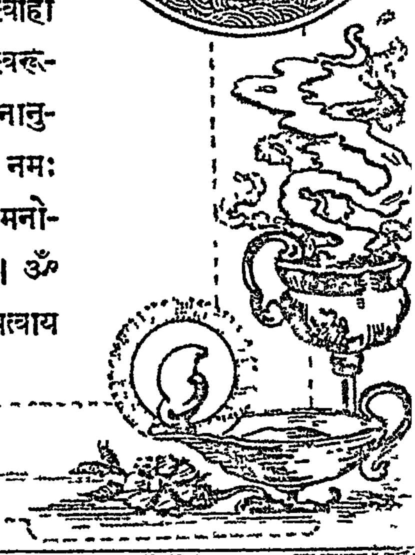
विमलशीतलसज्जलधारया, सविधवंधुरकेशरसारया ।
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्, प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं स्वस्थानमाश्रितातीतानागतसिद्धाधिपतिभ्यो नमः स्वाहा, जलम् । इति समुच्चयमंत्रः ।

अथ प्रत्येकमंत्राः

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अस्तित्वधर्माय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्री वस्तुत्वधर्माय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं प्रमेयत्वधर्माय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं चेतनत्वधर्माय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वधर्माय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं अमूर्तत्वधर्माय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं प्रदेशवत्त्वधर्माय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं सम्यक्त्वधर्माय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं ज्ञानधर्माय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं वीर्यधर्माय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मधर्माय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं अवगाहनधर्माय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणाय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं स्वसंवेदनज्ञानाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनादिचतुष्टयात्मकार्हद्भ्यो नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं सम्यक्त्वादिगुणात्मकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं पंचाचाराचार्येभ्यो नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्री रत्नत्रयप्रकाशपाठकेभ्यो नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं स्वस्वरूपसाधकसर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा । २० ।

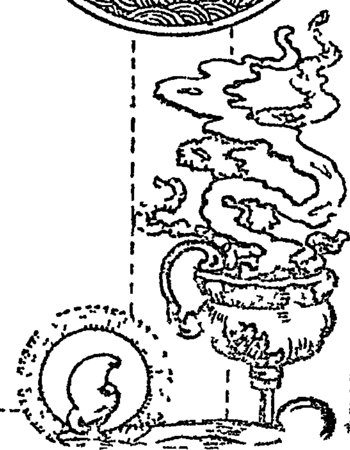


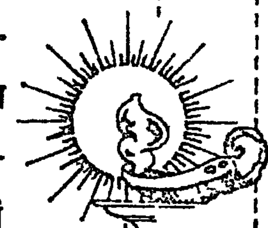


ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधसरम्भमनोगुप्तये नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं अकारितमन.क्रोधसंरम्भसानन्द-धर्माय नमः स्वाहा ।२२ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमन.क्रोधसरम्भानन्दधर्माय नम· स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं अकृतमनः क्रोध-समारम्भपरमानन्दाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं अकारित मन· क्रोधसमारम्भसंतुष्टधर्माय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमन· क्रोधसमारम्भसंतोपधर्माय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं अकृतमनः क्रोधारम्भस्थानाय नम. स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं अकारितमनः क्रोधारम्भस्थानाय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनः क्रोधारम्भस्थानाय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसंरम्भधर्माय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसरम्भानन्यशरणाय नम स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसंरम्भसुगतभावाय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसमारम्भसुखात्मगुणाय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसमा-रम्भानन्यगताय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसमारम्भानन्यशरणाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमानारम्भानन्तज्ञानाय नम· स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं अकारितमनोमानारम्भानन्तगुणाय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानारम्भानन्तगुणाय नमः स्वाहा ३८ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासरम्भब्रह्मस्वरू-पाय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासरम्भचैतन्यस्वभावाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं नानु-मोदितमनोमायासंरम्भानन्यस्वभावाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारम्भस्वानुभूतिरत्नाय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासमारम्भसाम्यधर्माय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनो-मायासमारम्भाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमायारम्भपरमशांतभावाय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं अकारितमनोमायारम्भनिराकुलस्वभावाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायारम्भानन्यत्वाय

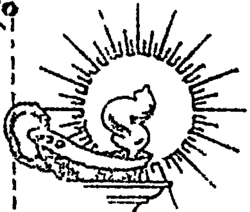




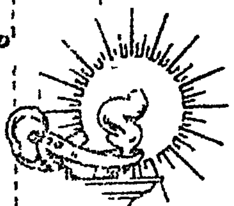




नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसंरम्भानन्तभावाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसरम्भपरमानन्दभावाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसंरम्भभावायः नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसमारम्भविदाकाराय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसमारम्भानन्ताकाराय नम. स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसमारम्भाकारभावाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभारम्भचिदाकाराय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभारम्भचिन्मयस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभारम्भस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसंरम्भवाग्गुप्तये नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसंरम्भसिद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसंरम्भस्वात्मोपलब्धिप्राप्ताय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसमारम्भस्वानुभूतिरताय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसमारम्भासाधारणधर्माय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसमारम्भपरमशान्तिस्वभावाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधारम्भपरमामृततुष्टाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधारम्भसमरसरसिकाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधारम्भपरमगातये नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसंरम्भस्वधर्माय नमः स्वाहा । ६६ ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसंरम्भाव्यक्तस्वभावाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसंरम्भदुर्लभाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसमारम्भपरमसंगमनिराकरणाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसमारम्भपरमस्वभावाय नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसमारम्भैकत्वगतपरमसुखाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं अकृतवचनमानारम्भपरमात्मराजपरमधर्माय नमः स्वाहा । ७२ ।



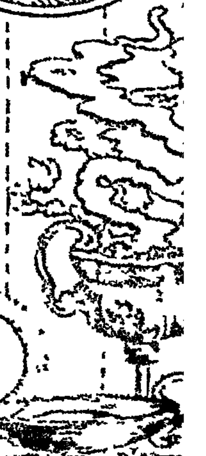




ॐ ह्रीं अकारितवचनमानारम्भशास्वतानन्दाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानारम्भामृतपूर्णाय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासंरम्भानन्तधर्मैकरूपाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासरम्भामृतचन्द्राय नम. स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासंरम्भानेकान्तमयमूर्तये नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्री अकृतवचनमायासमारम्भसत्तालोकगुणाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्री अकारितवचनमायासमारम्भसत्तालोकगुणाय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासमारम्भानेकान्तमयमूर्तये नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं अकृतवचनमायारम्भातुलज्ञानाय नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं अकारितवचनमायारम्भातुलज्ञानाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायारम्भनिरवधिसुखाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसंरम्भव्यापकधर्माय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसंरम्भव्यापकगुणाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्री नानुमोदितवचनलोभसंरम्भाचलाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसमारम्भनिरालम्बाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्री अकारितवचनलोभसमारम्भनिरालम्बाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसमारम्भाखण्डाय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभारम्भसमयसाराय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्री अकारितवचनलोभारम्भसमयसाराय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्री नानुमोदितवचनलोभारम्भनिरंजनाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसंरम्भकायगुप्तये नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसंरम्भाकायाय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्री नानुमोदितकायक्रोध-सरम्भशुद्रकायाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसमारम्भसत्वगुणाय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं अकारिकायक्रोधसमारम्भानन्यशरणाय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधसमारम्भान-

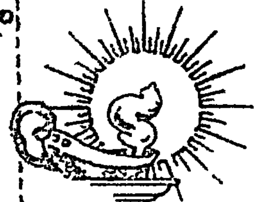








न्यग्रहणाय नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधारम्भशुद्धद्रव्याय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधारम्भासंसाराय नमः स्वाहा । १०० । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधारम्भजैनधर्माय नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं अकृतकायमानसंरम्भस्वरसगुप्तये नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं अकारितकायमानसरम्भ-स्वरूपगुप्तये नमः स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसंरम्भध्येयभावाय नमः स्वाहा । १०४ । ॐ ह्रीं अकृतकायमानसमारम्भपरमाराध्याय नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं अकारितकायमानसमारम्भानन्द-गुणाय नमः स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसमारम्भस्वानन्दनन्दिताय नमः स्वाहा । १०७ । ॐ ह्रीं अकृतकायमानारम्भपरमसंतोषाय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्रीं अकारितकायमानारम्भस्वभावाय नमः स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानारम्भशुद्धपर्यायधर्माय नमः स्वाहा । ११० । ॐ ह्रीं अकृत कायमायासरम्भामृतगर्भाय नमः स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं अकारितकायमायासरम्भचैतन्यात्मकाय नमः स्वाहा । ११२ । ॐ ह्रीं नानुमोदित कायमायासंरम्भसमरसभावाय नमः स्वाहा । ११३ । ॐ अकृतकायमाया समारम्भाच्छेदनाय नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं अकारितकायमायासमारम्भस्वतन्त्रधर्माय नमः स्वाहा । ११५ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासमारम्भधर्मसमूहाय नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्रीं अकृतकायमायारम्भपरमात्मभुवे नमः स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं अकारितकायमायारम्भात्मकाय नमः स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकाय-मायारम्भात्मनिष्ठाय नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसंरम्भालोभाय नमः स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसंरम्भस्वभावाय नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसंरम्भभावाय नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसमारम्भपरमचित्परिणताय नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं अकारितकाय-







पू० ५

लोभसमारम्भस्वधर्मरताय नम· स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसमारम्भाव्यक्तधर्माय नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं अकृतकायलोभारम्भसुखाय नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं अकारितकायलोभारम्भाकषायाय नमः स्वाहा । १२७ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभारम्भशौचगुणाय नमः स्वाहा । १२८ ।





घुसृणकुंकुमचन्दसनद्भवैः, बहुसुगंधितानिर्मलप्रासुकैः ।
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम् , भवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ २ ॥ चन्दनम् ।

विमलतन्दुलनिर्मलसंचयैः,
कृतसुमौक्तिककल्पसुनिश्चयैः ।
प्रथमबोधकसत्काजिनेश्वरम्,
भवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

कुसुमचंपकपंकजकुंदकैः,
सहजजातसुगंधविमोदकैः ।
प्रथमबोधकसत्काजिनेश्वरम् ,
भवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ।



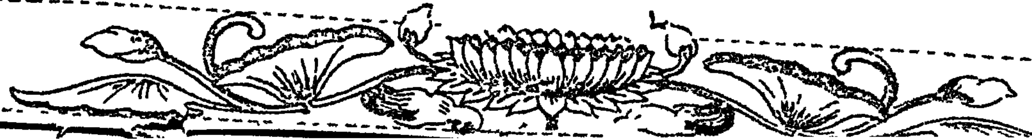


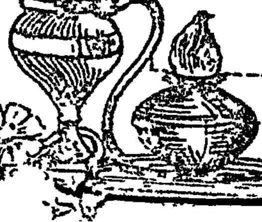

सकललोकविमोदनकारकैः,
चरुवरैश्चसुधाकृतिधारकैः ।
प्रथमवोधकसत्कजिनेश्वरम्,
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्,

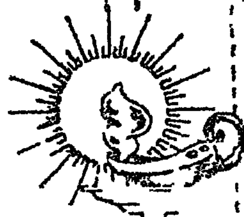
तरलवार सुकांतसुमंडनैः,
सदनरतचयैरघरवण्डनैः ।
प्रथमवोधकसत्कजिनेश्वरम्,
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ६ ॥ दीपम् ॥

अगुरुधूपभवेन सुगन्धिना ।
भ्रमरकोटिसामिन्द्रियवन्धुना ।
प्रथमवोधकसत्कजिनेश्वरम्,
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ७ ॥ धूपम् ।

मुखदपकसुशोभनसत्फलैः,
क्रमुकनिम्बुकमोचमुलांगलैः ।







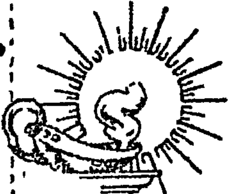

प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ८ ॥ फलम् ॥

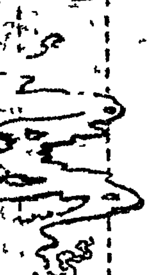
जिनवरागमसद्गुरुमुख्यकान्,
प्रवियजे गुरुसद्गुणमुख्यकान् ।

सुशुभचन्द्रतरान् कुसुमोत्करान्,
समयसारपरान् सुखसागरे ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

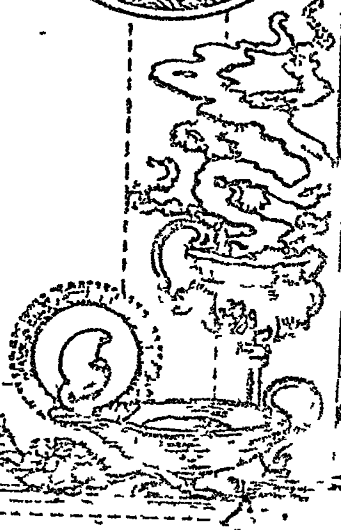
ॐ ह्रीं असिआउसानमः, इतिमंत्रेण जपः करणीयः ।

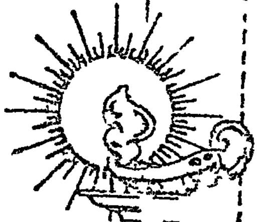
ये ज्ञानावरणादिकानतितरां निर्मूल्य दोषान् बलात्,
संसारोरुसरिद्विशोषकमहः संदर्शनादीन् गताः ।
सिद्धस्तोत्रविशुद्धज्ञानमहसां कुर्वन्तु सिद्धाः श्रियम्,
चक्रिप्रह्वसुरेन्द्रपूजितपदा भक्तात्मनां सर्वदा ॥१॥ पुष्पांजलिः ॥









अथ जयमाला

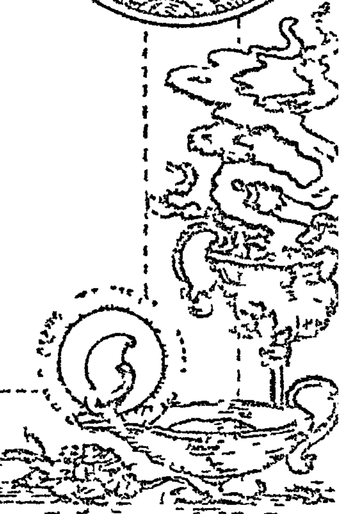
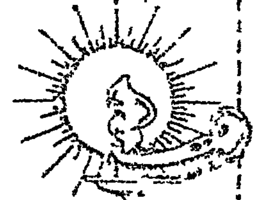
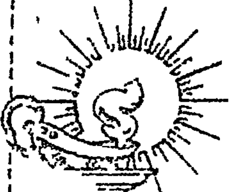
चिदानन्दमानन्दलीलानिवासम्,
अखण्डस्वभावं जिनं सिद्धराशिम्।
विषादोज्झितं वीतरागं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीति स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

विशुद्धोदयं प्राप्तसंसारपारम्,
सुसंविन्निधानं परं निर्विकारम्।
विमायं विभायं विनायं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥

विमुक्ताशयादित्यविज्ञाननेत्रम्,
विमोहं समस्फारपीयूषगात्रम्।
अमेयप्रभावं विदर्पं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥





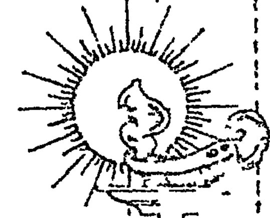
विविक्तं कलं निष्कलंकं कवित्थम्,
सुसेव्यं विपाकं विशंकं ह्यपारम् ।
विकालं विकायं विकामं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥

त्रिलोकातिशायिप्रभं विश्वरूपम्,
गृहं तेजसां वीतवर्णं विरूपम् ।
सदा दृङ्मयं ध्येयरूपं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥

अगम्यं मुनीनामपि सुप्रबोधम्,
कृताहंकृतिक्रोधचिन्तानिरोधम् ।
अपारं जरामृत्युमुक्तं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥

अनंतं विरामं विकारावमुक्तम्,
विमुक्तस्फुरत्कामिनीरंगरक्तम् ।





निरीहापघातं विहीनं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥

प्रदुष्टाष्टकर्मेन्धनेभ्यो हुताशम्,
सुसिद्धाष्टकं चिद्गुणं चिद्विलासम्।

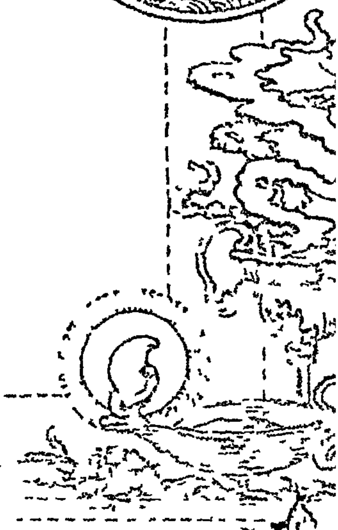
उदासीनमीशानमीशं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥

अजं शास्वतं निर्जरं देवदेवम्,
विलोभं कृतानेकभूपालसेवम्।

वषट्वैकृतं वा विपाशं विचक्रम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ९ ॥

प्रयाति क्षयं कर्म यद्ध्यानयोगात्,
समत्वं गतानां मुनीनां क्षणेन।

प्रसिद्धं विशुद्धं तथानन्दरूपम्,
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ १० ॥

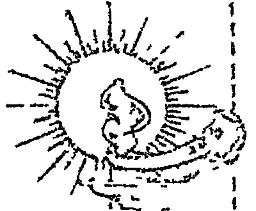




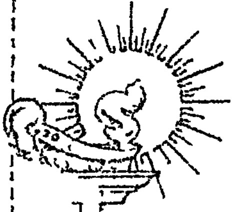












विगतमदनभेदं दोपसंदोहरोधम्,
स्मरति विरसपूर्णं शंकरं सारभूतम् ।
अजरममरवन्द्यं पद्मनन्द्यादिदेवम्,
मुनिनिवहनिपेव्यं सिद्धचक्रं सुदेवम् ॥ ११ ॥

इत्थं सिद्धमुपास्य शर्मसहितं संसारबाधापहम्,
नोद्रव्याशुभभावकर्मरहितम् संपन्नपर्यापहम् ।
यो ध्यायेत्फलमश्नुते शिवमयं सौमं स हित्वाऽशिवम्,
संभुक्त्वाखिलमंडलेशत्रिबुधस्वामिस्थितिं सर्वतः ॥ १२ ॥

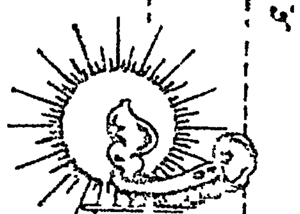
इत्याशीर्वादः



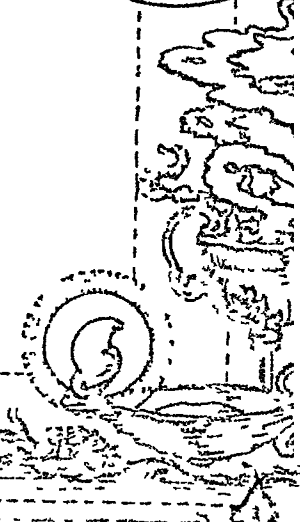












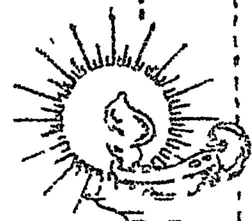

पंचम जयमालाका अर्थ

जो ज्ञानावरणादि दोषोंका बलपूर्वक और अच्छी तरहसे निर्मूलन कर संसाररूपी नदीके शोषण करने वाले सम्यग्दर्शनादिकको प्राप्त हो चुके है, चक्रवर्तिप्रमुख अथवा सुरेन्द्रोके द्वारा पूजित है चरण जिनके ऐसे सिद्ध भगवान् सिद्धस्तोत्रके द्वारा प्रकट हो गया है ज्ञानरूप तेज जिनका ऐसे भक्तात्माओंको मोक्षलक्ष्मी प्रदान करे ॥ १ ॥

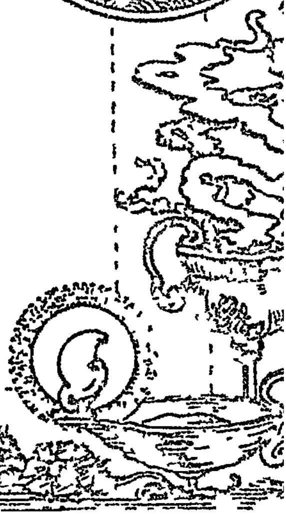
चिदानन्दस्वरूप, सुखके लीलास्थल, अखण्ड है स्वभाव जिनका, कर्मोंके विजेता, सिद्धात्माओके समूहरूप, विषादरहित, वीतराग, चक्र—पाखण्ड अथवा सांसारिक परिवर्तनसे दूर सिद्धसमूहका मै सदा अच्छी तरह स्तवन करता हूँ । २ । विशुद्ध है उदय जिनका, जो संसारके पारको प्राप्त हो चुके है, सम्यग्ज्ञानके निधान, उत्कृष्ट, निर्विकार, मायारहित, विभा – अलौकिक प्रभाको प्राप्त, उत्कृष्ट नेतृत्वके धारक संसाररहित सिद्धसमूहका मै स्तवन करता हूँ ॥ ३ ॥

आशय—सकलविकल्पसे रहित सूर्यके समान ज्ञान ही है नेत्र जिनका, मोहरहित, समतारूपी महान्अमृत ही है शरीर जिनका, अप्रमाण प्रभावके धारक, दर्परहित, अशरीर सिद्धसमूहका मै सदा स्तवन करता हूँ । ॥ ४ ॥ एकान्तरूप, मनोज्ञ, कलकरहित, विद्वानो या कवियोंके हृदयमे स्थित, भलेप्रकार सेव्य, विपाक अवस्थाको प्राप्त, शकारहित, अपार, काल–काय–काम और संसारचक्रसे रहित सिद्धसमूहका मै सदा अच्छी तरह स्तवन करता हूँ । ॥ ५ ॥ तीन लोकमे सर्वोत्कृष्ट है प्रभा जिनकी, ज्ञानकी अपेक्षा जो विश्वरूप

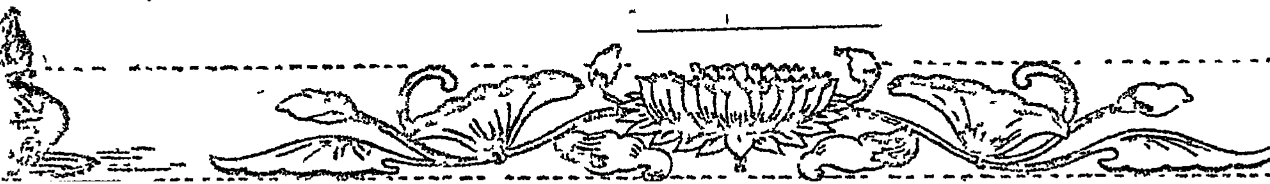




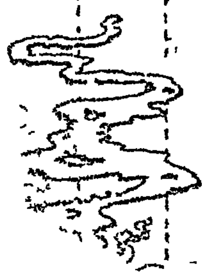


है, प्रकाशोंके निवासस्थान, वर्णनरहित, विशिष्ट स्वरूपके धारक, सदा दर्शनमय, ध्येयरूप, संसाररहित सिद्ध-समूहका मै सदा स्तवन करता हूँ ॥ ६ ॥ मुनियोंके लिये भी अगम्य, समीचीन उत्कृष्ट बोधरूप, कर दिया है अहंकार क्रोध और चिन्ताका निरोध जिन्होने, अपार, जरा मृत्युसे रहित, ससार चक्रसे दूर सिद्ध समूहका मैं सदा स्तवन करता हूँ ॥ ७ ॥ अनन्त, विश्रामरूप, विकारोंसे रहित, छोड़ दिया है स्फुरायमान कामिनियोंका रग राग जिनने, इच्छा और अपघातसे रहित, उत्कृष्ट, ससाररहित सिद्धसमूहका मै सदा स्तवन करता हूँ ॥ ८ ॥ अत्यन्त दुष्ट अष्ट कर्मरूपी इन्धनके लिये अग्निसमान, सिद्ध कर लिया है गुणाष्टकको जिनने, चिद्गुणके धारक, चेतनाका ही है विलास जिनमे, उदासीन—वीतराग, ईशान—परमेश्वर, परमात्मा, संसाररहित सिद्धसमूहका मै सदा स्तवन करता हूँ ॥ ९ ॥ जन्मरहित, शास्वत, जरा रहित, देवोके भी देव, लोभरहित, की है अनेक मूपालोने सेवा जिनकी, विकारोके समूहको जिन्होंने आहुतिका विषय वना दिया है, ससारके पाशसे रहित, विचक्र सिद्धचक्रका मै सदा स्तवन करता हूँ ॥ १० ॥ .. ... ॥ ११ ॥ समस्त कामदेवके भेदोसे रहित, दोपोके समूहका निरोध करनेवाले, रसरहित अवस्थासे पूर्ण, कल्याणकारी, सारभूत, अजर—कभी जीर्ण न होने वाले, देवोके द्वारा वन्द्य, पचपरमेष्ठियोंमे प्रथम देव, मुनिसमूहके द्वारा सेव्य, समीचीन देवरूप सिद्धचक्रका पद्मनन्दी आचार्य स्मरण करते है ॥ १२ ॥ इस तरह कर्मरहित, ससारकी वाधाको दूर करनेवाले, नोकर्म द्रव्यकर्म और अशुभ भावकर्मसे रहित, नवीन अवस्थाको प्राप्त सिद्ध परमेष्ठीका जो ध्यान करता है वह समस्त अशुभका परित्याग करके और सम्पूर्ण माडलिक राजाओं तथा देवोके स्वामित्वको भले प्रकार भोग करके अमृतरूप शिवमय—कल्याणमय फलको प्राप्त हुआ करता है ॥१३॥



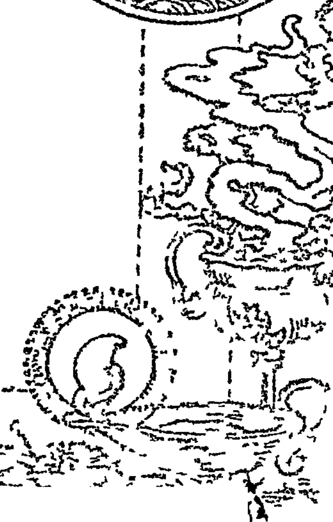












अथ षष्ठपरिधिपूजा ।

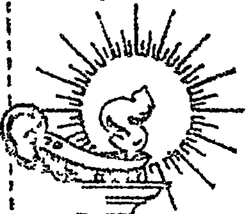
उर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम्,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥ १ ॥

(पुष्पं दत्वा स्थापनां कुर्यात्)

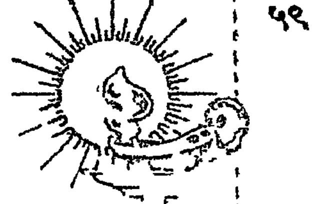
निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्,
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

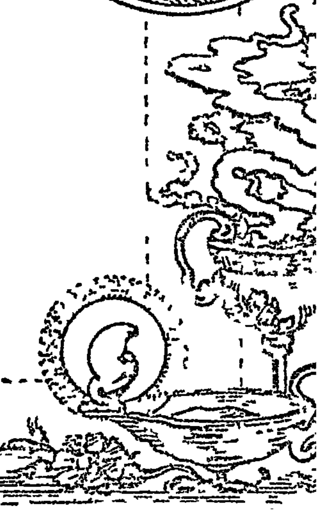
सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमंघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्
" " " " " अत्र तिष्ठ २ ठः ठः
" " " " " अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्









अथाष्टकम्—

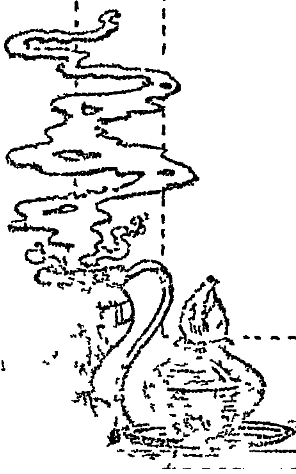
शुचिविमलपवित्रैस्तीर्थसंभूततोयैः
सुरभिवरसुमिश्रैः सेवितैः षट्पदौघैः ।
कनककृतसुपूजादत्तभृंगारनालैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

ॐ ह्री चिरतरसंसारकारणाज्ञाननिर्धूतोद्भूतकेवलज्ञानातिशयसम्पन्नसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा, जलम्, इति समुच्चयमत्रः ।

अथ पृथक् २ मंत्राः—

ॐ ह्रीं अभिनिबोधवारकविनाशकसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं द्वादशश्रुतावरणीय कर्मविमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं असंख्येयलोकभेदविभिन्नावधिज्ञानावरणविमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरणरहितसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं निखिलद्रव्यगुणपर्य्यायावबोधककेवलज्ञानावरणीयविमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं सकलदर्शनावरणविनाशकसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं सर्वकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं दर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं चक्षुर्दर्शनावरणकर्मरजोमुक्ताय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं अचक्षुर्दर्शनावरणविमुक्ताय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणविमुक्ताय

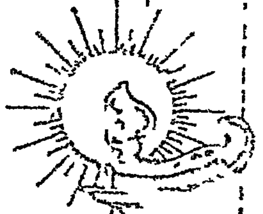
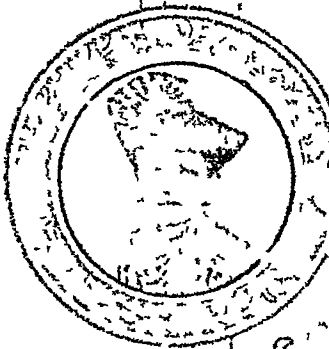


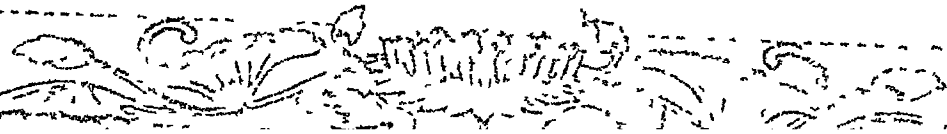


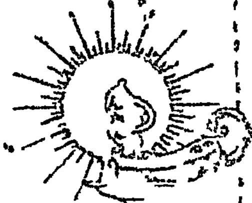


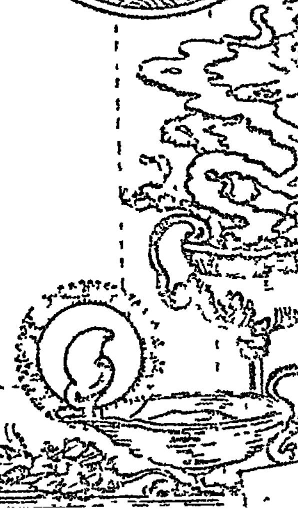


नमः स्वाहा । ११ ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणाविमुक्ताय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं निद्राकर्मविमुक्ताय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं निद्रानिद्राकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं प्रचलकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं प्रचला प्रचलाकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं असातावेदनीयकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं सातावेदनीयकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं प्रबलतरमहामोहकर्मविप्रमुक्ताय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं सम्यङ्मिथ्यात्वकर्मरहिताय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं सम्यक्त्वकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिक्रोधविमुक्ताय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिमानमुक्ताय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिमायाविमुक्ताय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिलोभमुक्ताय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोध-रहिताय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानमुक्ताय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायामुक्ताय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभरहिताय नमः स्वाहा ।३२। ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोधमुक्ताय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमानमुक्ताय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमायामुक्ताय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानलोभलघकाय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधरहिताय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं संज्वलनमानरहिताय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं संज्वलनमायामुक्ताय नम स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं संज्वलनलोभरहिताय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं हास्यहिंसकाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं रतिरहिताय नम. स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं अरतिद्वेषकाय नमः

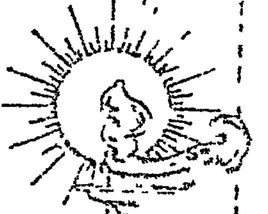




स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं शोकशंकानिवारकाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं भयकर्मभंजकाय नमः स्वाहा ।४५।
ॐ ह्रीं जुगुप्सारोगचिकित्सकाय नम. स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं स्त्रीवेदकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं
पुवेदमारकाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं नपुंसकवेदविनाशकाय नम· स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं आयुष्यकर्म-
मुक्ताय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं नरकायुष्कर्मरहिताय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं तिर्यगायुष्यकर्ममुक्ताय
नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं मनुष्यायुष्कर्मकृतान्तकाय नमः स्वाहा । '५३ । ॐ ह्रीं देवायुष्कर्मरहिताय नमः
स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं नामकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं नारकगतिनिवारकाय नमः स्वाहा
। ५६ । ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिछेदकाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनामकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा ।५८।
ॐ ह्रीं देवगतिनामकर्ममुक्ताय नम· स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं एकेन्द्रियजातिजयप्राप्ताय नमः स्वाहा । ६० ।
ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजातिनाममंथकाय नम. स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजातिनामकर्मनाशकाय नमः
स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजातिविध्वंसकाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं पचेन्द्रियजाति-
रहिताय नमः स्वाहा। ६४ । ॐ ह्रीं औदारिककर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । ६५। ॐ ह्रीं वैक्रियिककर्मविध्वंसकाय
नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं आहारकशरीररहिताय नम. स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं तैजसकर्मविध्वंसकाय नमः
स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं कार्मणपिंडछेदकाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं औदारिकबंधनरहिताय नमः स्वाहा
। ७० । ॐ ह्रीं वैक्रियिकबंधनरहिताय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं आहारकबंधनरहिताय नमः स्वाहा ।७२।
ॐ ह्रीं तैजसबंधनरहिताय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं कार्मणबंधनमुक्ताय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं
औदारिकसंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं वैक्रियिकसंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं



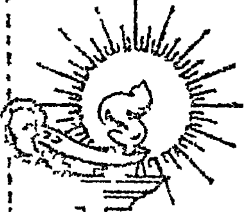






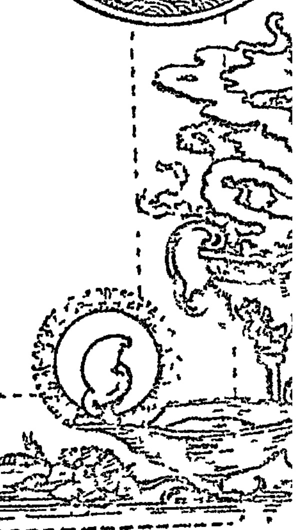


आहारकसंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं तैजससंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं कार्मणसंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानरहिताय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानविनाशकाय नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं वल्मीकसंस्थानकृतान्तकाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थानरहिताय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं वामनसंस्थाननामकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं हुंडकसंस्थानघातकाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं औदारिकशरीरांगोपांगमुक्ताय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं वैक्रियिकांगोपांगघातकाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं आहारकांगोपांगविनाशकाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननशातकाय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहननरहिताय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं नाराचसंहननस्फोटकाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं अर्द्धनाराचसंहननशातकाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं कीलकसंहननमुक्ताय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं असंप्राप्तस्फाटिकसंहननभेदकाय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं श्वेतनामकर्मकृतान्तकाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं पीतनामकर्मकृतान्तकाय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं हरितकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं रक्तनामकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं कृष्णकर्मविभेदकाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं सुगंधनामकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १०० । ॐ ह्रीं दुर्गन्धनामदूरीकारकाय नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं तिक्तरसरहिताय नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं कटुरसरहिताय नमः स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं कषायरसकर्मखण्डकाय नमः स्वाहा । १०४ । ॐ ह्रीं अम्लरसरहिताय नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं मधुररसविनाशकाय नमः स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं मृदुत्वमुक्ताय नमः स्वाहा । १०७ । ॐ ह्रीं कर्कशस्पर्शहिंसकाय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्रीं गुरुस्पर्शघातकाय नमः









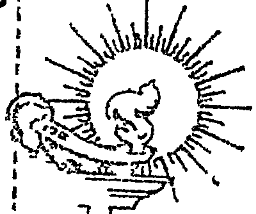




पू० ६

स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं लघुस्पर्शत्यक्ताय नमः स्वाहा । ११० । ॐ ह्रीं शीतस्पर्शछेदकाय नमः स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शभ्रसकाय नमः स्वाहा । ११२ । ॐ ह्रीं स्निग्ध स्पर्शध्वंसकाय नमः स्वाहा । ११३ । ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शरोधकाय नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं सर्वस्पर्शरहिताय नमः स्वाहा । ११५ । ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्विविनाशकाय नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्विप्रतारकाय नमः स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्विविध्वंसकाय नमः स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्विछेदकाय नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वलंघकाय नम स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं उपघातघातकाय नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं परघातनामकर्मविकर्मकाय नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं आतपवातकाय नम· स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं उद्योतकर्मदाहकाय नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं श्वासनिःश्वासविमुक्ताय नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं प्रशस्तविहायोगतिप्रमुक्ताय नम. स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं अप्रशस्तविहायोगतिनिर्णाशकाय नम. स्वाहा । १२७ । ॐ ह्रीं त्रसकर्मविनाशकाय नमः स्वाहा । १२८ । ॐ ह्रीं स्थावरकर्मविशारकाय नम· स्वाहा । १२९ । ॐ ह्रीं बादरनामप्रवासकाय नमः स्वाहा । १३० । ॐ ह्रीं सूक्ष्मकर्मशोषकाय नमः स्वाहा । १३१ । ॐ ह्रीं पर्याप्तिकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १३२ । ॐ ह्रीं अपर्याप्तिकर्मनिषेधकाय नमः स्वाहा । १३३ । ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीरहिंसकाय नमः स्वाहा । १३४ । ॐ ह्रीं साधारणशरीरनिर्णाशकाय नमः स्वाहा । १३५ । ॐ ह्रीं स्थिरनामकर्मछेदकाय नमः स्वाहा । १३६ । ॐ ह्रीं अस्थिरनामकर्मनिर्ग्रन्थकाय नमः स्वाहा । १३७ । ॐ ह्रीं शुभकर्मपाशकाय नमः स्वाहा । १३८ । ॐ ह्रीं अशुभकर्मनिरसकाय नमः स्वाहा । १३९ । ॐ ह्रीं शुभगकर्मनिवारकाय नमः स्वाहा । १४० । ॐ ह्रीं अशुभग-



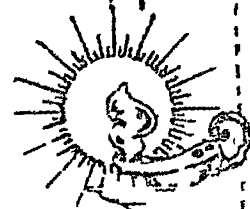


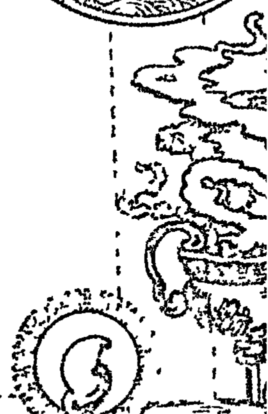


कर्मनिरसकाय नमः स्वाहा । १४१ । ॐ ह्रीं सुस्वरपरिवर्जकाय नमः स्वाहा । १४२ । ॐ ह्रीं दुःस्वर-निवारकाय नमः स्वाहा । १४३ । ॐ ह्रीं आदेयप्रकातिविनाशकाय नमः स्वाहा । १४४ । ॐ ह्रीं अनादेय-कर्मसारकाय नमः स्वाहा । १४५ । ॐ ह्रीं निर्माणनामकर्मकृतातकाय नमः स्वाहा । १४६ । ॐ ह्रीं यशः-कीर्तिछेदकाय नमः स्वाहा । १४७ । ॐ ह्रीं अयशःकीर्तिछेदकाय नमः स्वाहा । १४८ । ॐ ह्रीं पंच-कल्याणचतुस्त्रिंशदतिशयाष्टप्रातिहार्यसमवसरणादिविभूतियुक्तार्हन्त्यलक्ष्मीहेतुतीर्थकरनामकर्मोज्झासकाय नमः स्वाहाः । १४९ । ॐ ह्रीं उच्चगोत्रकर्मपिंजकाय नमः स्वाहा । १५० । ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मविनाशकाय नमः स्वाहा । १५१ । ॐ ह्रीं दानान्तरायदाहकाय नमः स्वाहा । १५२ ॐ ह्रीं लाभान्तरायकर्मोन्मन्थकाय नमः स्वाहा । १५३ । ॐ ह्रीं भोगान्तरायरहिताय नमः स्वाहा । १५४ । ॐ ह्रीं उपभोगान्तरायविनाशकाय नमः स्वाहा । १५५ । ॐ ह्रीं वीर्यान्तरायवारकाय नमः स्वाहा । १५६ । ॐ ह्रीं कर्माष्टकमुक्ताय नमः स्वाहा । १५७ । ॐ ह्रीं कर्मशताष्टचत्वारिंशन्निवारकाय नमः स्वाहा । १५८ । ॐ ह्रीं सख्यातकर्मनिवारकाय नमः स्वाहा । १५९ । ॐ ह्रीं असख्यातकर्मविदारकाय नमः स्वाहा । १६० । ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकर्मनिवारकाय नमः स्वाहा । १६१ । ॐ ह्रीं सख्यातलोककर्मविध्वसकाय नमः स्वाहा । १६२ । ॐ ह्रीं आनन्दशर्माय नमः स्वाहा । १६३ । ॐ ह्रीं आनन्दस्वभावाय नमः स्वाहा । १६४ । ॐ ह्रीं आनन्दस्वरूपाय नमः स्वाहा । १६५ । ॐ ह्रीं परमानन्दशर्माय नमः स्वाहा । १६६ । ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय नमः स्वाहा । १६७ । ॐ ह्रीं अनन्त-गुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । १६८ । ॐ ह्रीं अनन्तशर्माय नमः स्वाहा । १६९ । ॐ ह्रीं शमस्वभावाय नमः स्वाहा । १७० । ॐ ह्रीं शमसन्तुष्टाय नमः स्वाहा । १७१ । ॐ ह्रीं शमसतोषाय नमः स्वाहा । १७२ ।

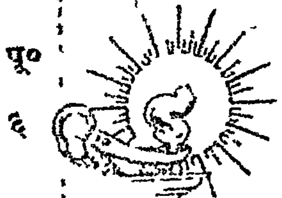






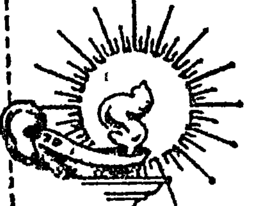


ॐ ह्रीं साम्यस्थानाय नमः स्वाहा । १७३ । ॐ ह्रीं साम्यगुणाय नम. स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं साम्यकृत-
कृत्याय नम. स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय नमः स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय नमः
स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं अनन्यप्रमाणाय नमः स्वाहा । १७८ । ॐ ह्रीं प्रमाणमुक्ताय नमः स्वाहा
। १७९ । ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । १८० । ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय नमः स्वाहा । १८१ । ॐ ह्रीं
ब्रह्मचैतन्याय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ ह्रीं शुद्धपरिणामकाय नमः स्वाहा । १८३ । ॐ ह्रीं शुद्धस्वभा-
वाय नमः स्वाहा । १८४ । ॐ ह्रीं अनन्तदर्शे नमः स्वाहा । १८५ । ॐ ह्रीं अशुद्धिरहिताय नमः स्वाहा
। १८६ । ॐ ह्रीं शुद्धयशुद्धिरहिताय नमः स्वाहा । १८७ । ॐ ह्रीं अनन्तदृक्त्वस्वरूपाय नमः स्वाहा । १८८ ।
ॐ ह्रीं अनन्तदृगानन्दाय नमः स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं अनन्तदृगुत्पादाय नमः स्वाहा । १९० । ॐ ह्रीं
अनन्तध्रुवाय नमः स्वाहा । १९१ । ॐ ह्रीं अनन्तव्ययभावाय नम. स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं अनन्तविलयाय
नम. स्वाहा । १९३ । ॐ ह्रीं अनन्ताकाराय नमः स्वाहा । १९४ । ॐ ह्रीं अनन्तभावाय नमः स्वाहा
। १९५ । ॐ ह्रीं चिन्मयस्वरूपाय नमः स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय नमः स्वाहा । १९७ । ॐ
ह्रीं चिद्रूपस्वरूपाय नम. स्वाहा । १९८ । ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरसाय नमः स्वाहा । १९९ । ॐ ह्रीं स्वानु-
भूतिरताय नमः स्वाहा । २०० । ॐ ह्रीं परमामृताय नमः स्वाहा । २०१ । ॐ ह्रीं परमामृततुष्टाय नमः
स्वाहा । २०२ । ॐ ह्रीं परमप्रीतये नमः स्वाहा । २०३ । ॐ ह्रीं परमवल्लभभावाय नमः स्वाहा । २०४ ।
ॐ ह्रीं व्यक्तस्वभावाय नमः स्वाहा । २०५ । ॐ ह्रीं एकत्वभावाय नम स्वाहा । २०६ । ॐ ह्रीं एकत्वस्वरू-
पाय नमः स्वाहा । २०७ । ॐ ह्रीं द्वित्वविनाशकाय नमः स्वाहा । २०८ । ॐ ह्रीं शास्वतप्रकाशाय नमः

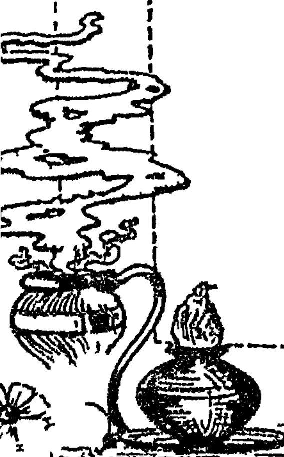


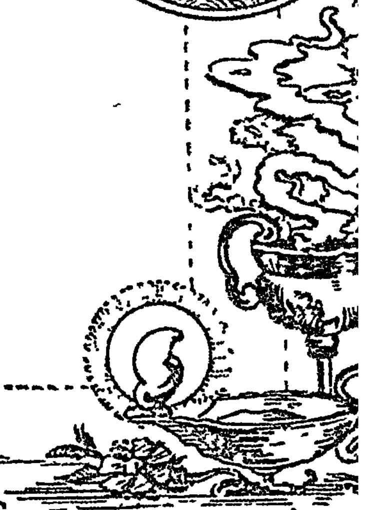



स्वाहा । २०९ । ॐ ह्रीं शास्वतद्योताय नमः स्वाहा । २१० । ॐ ह्रीं शास्वताष्टचन्द्राय नमः स्वाहा ।२११। ॐ ह्रीं शास्वतामृतमूर्तये नमः स्वाहा । २१२ । ॐ ह्रीं परमसूक्ष्माय नमः स्वाहा। २१३। ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय नमः स्वाहा । २१४ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणाय नमः स्वाहा। २१५। ॐ ह्रीं परमसूक्ष्मावकाशाय नमः स्वाहा । २१६ । ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय नमः स्वाहा । २१७ । ॐ ह्रीं निरवधिगुणाय नमः स्वाहा । २१८ । ॐ ह्रीं निरवधिस्वरूपाय नमः स्वाहा । २१९ । ॐ ह्रीं अतुलज्ञानाय नमः स्वाहा । २२० । ॐ ह्रीं अतुलसुखाय नमः स्वाहा । २२१ । ॐ ह्रीं अतुलभावाय नमः स्वाहा । २२२ । ॐ ह्रीं अतुलगुणाय नमः स्वाहा । २२३ । ॐ ह्रीं अतुलप्रकाशाय नमः स्वाहा। २२४। ॐ ह्रीं अचलाय नमः स्वाहा। २२५। ॐ ह्रीं अचलगुणाय नमः स्वाहा । २२६ । ॐ ह्रीं अचलस्वभावाय नमः स्वाहा । २२७ । ॐ ह्रीं स्वरूपाय नमः स्वाहा । २२८ । ॐ ह्रीं निरालंबाय नमः स्वाहा । २२९ । ॐ ह्रीं आलम्बरहिताय नमः स्वाहा । २३० । ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः स्वाहा । २३१ । ॐ ह्रीं निष्कलंकाय नमः स्वाहा । २३२ । ॐ ह्रीं नित्यालोकाय नमः स्वाहा । २३३ । ॐ ह्रीं आत्मरतये नमः स्वाहा । २३४ । ॐ ह्रीं स्वरूपगुप्ताय नमः स्वाहा । २३५ । ॐ ह्रीं शुद्धद्रव्याय नमः स्वाहा ।२३६। ॐ ह्रीं असंसाराय नमः स्वाहा । २३७। ॐ ह्रीं सानन्दानन्दिताय नमः स्वाहा । २३८ । ॐ ह्रीं स्वानन्दभावाय नमः स्वाहा । २३९ । ॐ ह्रीं स्वानन्दस्वरूपाय नमः स्वाहा । २४० । ॐ ह्रीं स्वानन्दगुणाय नमः स्वाहा । २४१ । ॐ ह्रीं स्वानन्दसतोषाय नमः स्वाहा । २४२ । ॐ ह्रीं शुद्धभावपर्यायाय नमः स्वाहा । २४३ । ॐ ह्रीं स्वातन्त्र्यधर्माय नमः स्वाहा ।२४४। ॐ ह्रीं आत्मस्वभावाय नमः स्वाहा । २४५। ॐ ह्रीं परमचित्परिणताय नमः स्वाहा । २४६ ।









ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय नमः स्वाहा । २४७ । ॐ ह्रीं परमस्नातकाय नमः स्वाहा । २४८ । ॐ ह्रीं स्नातक-धर्माय नम. स्वाहा । २४९ । ॐ ह्रीं सर्वावलोकनाय नम. स्वाहा । २५० । ॐ ह्रीं लोकाग्रस्थिताय नमः स्वाहा । २५१ । ॐ ह्रीं लोकव्यापकाय नम. स्वाहा । २५२ । ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नम. स्वाहा । २५३ । ॐ ह्रीं अनादिस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५४ । ॐ ह्रीं अनाद्यनुपमसिद्धाय नम. स्वाहा । २५५ । ॐ ह्रीं अनादिगुणपरिपूर्णाय नमः स्वाहा । २५६ ।

परिमलबहुलैर्ढैश्चन्दनैः कुंकुमौघैः,
विविधसुरभिद्रव्यैश्चारु कर्पूरपुष्टैः ।
अलिकुलमिलितैस्तैर्घ्राणयुक्तैरमीभिः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥ चन्दनम्

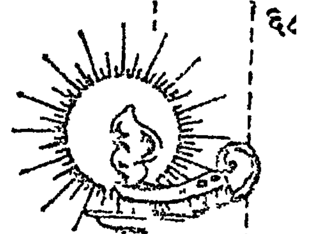
शशिकरनिकराभैर्भासितैरक्षतौघैः,
कलितविमलशोभैः शुभ्रडिंडीरपिंडैः ।
हसितहरिसितैस्तैः पुंजितैरक्षतोद्यैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

कमलबकुलमालामालतीमाल्लिकाभिः,
परिमलबहलाभिर्भ्रामरीसंभ्रमाभिः ।







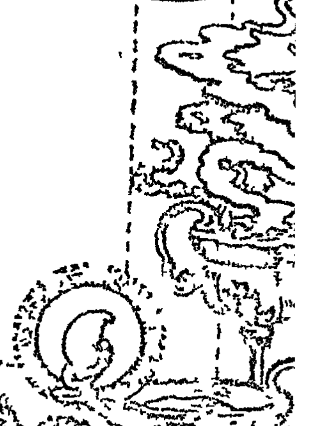



सुरतरुवरपुष्पैस्तैरनेकैरमीभिः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ॥

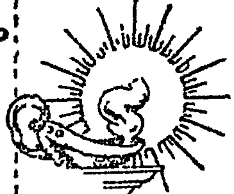
मृदुललितसुसिद्धैः सालिसंभूतपूतैः
हिमकरधवलैस्तैस्तन्दुलव्यंजनाढ्यैः ।
घृतमधुरसुपक्वैश्चारुपक्वान्नशोभैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ।

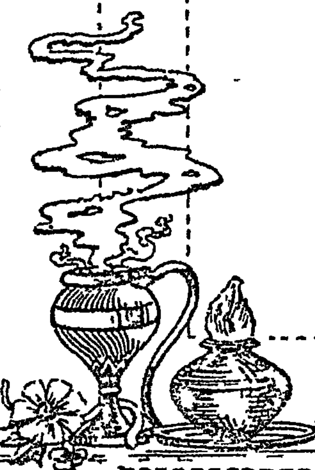
कनकमणिसुरत्नैर्निर्मितैर्दीप्तदीपै,—
रुडुगणधृतकांतित्रासितांहस्तमौघैः ।
विकसितवरबोधैः प्रातिहारातिकेन,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥ दीपम् ।

अगुरुतगरशुष्कैः शुद्धकर्पूरपूरैः,
मिलितसुरभिद्रव्यैश्चन्दनाद्यैरनेकैः ।
दहनदहितधूपैर्निर्जरानन्दभूतैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥ धूपम् ।

पू० ६

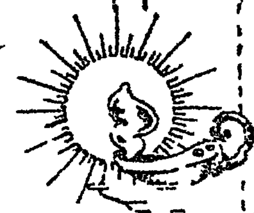


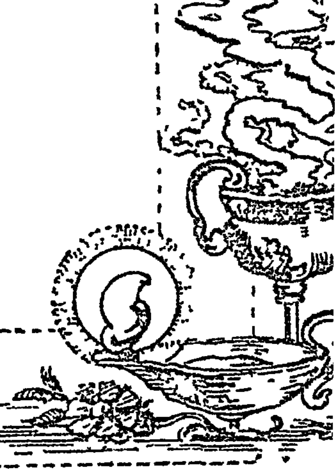


क्रमुकफलकपित्थैः श्रीफलाग्रैश्च मोचैः ।
पनसबदरचोचैर्दाडिमैः पुंजपुरैः ।
सरससुरभिगंधैर्भूतयेत्मानितैस्तैः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥ फलम् ।

वरजलफलपुष्पैश्चन्दनैरक्षतौघैः,
विरचितकुलभक्त्या शुक्लपुष्पांजलीश्च ।
मनत्रचनतनूत्थाकर्मनिर्मूलनेच्छुः,
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

ॐ ह्रीं असिआ उसा नमः, इतिमंत्रेणाष्टोत्तरं शतं जाप्य देयम् ।



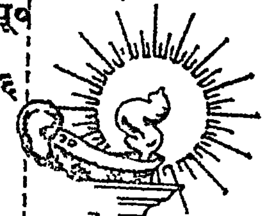


अथ जयमाला

हेतुर्द्वैतवलादुदीर्णसुदृशः सर्वंसहाः सर्वश,—
स्त्यक्त्वा संगमजस्रसुश्रुतपराः संयम्य साक्षं मनः।
ध्यात्वा स्वे शमिनः स्वयं स्वममलं निर्मूल्य कर्मारिवलम्,
ये शर्मप्रगुणैश्चकाशति शुभैस्ते भान्तु सिद्धा मयि ॥ १ ॥ पुष्पांजलिः।

सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान् साधितात्मस्वभावान्,
वन्दे सिद्धिप्रसिद्ध्यै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणो (णा) च्छादिदोषापहारात्,
योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ॥ १ ॥

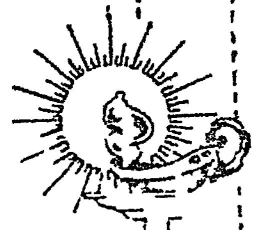
नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्न युक्तेः,
अस्त्यात्मानादिबद्धः स्वकृतजफलभुक् तत्क्षयान्मोक्षभागी।
ज्ञाता दृष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा,
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतोनान्यथा साध्यसिद्धिः ॥ २ ॥

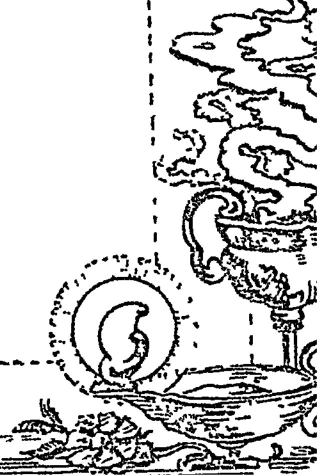






पू० ६



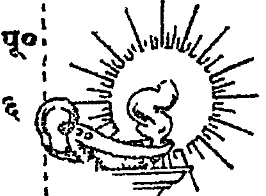


सत्त्वन्तर्वाह्यहेतुप्रभवविमलसद्दर्शनज्ञानचर्या,—
सम्पद्धेतिप्रघातक्षतदुरिततया व्यंजिताचिन्त्यसारैः ।
कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुखमहावीर्यसम्यक्त्वलब्धि,—
ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥ ३ ॥

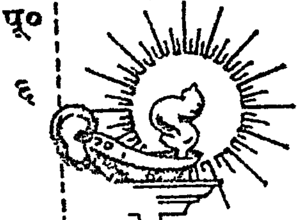
जानन् पश्यन् समस्तं सममनुपरतं सम्प्रतृप्यन् वितन्वन्,
धुन्वन् ध्वांतं नितान्तं निचितमनुसभं प्रीणयन्नीशभावम् ।
कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा,
आत्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन् सत् (न्) स्वयम्भूः प्रवृत्तः ॥ ४ ॥

छिन्दन् शेषानशेषान्निगलवलकलींस्तैरनन्तस्वभावैः,
सूक्ष्मत्वाग्राऽवगाहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः ।
अन्यैश्चान्यव्यपोहप्रवणविषयसंप्राप्तिलब्धिप्रभावै,—
रुर्ध्वं व्रज्यास्वभावात्समयमुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्ये ॥ ५ ॥

अन्याकारात्पिहेतुर्नच भवति परो येन तेनाल्पहीनः ।
प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृतिरुचिराकार एव ह्यमूर्तः ।
क्षुत्तृष्णाश्वासकासज्वरमरणजराऽनिष्टयोगप्रमोह,—
व्यापत्त्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहतः कोऽस्य सौख्यस्य माता ॥ ६ ॥





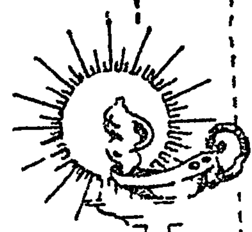


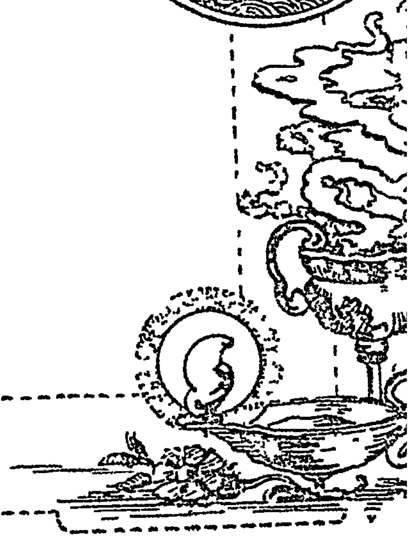
आत्मोपादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्वीतबाधं विशालम्,
वृद्धिह्रासव्यपेतं विषयविरहितं निःप्रतिद्वन्द्वभावम् ।
अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपममसितं शास्वतं सर्वकालम्,
उत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम् ॥ ७ ॥

नार्थः क्षुत्तृड्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या,—
नास्पृष्टेर्गंधमाल्यैर्नहिमृदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभावात् ।
आतंकार्त्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावत्,
दीपानार्थक्यवद्वा व्यपगततिमिरे दृश्यमाने समस्ते ॥ ८ ॥

तादृक्सम्पत्समेता विविधनयतपःसंयमज्ञानदृष्टि,—
चर्यासिद्धाःसमन्तात्प्रविततयशसो विश्वदेवाधिदेवाः ।
भूता भव्या भवन्तः सकलजगति ये स्तूयामाना विशिष्टैः ।
तान्सर्वान्नौम्यनन्तान्निजिगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं निर्धूतचिरन्तरसंसारकारणाज्ञानोद्भूतकेवलज्ञानातिशयसम्पन्नासिद्धाधिपतये नमः स्वाहा, पूर्णार्धम् ।





पू० ६

छट्ठी जयमालाका हिन्दी पद्यानुवाद

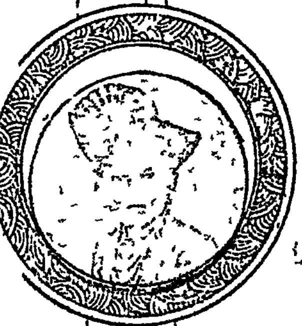
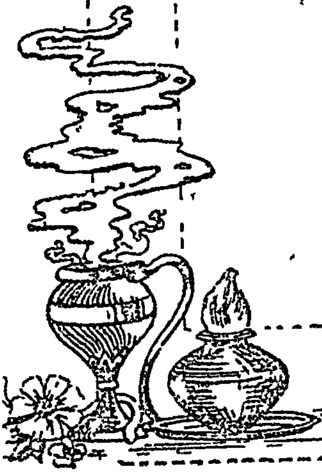
(रचयिता—बा. जुगलकिशोरजी मुखतार)

(१)

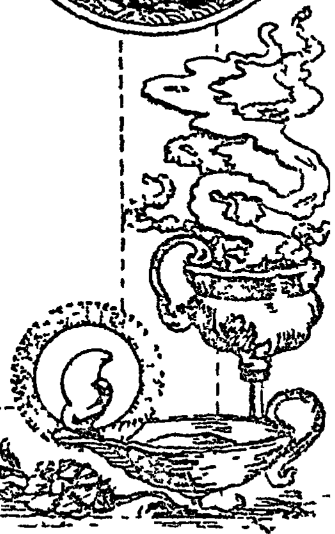
जिन वीरोंने कर्म प्रकृतियों, का सब मूलोच्छेद किया,
पूर्ण तपश्चर्याके बलपर, स्वात्मभावको साध लिया।
उन सिद्धोंकी सिद्धि अर्थ मैं, वन्दूं अतिसन्तुष्ट हुआ,
उनके अनुपम गुणाकर्षसे, भक्तिभावको प्राप्त हुआ ॥

(२)

स्वात्मभावकी लब्धि सिद्धि है, होती वह उन दोषोंके,
उच्छेदन से आच्छादक जो, ज्ञानादिक गुणवृन्दों के।
योग्य साधनोंकी सुयुक्तिसे, अग्निप्रयोगादिक द्वारा,
हेम शिलासे जगमें जैसे, हेम किया जाता न्यारा ॥





(३)

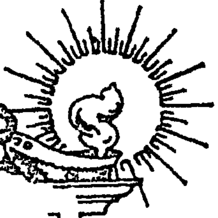
नहिं अभावमय सिद्धि इष्ट है, नहिं निजगुणविनाशवाली,
सत् का कभी नाश नहिं होता, रहता गुणी न गुण खाली ।
जिनकी ऐसी सिद्धि न उनका, तप विधान कुछ बनता है,
आत्मनाश निजगुणविनाशका, कौन यत्न बुध करता है ॥

(४)

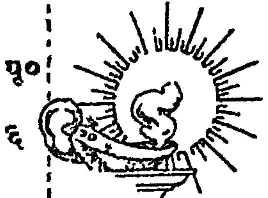
अस्तु; अनादिबद्ध आत्मा है, स्वकृत-कर्म-फलका भोगी,
कर्मबन्ध-फलभोग-नाशसे, होता मुक्ति-रमा-योगी ।
ज्ञाता, द्रष्टा, निजतनु-परिमित, संकोचेतर-धर्मा है,
स्वगुण-युक्त रहता है, हरदम ध्रौव्योत्पत्ति-व्ययात्मा है ॥

(५)

इस सिद्धान्त-मान्यताके बिन साध्य-सिद्धि नहिं घटती है—
स्वात्मरूप की लब्धि न होती, नहिं व्रत-चर्या बनती है ।
बन्ध-मोक्ष-फलकी कथनी सब कथनमात्र रह जाती है,
अन्त न आता भव-भ्रमण का, सत्य-शान्ति नहिं मिलती है ॥









पू० ६

(६)

जब वह आत्मा मोहादिक के उपशमादिको पाकर के,
बाहरमें गुरु-उपदेशादिक श्रेष्ठ निमित्त मिलाकरके ।
विमल-सुदर्शन-ज्ञान-चरणमय अपनी ज्योति जगाता है,
उस सुशक्ति के प्रबल-घात से घाति-चतुष्क नशाता है ॥

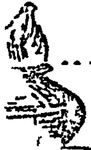
(७)

तब वह भासमान होता स्थिर—अद्भुत-परम-सुगुण-गणसे—
प्रकटित हुआ अचिन्त्य सार है जिनका दुरित-विनाशनसे ।—
केवलज्ञान-सुदर्शनसे, अति—वीर्य-प्रवर सुख-समकित से,
शेषलब्धिसे, भामण्डल से, चामरादि की सम्पत् से ॥

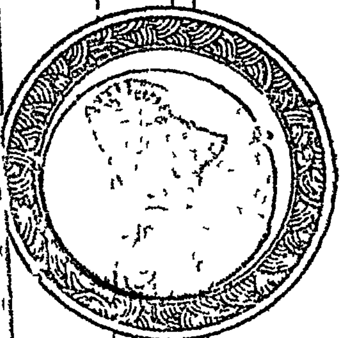
(८)

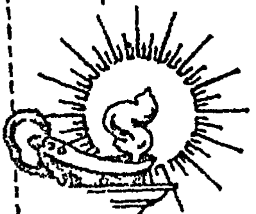
सबको सदा जानता-लखता युगपत्, व्याप्त-सुतृप्त हुआ,
घन-अज्ञान-मोह-तम धुनता—सबका सब, निःखेद हुआ ।
करता तृप्त सुवचनामृतसे—सभाजनों को औ करता—
ईश्वरता सब प्रजाजनोंकी, अन्य-ज्योति फीकी करता ॥





पू० ८





(९)

आत्माको, आत्म-स्वरूपसे, आत्मामें प्रतिक्षण ध्याता—
हुआ सातिशय वह आत्मा यों, सत्य-स्वयम्भू-पद पाता ।
वीतराग-अर्हत्-परमेष्ठी—आप्त-सार्व-जिन कहलाता,
परंज्योति-सर्वज्ञ-कृती-प्रभु—जीवन्मुक्त नाम पाता ॥

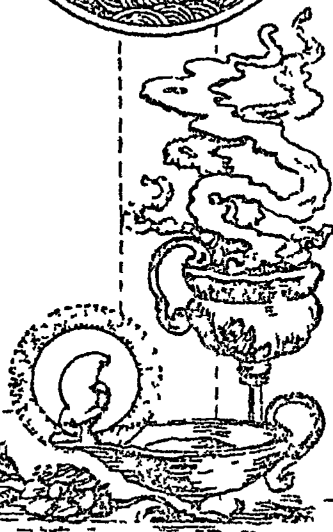
(१०)

शेष निगड-सम अन्य प्रकृतियाँ फिर छेदता हुआ सारी,
आयु-वेदनी-नाम-गोत्र हैं मूल प्रकृतियाँ जो भारी ।
उन अनन्तदृग्-बोध-वीर्य-सुख-सहित शेष क्षायिक गुणसे—
अव्याबाध-अगुरुलघुसे औ सूक्ष्मपना-अवगाहनसे—॥

(११)

शोभमान होता, तैसे ही अन्य गुणोंके समुदयसे—
प्रभवित हुए उत्तरोत्तर जो—कर्मप्रकृतिके संक्षयसे ।
क्षणमें ऊर्ध्वगमन-स्वभावसे, शुद्ध-कर्ममलहीन हुआ,
जा बसता है अग्रधाममें, निरुपद्रव-स्वाधीन हुआ ॥





(१२)

मूलोच्छेद हुआ कर्मोंका, बन्ध-उदय-सत्ता न रही,
अन्याकार-ग्रहण का कारण रहा न तव, इससे कुछ ही—
न्यून, चरम-तनु-प्रतिमाके सम रुचिराकृति ही रह जाता
और अमूर्तिक वह सिद्धात्मा, निर्विकार-पद को पाता ॥

(१३)

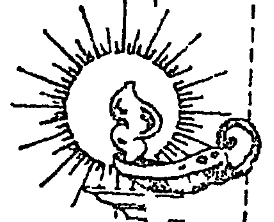
क्षुधा-तृपा-श्वासादिकामज्वर, जरा मरण के दुःखों का,
इष्ट वियोग-प्रमोह आपदा,—दिकके भारी कष्टोंका,
जन्महेतु जो, उस भवके क्षय, से उत्पन्न सिद्ध सुखका,
कर सकता परिमाण कौन है ? लेश नहीं जिसमें दुःखका ।

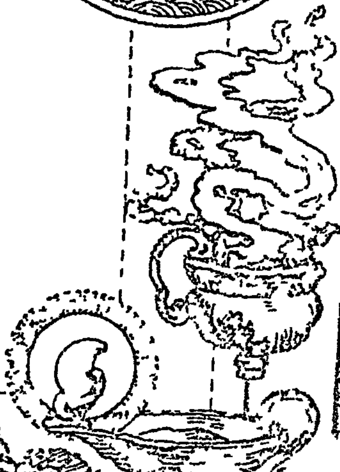
(१४)

सिद्ध हुआ निज उपादानसे, खुद अतिशयको प्राप्त हुआ,
बाधारहित, विशाल, इन्द्रियों—के विषयोंसे रिक्त हुआ ।
बढ़ता और न घटता जो है, प्रतिपक्षीसे रहित सदा,
उपमारहित अन्य द्रव्योंकी, नहीं अपेक्षा जिसे कदा ॥









(१५)

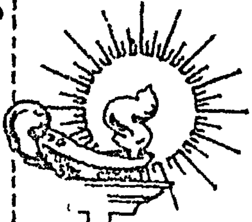
सुख उत्कृष्ट अमित शाश्वत वह, सर्वकाल में व्याप्त हुआ।
निरवधि सार परमसुख इससे, उस सुसिद्धको प्राप्त हुआ।
जो परमेश्वरपरमात्मा औ, देहविमुक्त कहा जाता,
स्वात्मस्थित कृतकृत्य हुआ, निज, पूर्ण स्वार्थको अपनाता॥

(१६)

कर्म नाशसे उस सुसिद्धके, क्षुधा तृषाका लेश नहीं,
नाना रसयुत अन्नपानका, अतः प्रयोजन शेष नहीं।
नहीं प्रयोजन गन्धमाल्यका, अशुचि योग जब नहीं कहीं,
नहीं काम मृदु शय्याका जब, निद्रादिकका नाम नहीं॥

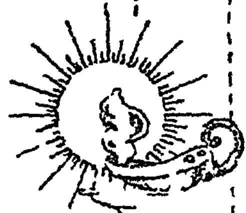
(१७)

रोग विना तत्शमनी उत्तम, औषधि जैसे व्यर्थ कही,
तम विन दृश्यमान होते सब, दीपशिखा ज्यों व्यर्थ कही।
त्यों सांसारिक विषय सौख्यका, सिद्ध हुए कुछ काम नहीं,
बाधित, विषम, पराश्रित, भंगुर, बंध हेतु जो अदुःख नहीं॥



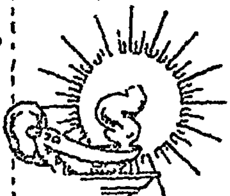














(१८)

यों अनन्त ज्ञानादि गुणोंकी, सम्पत्से जो युक्त सदा,
विविध सुनय तप संयमसे हो, सिद्ध, न भजते विकृति कदा।
सम्यग्दर्शनज्ञानचरणसे, तथा सिद्धपदको पाते,
पूर्ण यशस्वी हुए, विश्व—देवाधिदेव जो कहलाते ॥

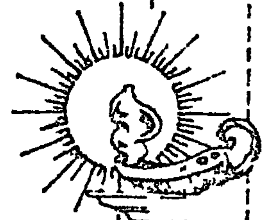
(१९)

आवागमन विमुक्त हुए, जिनको करना कुछ शेष नहीं।
आत्मलीन, सब दोष हीन, जिनके विभावका लेश नहीं।
राग द्वेष भयमुक्त निरंजन, अजर अमरपदके स्वामी,
मंगलभूत पूर्ण विकसित, सत् चिदानन्द जो निष्कामी ॥

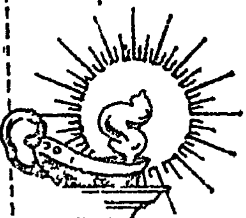
(२०)

ऐसे हुए अनन्त सिद्ध औ, वर्तमान हैं संप्रति जो।
आगे होंगे सकल जगतमें, विबुध जनोंसे संस्तुत जो।
उन सबको नतमस्तक हो मैं, वन्दूं तीनों काल सदा,
तत्स्वरूपकी शीघ्र प्राप्तिका, इच्छुक होकर, सहित मुदा ॥











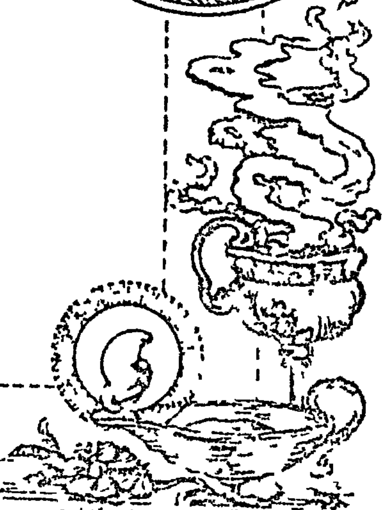
(२१)

कारण, उनका जो स्वरूप है, वही रूप सब अपना है ।
उसही तरह सु विकसित होता, इसमें लेश न कहना है ।
उनके चिन्तन वन्दन से निज, रूप सामने आता है,
भूली निज निधिका दर्शन यों, प्राप्ति प्रेम उपजाता है ॥

(२२)

इससे सिद्ध भक्ति है सच्ची, जननी सब कल्याणों की,
श्रेयो मार्ग सुलभ करती, वन हेतु कुशल परिणामों की,
कही "सिद्धि सोपान" इसीसे, प्रौढ़ सुधीजन अपनाते,
पूज्यपादकी सिद्धभक्ति लख, युग मुमुक्षु अति हर्षाते ॥









अथ सप्तमपंक्तिस्थितद्वादशोतरपंचशत्तकमलोपरिपूजा ।

ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ॥
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।
देवं ध्यायति यः, स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥

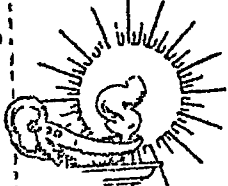
—पुष्प दत्वा स्थापना कुर्यात्

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥
सकलामरेन्द्रसेव्यं, ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्
" " " " अत्र तिष्ठ २ ठः ठः
" " " " अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्







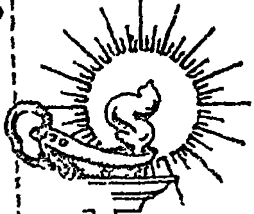
अथाष्टकम्—

जयत्ति जगति यस्य प्राभवं सम्यगात्मो,—
दयविजितविपक्षं त्रिश्वकल्याणबीजम् ।
सुरसरिदमलांभोधारयाराधनीयम्,
गणधरवलयं तं सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ १ ॥ जलम् ।

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः स्वाहा. इति समुच्चयमंत्रः ।

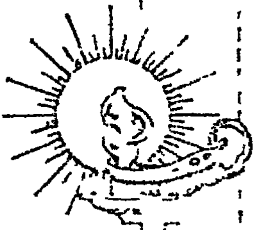
अथ पृथक् २ मंत्राणि—

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं अर्हद्रूपाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं अर्हद्गुणाय नम. स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनाय नम स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानाय नम' स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं अर्हत्सुखाय नम. स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्याय नम' स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनगुणाय नम. स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानगुणाय नम' स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं अर्हत्सुखगुणाय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यगुणाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं अर्हत्सम्यक्तगुणाय नम. स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं अर्हत्स्वगुणाय नम. स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं अर्हद्द्रशागाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं अर्हदाभिनिबोधाय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं अर्हच्छ्रुतबोधगुणाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं अर्हदवधिगुणाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्ययगुणाय नम. स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलगुणाय नमः





॥ ॐ ह्रीं अर्हत्केवलदर्शनाय नमः स्वाहा ।२२। ॐ ह्रीं
स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलस्वरूपाय नमः स्वाहा ।२१। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय
अर्हत्केवलज्ञानाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलवीर्याय नम. स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलज्ञानाय नमः स्वाहा
नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलदर्शनाय नम· स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलद्वादशागाय नमः स्वाहा । २९ । ॐ
।२७। ॐ ह्रीं अर्हन्मगलवीर्याय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलश्रुताय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं
ह्रीं अर्हन्मगलाभिनिबोधकाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलमन.पर्ययज्ञानाय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ
अर्हन्मंगलावधिज्ञानाय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलस्वरूपाय नम स्वाहा । ३५ । ॐ
ह्रीं अर्हन्मगलकेवलज्ञानाय नम. स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलकेवलगुणाय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं
ह्रीं अर्हन्मगलकेवलदर्शनाय नम. स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलधर्मस्वरूपाय नम. स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं
अर्हन्मगलकेवलधर्माय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमचिद्रूपाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं अर्हल्लो-
अर्हल्लोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलदर्शनाय नम. स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं अर्ह-
कोत्तमगुणाय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवललोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं
त्केवललोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधकाय नमः स्वाहा । ४७ ।
अर्हल्लोकोत्तमद्वादशागाय नम. स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययज्ञानाय नम. स्वाहा
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमावधिबोधाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय नमः
। ४९ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलद्रव्याय
स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलपर्यायाय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं

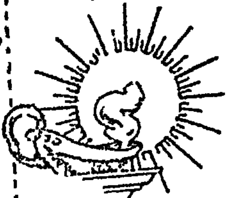




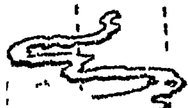
नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलभावाय नमः स्वाहा ।५४ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमध्रौव्यभावाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमोत्पादभावाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमस्थिरभावाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं अर्हद्रूपशरणाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं अर्हद्गुणशरणाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं अर्हदभिनिबोधशरणाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगाय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अर्हदवधिशरणाय नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणान्पाय नमः स्वाहा ।६९। ॐ ह्रीं अर्हत्केवलधर्मशरणाय नमः स्वाहा ।७०। ॐ ह्रीं अर्हत्केवलमंगलशरणाय नमः स्वाहा ।७१। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलगुणशरणाय नमः स्वाहा ।७२। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलज्ञानगुणशरणाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलदृष्टिशरणाय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलबोधशरणाय नमः स्वाहा । ७५। ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलमनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलशरणाय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलगुणशरणाय नमः स्वाहा। ७८। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमशरणाय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणशरणाय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमदर्शनशरणाय नमः स्वाहा ।८२। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यगुणशरणाय नमः स्वाहा ।८४। ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमद्वादशांगशरणाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधशरणाय नमः





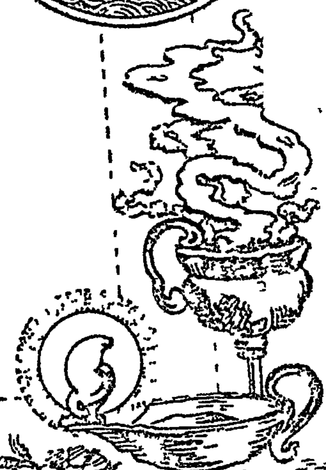






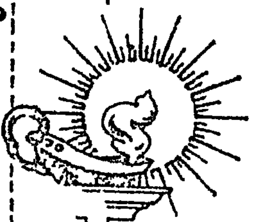






स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमावधिशरणाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययशर-
णाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानशरणाय नम स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं अर्हद्विभूति-
प्रधानाय नमः स्वाहा ।९०। ॐ ह्रीं अर्हद्विभूतिधर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं अर्हदनन्तचतुष्टयाय
नम. स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अर्हदनन्तचतुष्टयस्वरूपगुणाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं अर्हत्त्रिज्ञानस्वयंभुवे
नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं अर्हद्दशातिशयस्वयंभुवे नम. स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं अर्हद्दशातिशयघातिक्षयाय
नम· स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं अर्हच्चतुर्दशदेवकृतातिशयाय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानानंतध्यानाय
नम. स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं अर्हत्तपोऽनतगुणाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं अर्हद्ध्यानानंतध्येयाय नम
स्वाहा । १०० । ॐ ह्रीं अर्हदनन्तज्ञानगुणात्मने नम स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं अर्हत्परमात्मने नम· स्वाहा ।
१०२ । ॐ ह्रीं अर्हदनन्तगुणात्मने नम· स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं अर्हत्स्वरूपगुप्तये नम. स्वाहा । १०४ ।

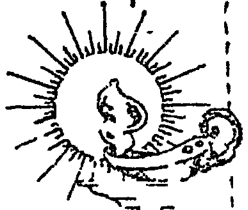
ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपेभ्यो नम स्वाहा । १०६ ।
ॐ ह्रीं सिद्धगुणेभ्यो नमः स्वाहा । १०७ । ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानेभ्यो नमः स्वाहा । १०८ ।
ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनेभ्यो नमः स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वेभ्यो नमः स्वाहा । ११० ।
ॐ ह्रीं सिद्धवीर्येभ्यो नम स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं सिद्धपादुकेभ्यो नमः स्वाहा । ११२ ।
ॐ ह्रीं सख्यातसिद्धेभ्यो नम· स्वाहा । ११३ । ॐ ह्रीं असख्यातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११४ ।
ॐ ह्रीं अनंतसिद्धेभ्यो नम स्वाहा ११५ ॐ ह्रीं असंख्यातलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११६ ।
ॐ ह्रीं अनन्तानतसिद्धेभ्यो नम स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं अनन्तलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११८ ।

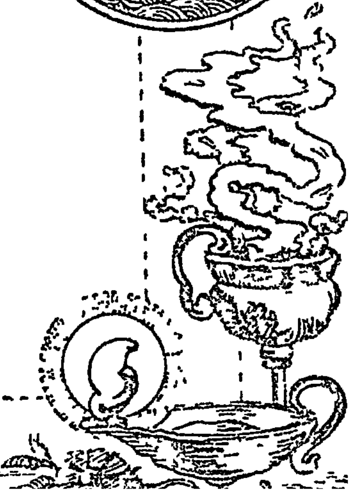


ॐ ह्रीं अनन्तानन्तलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं निर्यग्लोकासिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं सर्वमुखसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं स्थलसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं गगनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं समुद्घातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं असमुद्घातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं साधारणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं असाधारणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२७ । ॐ ह्रीं निराभरणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२८ । ॐ ह्रीं तीर्थंकरसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२९ । ॐ ह्रीं तीर्थेतरसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३० । ॐ ह्रीं उत्कृष्टावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१३१। ॐ ह्रीं मध्यमावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१३२। ॐ ह्रीं जघन्यावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ।१३३। ॐ ह्रीं उपसर्गसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३४ । ॐ ह्रीं षड्विधकालसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३५ । ॐ ह्रीं निरुपसर्गसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३६ । ॐ ह्रीं द्वीपसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३७ । ॐ ह्रीं उदधिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३८ । ॐ ह्रीं स्वस्थित्यासनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३९ । ॐ ह्रीं पर्यंकासनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४० । ॐ ह्रीं पुवेदसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४१ । ॐ ह्रीं क्षपकश्रेण्यारूढसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४२ । ॐ ह्रीं एकसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४३ । ॐ ह्रीं द्विसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४४ । ॐ ह्रीं त्रिसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४५ । ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४६ । ॐ ह्रीं त्रिलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४७ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलेभ्यो नमः स्वाहा । १४८ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलरूपेभ्यो नमः स्वाहा । १४९ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलज्ञानेभ्यो नमः स्वाहा । १५० । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलदर्शनेभ्यो नमः स्वाहा । १५१ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलवीर्येभ्यो

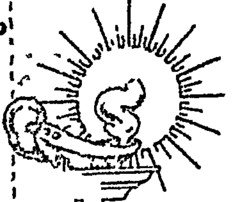


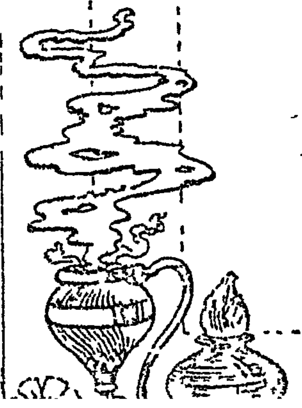




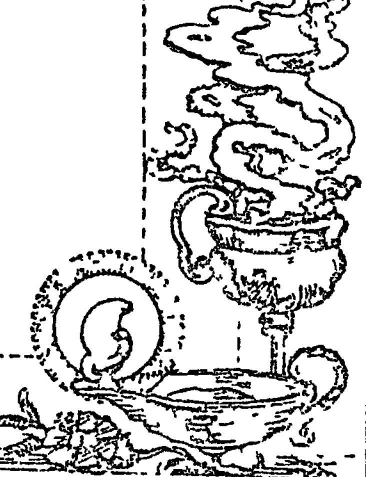


नम॰ स्वाहा । १५२ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसम्यक्त्वेभ्यो नम॰ स्वाहा । १५३ । ॐ ह्रीं सिद्धमगलसूक्ष्मत्वेभ्यो
नम. स्वाहा । १५४ । ॐ ह्रीं सिद्धमगलावगाहनेभ्यो नम. स्वाहा । १५५ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलागुरुलघुभ्यो
नमः स्वाहा । १५६ । ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाव्याबाधेभ्यो नमः स्वाहा । १५७ । ॐ ह्रीं सिद्धाष्टगुणेभ्यो नमः
स्वाहा । १५८ । ॐ ह्रीं सिद्धाष्टस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा । १५९ । ॐ ह्रीं सिद्धाष्टप्रकाशकेभ्यो नम. स्वाहा ।
१६० । ॐ ह्रीं मगलसिद्धपर्यभेभ्यो नम. स्वाहा । १६१ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो नमः स्वाहा । १६२ ।
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोतमचिद्रूपाय नमः स्वाहा । १६३ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा ।
१६४ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमज्ञानाय नम॰ स्वाहा । १६५ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा ।
। १६६ । ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमवीर्याय नम. स्वाहा । १६७ । ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय नम॰ स्वाहा । १६८ ।
ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । १६९ । ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनशरणाय नम स्वाहा । १७० । ॐ ह्रीं
सिद्धज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । १७१ । ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वशरणाय नम. स्वाहा । १७२ । ॐ ह्रीं सिद्ध-
वीर्यशरणाय नमः स्वाहा । १७३ । ॐ ह्रीं सिद्धानन्तशरणाय नम. स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं सिद्धानन्ता-
नन्तगुणशरणाय नम. स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं सिद्धत्रिकालशरणाय नम॰ स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं सिद्ध-
त्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं सिद्धसंख्यातलोकशरणाय नम. स्वाहा । १७८ । ॐ ह्रीं
सिद्धध्रौव्यगुणशरणाय नमः स्वाहा । १७९ । ॐ ह्रीं सिद्धोत्पादगुणशरणाय नम॰ स्वाहा । १८० । ॐ ह्रीं
सिद्धसाम्यगुणशरणाय नम स्वाहा । १८१ । ॐ ह्रीं सिद्धस्वच्छगुणशरणाय नम स्वाहा । १८२ । ॐ ह्रीं
सिद्धसमाधिगुणशरणाय नम स्वाहा । १८३ । ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्तगुणशरणाय नम. स्वाहा । १८४ । ॐ ह्रीं



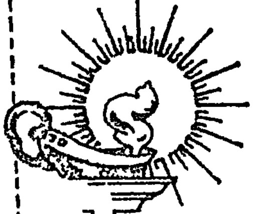




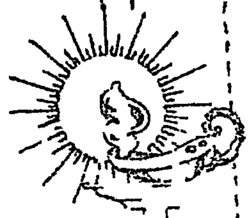


सिद्धाव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८५ । ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्ताव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८६ । ॐ ह्रीं सिद्धगुणगणशरणाय नमः स्वाहा । १८७ । ॐ ह्रीं सिद्धपरमात्मरूपाय नमः स्वाहा । १८८ । ॐ ह्रीं सिद्धाखण्डरूपाय नमः स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं सिद्धचिदानन्दरूपाय नमः स्वाहा । १९० । ॐ ह्रीं सिद्ध-सहजानन्दाय नमः स्वाहा । १९१ । ॐ ह्रीं सिद्धाच्छेद्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं सिद्धाभेद्य-गुणाय नमः स्वाहा । १९३ । ॐ ह्रीं सिद्धानौपम्यधर्माय नमः स्वाहा । १९४ । ॐ ह्रीं सिद्धामृततत्त्वाय नमः स्वाहा । १९५ । ॐ ह्रीं सिद्धश्रुतप्राप्ताय नमः स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं सिद्धकेवलप्राप्ताय नमः स्वाहा । १९७ । ॐ ह्रीं सिद्धसाकारनिराकाराय नमः स्वाहा । १९८ । ॐ ह्रीं सिद्धनिरालम्बाय नमः स्वाहा ।१९९। ॐ ह्रीं सिद्धनिष्कलंकाय नमः स्वाहा ।२००। ॐ ह्रीं सिद्धात्मसम्पन्नाय नमः स्वाहा ।२०१। ॐ ह्रीं सिद्धतेजसे नमः स्वाहा । २०२ । ॐ ह्रीं सिद्धागर्भवासाय नमः स्वाहा । २०३ । ॐ ह्रीं सिद्धलक्ष्मीसंतर्पकाय नमः स्वाहा ।२०४। ॐ ह्रीं सिद्धान्तरंगाय नमः स्वाहा ।२०५। ॐ ह्रीं सिद्धस्वारसिकाय नमः स्वाहा ।२०६। ॐ ह्रीं सिद्धशिखरमडनाय नमः स्वाहा । २०७ । ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धानन्तानन्ताय नमः स्वाहा । २०८ ।

ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः स्वाहा । २०९ । ॐ ह्रीं सूरिगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१० । ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २११ । ॐ ह्रीं सूरिसम्यक्त्वगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१२ । ॐ ह्रीं सूरिज्ञानगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१३ । ॐ ह्रीं सूरिदर्शनगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१४ । ॐ ह्रीं सूरिवीर्य-गुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१५ । ॐ ह्रीं सूरिषट्त्रिंशद्गुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१६ । ॐ ह्रीं सूरि-पचाचाररतेभ्यो नमः स्वाहा । २१७ । ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१८ ।



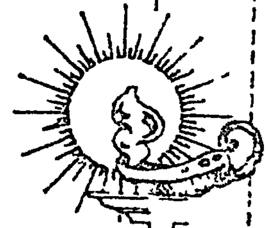
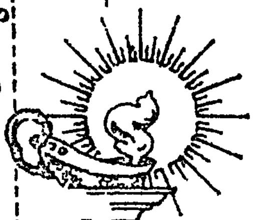







ॐ ह्रीं सूरिपर्यायगुणेभ्यो नमः स्वाहा । २१९ । ॐ ह्रीं सूरिमगलेभ्यो नमः स्वाहा। २२० । ॐ ह्रीं मूरिज्ञान
मगलेभ्यो नम. स्वाहा । २२१ । ॐ ह्रीं सूरिदर्शनमगलेभ्यो नमः स्वाहा । २२२ । ॐ ह्रीं मूरिमंगलवीर्येभ्यो
नम. स्वाहा । २२३ । ॐ ह्रीं सूरिमगलधर्माय नमः स्वाहा । २२४ । ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमेभ्यो नम. स्वाहा
। २२५ । ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमज्ञानाय नम स्वाहा। २२६ । ॐ ह्रीं मूरिलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा
। २२७ । ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा । २२८ । ॐ ह्रीं सूरिकेवलधर्माय नमः स्वाहा । २२९।
ॐ ह्रीं सूरितपेभ्यो नम स्वाहा । २३० । ॐ ह्रीं सूरिपरमतपेभ्यो नमः स्वाहा । २३१ । ॐ ह्रीं सूरितप-
वोरगुणेभ्यो नम स्वाहा । २३२ । ॐ ह्रीं सूरिवीरगुणपराक्रमेभ्यो नमः स्वाहा। २३३ । ॐ ह्रीं सूरि-
समृद्धिभ्यो नमः स्वाहा । २३४ । ॐ ह्रीं सूरियोगिभ्यो नमः स्वाहा । २३५ । ॐ ह्रीं मूरिध्यानेभ्यो नमः
स्वाहा । २३६ । ॐ ह्रीं सूरिधातृभ्यो नम. स्वाहा । २३७ । ॐ ह्रीं मूरिपात्रेभ्यो नम स्वाहा । २३८। ॐ
ह्रीं सूरिशरणाय नमः स्वाहा । २३९ । ॐ ह्रीं सूरिगुणशरणाय नमः स्वाहा । २४० । ॐ ह्रीं सूरिधर्म-
स्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । २४१ । ॐ ह्रीं सूरिसुखस्वरूपशरणाय नम. स्वाहा । २४२ । ॐ ह्रीं मूरि-
ज्ञानशरणाय नम. स्वाहा । २४३ । ॐ ह्रीं सूरिदर्शनशरणाय नमः स्वाहा। २४४ । ॐ ह्रीं मूरिवीर्यशर-
णाय नम स्वाहा । २४५ । ॐ ह्रीं सूरिमगलशरणाय नम. स्वाहा । २४६ । ॐ ह्रीं मूरितपशरणाय नमः
स्वाहा । २४७ । ॐ ह्रीं सूरिचारित्रशरणाय नमः स्वाहा । २४८ । ॐ ह्रीं मूरिध्यानशरणाय नमः स्वाहा
। २४९ । ॐ ह्रीं सूरिऋद्धिशरणाय नम. स्वाहा । २५० । ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । २५१।
ॐ ह्रीं सूरित्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । २५२ । ॐ ह्रीं मूरित्रिजगन्मगलशरणाय नमः स्वाहा । २५३ ।





ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमंगलशरणाय नमः स्वाहा । २५४ । ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमंडनशरणाय नमः स्वाहा । २५५ । ॐ ह्रीं सूरिऋद्धिमंगलशरणाय नमः स्वाहा । २५६ । ॐ ह्रीं सूरिमंत्रस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५७ । ॐ ह्रीं सूरिधर्ममंत्रस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५८ । ॐ ह्रीं सूरिचैतन्यगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५९ । ॐ ह्रीं सूरिचिदानन्दाय नमः स्वाहा । २६० । ॐ ह्रीं सूरिसहजानन्दाय नमः स्वाहा । २६१ । ॐ ह्रीं सूरिज्ञानानन्दाय नमः स्वाहा । २६२ । ॐ ह्रीं सूरिदृगानन्दाय नमः स्वाहा । २६३ । ॐ ह्रीं सूरितपश्चानन्दाय नमः स्वाहा । २६४ । ॐ ह्रीं सूरिदृक्स्वरूपानन्दाय नमः स्वाहा । २६५ । ॐ ह्रीं सूरितपगुणानन्दाय नमः स्वाहा । २६६ । ॐ ह्रीं सूरितपगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । २६७ । ॐ ह्रीं सूरिहंसानन्दाय नमः स्वाहा । २६८ । ॐ ह्रीं सूरिहंसगुणानन्दाय नमः स्वाहा । २६९ । ॐ ह्रीं सूरिमंत्रगुणानन्दाय नमः स्वाहा । २७० । ॐ ह्रीं सूरिसद्ध्यानानन्दाय नमः स्वाहा । २७१ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतचन्द्राय नमः स्वाहा । २७२ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतचन्द्रस्वरूपाय नमः स्वाहा । २७३ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतगुणाय नमः स्वाहा । २७४ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतघनदाय नमः स्वाहा । २७५ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतघनस्वरूपाय नमः स्वाहा । २७६ । ॐ ह्रीं सूरिद्रव्याय नमः स्वाहा । २७७ । ॐ ह्रीं सूरिगुणद्रव्याय नमः स्वाहा । २७८ । ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । २७९ । ॐ ह्रीं सूरिगुणपर्यायाय नमः स्वाहा । २८० । ॐ ह्रीं सूरिपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा । २८१ । ॐ ह्रीं सूरिगुणपर्यायद्रव्याय नमः स्वाहा । २८२ । ॐ ह्रीं सूरिगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । २८३ । ॐ ह्रीं सूरिध्रौव्यगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । २८४ । ॐ ह्रीं सूरिव्ययगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । २८५ । ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वाय नमः स्वाहा । २८६ । ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वगुणाय नमः स्वाहा । २८७ ।



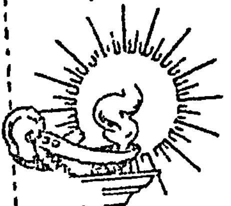




सिद्ध चक्र ह्रीं मंडल विधान









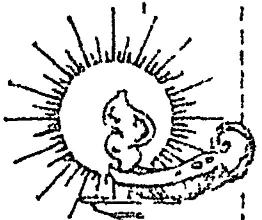
ॐ ह्रीं सूरिनिजस्वभावाय नमः स्वाहा ।२८८। ॐ ह्रीं सूरिश्राश्रवविलयाय नमः स्वाहा ।२८९। ॐ ह्रीं सूरिविध-
विनाशाय नमः स्वाहा । २९० । ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्वाय नमः स्वाहा । २९१ । ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्व-
स्वरूपाय नमः स्वाहा । २९२ । ॐ ह्रीं सूरिसंवरगुणाय नमः स्वाहा । २९३ । ॐ ह्रीं सूरिसंवरधर्माय
नमः स्वाहा । २९४ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरातत्त्वाय नमः स्वाहा । २९५ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणाय नमः
स्वाहा । २९६ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणरूपाय नमः स्वाहा । २९७ । ॐ ह्रीं सूरिपरमनिर्जराधर्माय नमः
स्वाहा । २९८ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरानुबंधाय नमः स्वाहा । २९९ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरास्वरूपाय नमः
स्वाहा । ३०० । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जराप्रतापाय नमः स्वाहा । ३०१ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षाय नमः स्वाहा
। ३०२ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३०३ । ॐ ह्रीं सूरिबंधमोक्षाय नमः स्वाहा । ३०४ ।
ॐ ह्रीं सूरिमोक्षगुणाय नमः स्वाहा । ३०५। ॐ ह्रीं सूरिमोक्षानुबंधाय नमः स्वाहा । ३०६ । ॐ ह्रीं सूरि-
मोक्षप्रकाशकाय नमः स्वाहा । ३०७ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षविमंडनाय नमः स्वाहा । ३०८ । ॐ ह्रीं सूरिपर-
मात्मस्वरूपरताय नमः स्वाहा । ३०९ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षप्राप्ताय नमः स्वाहा । ३१० ।

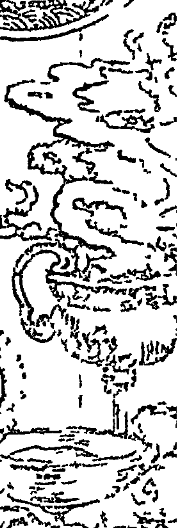
ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः स्वाहा । ३११ । ॐ ह्रीं पाठकगुणेभ्यो नमः स्वाहा । ३१२ । ॐ ह्रीं
पाठकगुणस्वरूपेभ्यो नम स्वाहा । ३१३ । ॐ ह्रीं पाठकपर्यायाय नमः स्वाहा । ३१४ । ॐ ह्रीं पाठक-
गुणपर्यायाय नमः स्वाहा । ३१५ । ॐ ह्रीं पाठकगुणपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३१६ । ॐ ह्रीं पाठक-
द्रव्याय नमः स्वाहा । ३१७ । ॐ ह्रीं पाठकगुणद्रव्याय नमः स्वाहा । ३१८ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यस्वरूपाय
नम. स्वाहा । ३१९ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यपर्यायाय नमः स्वाहा । ३२० ॐ ह्रीं पाठकपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा





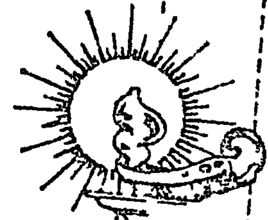




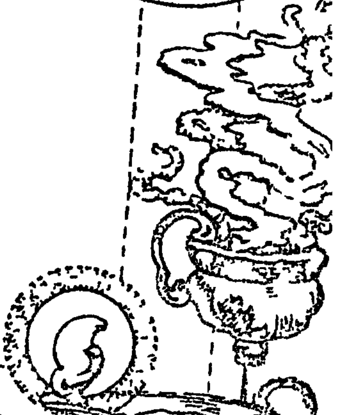



३२१ । ॐ ह्रीं पाठकमगलाय नमः स्वाहा । ३२२ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलगुणाय नमः स्वाहा ।३२३। ॐ ह्रीं पाठक-मगलगुणस्वरूपाय नम. स्वाहा ।३२४। ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमंगलाय नमः स्वाहा ।३२५। ॐ ह्रीं पाठकमंगलद्रव्य-गुणाय नमः स्वाहा । ३२६ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलद्रव्यगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३२७। ॐ ह्रीं पाठकमंगल-पर्यायाय नम· स्वाहा ।३२८। ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमंगलपर्यायाय नमः स्वाहा ।३२९। ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यगुणपर्या-याय नमः स्वाहा । ३३० । ॐ ह्रीं पाठकस्वरूपमंगलरूपाय नम· स्वाहा । ३३१ । ॐ ह्रीं पाठकलोकोत्त-माय नमः स्वाहा । ३३२ । ॐ ह्रीं पाठकगुणलोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ३३३ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यलोको-त्तमाय नम· स्वाहा । ३३४ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाय नमः स्वाहा । ३३५ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानलोकोत्तमाय नम· स्वाहा । ३३६ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनाय नमः स्वाहा । ३३७ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनलोकोत्तमाय नम. स्वाहा । ३३८ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३३९ । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३४० । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३४१ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्याय नमः स्वाहा । ३४२ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणाय नमः स्वाहा । ३४३ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपर्यायाय नमः स्वाहा । ३४४ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यद्रव्याय नमः स्वाहा । ३४५ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणपर्यायाय नम· स्वाहा । ३४६ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनपर्यायाय नमः स्वाहा । ३४७ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपपर्यायाय नमः स्वाहा । ३४८ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानद्रव्याय नमः स्वाहा । ३४९ । ॐ ह्रीं पाठकशरणाय नमः स्वाहा । ३५० । ॐ ह्रीं पाठकगुणशरणाय नम· स्वाहा । ३५१ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानगुणशरणाय नमः स्वाहा । ३५२ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनशरणाय नम. स्वाहा । ३५३ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा

। ३५४ । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वशरणाय नमः स्वाहा । ३५५ । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपशरणाय नमः
स्वाहा । ३५६ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ३५७ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यस्वरूपशरणाय नमः
स्वाहा । ३५८ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपरमात्मशरणाय नम. स्वाहा । ३५९ । ॐ ह्रीं पाठकद्वादशांगाय नमः
स्वाहा । ३६० । ॐ ह्रीं पाठकदशपूर्वाय नमः स्वाहा । ३६१ । ॐ ह्रीं पाठकचतुर्दशपूर्वाय नम स्वाहा
। ३६२ । ॐ ह्रीं पाठकाचारांगाय नमः स्वाहा । ३६३ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाचारांगाय नम. स्वाहा ।३६४।
ॐ ह्रीं पाठकतपाचाराय नमः स्वाहा । ३६५ । ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयाय नमः स्वाहा । ३६६ । ॐ ह्रीं
पाठकरत्नत्रयस्वरूपाय नम. स्वाहा । ३६७ । ॐ ह्रीं पाठकध्रुवसंसाराय नमः स्वाहा। ३६८ । ॐ ह्रीं पाठक-
एकत्वरूपाय नम. स्वाहा । ३६९ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वगुणाय नमः स्वाहा । ३७० । ॐ ह्रीं पाठकएकत्व-
परात्मने नमः स्वाहा । ३७१ । ॐ ह्रीं पाठकधर्माय नमः स्वाहा । ३७२ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचैतन्याय नमः
स्वाहा ।३७३। ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचैतन्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३७४। ॐ ह्रीं पाठकएकत्वद्रव्याय नमः स्वाहा
।३७५। ॐ ह्रीं पाठकचिदानन्दाय नमः स्वाहा ।३७६। ॐ ह्रीं पाठकसिद्धिसाधकाय नमः स्वाहा ।३७७। ॐ
ह्रीं पाठकसमृद्धिसपूर्णाय नम. स्वाहा ३७८ । ॐ ह्रीं पाठकनिर्ग्रंथाय नमः स्वाहा । ३७९ । ॐ ह्रीं पाठक-
अर्थनिधानाय नमः स्वाहा । ३८० । ॐ ह्रीं पाठकसंसारनिधनाय नमः स्वाहा । ३८१ । ॐ ह्रीं पाठक-
कल्याणाय नमः स्वाहा । ३८२ । ॐ ह्रीं पाठककल्याणगुणाय नमः स्वाहा । ३८३ । ॐ ह्रीं पाठक-
कल्याणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३८४ । ॐ ह्रीं पाठककल्याणद्रव्याय नमः स्वाहा । ३८५ । ॐ ह्रीं
पाठकतत्त्वगुणाय नम. स्वाहा । ३८६ । ॐ ह्रीं पाठकतत्त्वचिद्रूपाय नम स्वाहा। ३८७। ॐ ह्रीं पाठकर्द्धि-







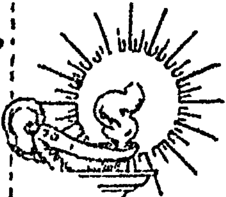
पूर्णाय नमः स्वाहा । ३८८ । ॐ ह्रीं पाठकगुणचैतन्याय नमः स्वाहा । ३८९ । ॐ ह्रीं पाठकज्योतिः-प्रकाशाय नमः स्वाहा । ३९० । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानचैतन्याय नमः स्वाहा । ३९१ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शन-चैतन्याय नमः स्वाहा । ३९२ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यचैतन्याय नमः स्वाहा । ३९३ । ॐ ह्रीं पाठकजीवविदे नमः स्वाहा । ३९४ । ॐ ह्रीं पाठकसकलशरणाय नमः स्वाहा । ३९५ । ॐ ह्रीं पाठकत्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । ३९६ । ॐ ह्रीं पाठकत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । ३९७ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलशरणाय नमः स्वाहा । ३९८ । ॐ ह्रीं पाठकलोकशरणाय नमः स्वाहा । ३९९ । ॐ ह्रीं पाठकाश्रवविनाशाय नमः स्वाहा ४०० । ॐ ह्रीं पाठकाश्रवोच्छेदकाय नमः स्वाहा । ४०१ । ॐ ह्रीं पाठकबन्धकृतातकाय नमः स्वाहा । ४०२ । ॐ ह्रीं पाठकबंधमुक्ताय नमः स्वाहा । ४०३ । ॐ ह्रीं पाठकसंवराय नमः स्वाहा । ४०४ । ॐ ह्रीं पाठकसंवररूपाय नमः स्वाहा । ४०५ । ॐ ह्रीं पाठकसंवरकारणाय नमः स्वाहा । ४०६ । ॐ ह्रीं पाठककन्दर्पच्छेदकाय नमः स्वाहा । ४०७ । ॐ ह्रीं पाठककर्मविस्फोटकाय नमः स्वाहा । ४०८ । ॐ ह्रीं पाठकनिर्जरास्वरूपाय नमः स्वाहा । ४०९ । ॐ ह्रीं पाठकमोक्षाय नमः स्वाहा । ४१० । ॐ ह्रीं पाठक-मोक्षस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४११ । ॐ ह्रीं पाठकात्मने नमः स्वाहा । ४१२ ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा । ४१३ । ॐ ह्रीं साधुगुणेभ्यो नमः स्वाहा । ४१४ । ॐ ह्रीं साधुगुणस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा । ४१५ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्याय नमः स्वाहा । ४१६ । ॐ ह्रीं साधु-द्रव्यगुणाय नमः स्वाहा । ४१७ । ॐ ह्रीं साधुमोक्षाय नमः स्वाहा । ४१८ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनाय नमः स्वाहा । ४१९ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानाय नमः स्वाहा । ४२० । ॐ ह्रीं साधुवीर्याय नमः स्वाहा



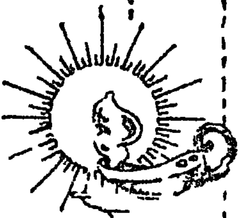




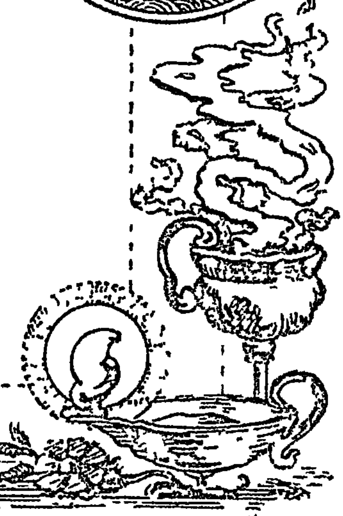






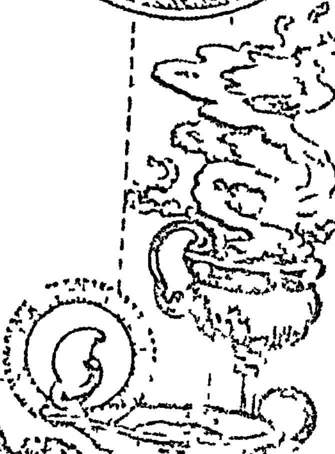






। ४२१ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानद्रव्याय नमः स्वाहा । ४२२ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४२३ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्यपर्यायाय नमः स्वाहा । ४२४ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनपर्यायाय नमः स्वाहा । ४२५ । ॐ ह्रीं साधुमगलाय नमः स्वाहा । ४२६ । ॐ ह्रीं साधुमगलस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४२७ । ॐ ह्रीं साधुमंगलशरणाय नमः स्वाहा । ४२८ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनमगलाय नमः स्वाहा । ४२९ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानमंगलाय नमः स्वाहा । ४३० । ॐ ह्रीं साधुवीर्यमंगलाय नमः स्वाहा । ४३१ । ॐ ह्रीं साधुवीर्य-द्रव्याय नमः स्वाहा । ४३२ । ॐ ह्रीं साधुवीर्यद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४३३ । ॐ ह्रीं साधुलोको-त्तमाय नमः स्वाहा । ४३४ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा । ४३५ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तम-गुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४३६ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमद्रव्याय नमः स्वाहा । ४३७ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा । ४३८ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४३९ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा । ४४० । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्माय नमः स्वाहा । ४४१ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४४२ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा । ४४३ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमवीर्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४४४ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमातिशयसम्पन्नाय नमः स्वाहा । ४४५ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानाय नमः स्वाहा । ४४६ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञान स्वरूपाय नमः स्वाहा । ४४७ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमजिनाय नमः स्वाहा । ४४८ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तम जिनगुणसम्पन्नाय नमः स्वाहा । ४४९ । ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमपुरुषाय नमः स्वाहा । ४५० । ॐ ह्रीं साधुशरणाय नमः स्वाहा । ४५१ । ॐ ह्रीं साधुअर्हत्स्वरूपाय नमः स्वाहा । ४५२ । ॐ ह्रीं साधुगुण-





शरणाय नमः स्वाहा । ४५३ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ४५४ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनस्वरूप-शरणाय नमः स्वाहा । ४५५ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । ४५६ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानस्वरूप-शरणाय नमः स्वाहा । ४५७ । ॐ ह्रीं साधुआत्मशरणाय नमः स्वाहा । ४५८ । ॐ ह्रीं साधुपरमात्म-शरणाय नमः स्वाहा । ४५९ । ॐ ह्रीं साधुजिनात्मशरणाय नमः स्वाहा । ४६० । ॐ ह्रीं साधुवीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ४६१ । ॐ ह्रीं साधुवीर्यात्मशरणाय नमः स्वाहा । ४६२ । ॐ ह्रीं साधुलक्ष्म्यलंकृताय नमः स्वाहा । ४६३ । ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीपरिणताय नमः स्वाहा । ४६४ । ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीरूपाय नमः स्वाहा । ४६५ । ॐ ह्रीं साधुध्रुवाय नमः स्वाहा । ४६६ । ॐ ह्रीं साधुगुणध्रुवाय नमः स्वाहा । ४६७ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्यध्रुवाय नमः स्वाहा । ४६८ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्यगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । ४६९ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्योत्पादाय नमः स्वाहा । ४७० । ॐ ह्रीं साधुजीवाय नमः स्वाहा । ४७१ । ॐ ह्रीं साधुजीवगुणाय नमः स्वाहा । ४७२ । ॐ ह्रीं साधुचैतन्याय नमः स्वाहा । ४७३ । ॐ ह्रीं साधु-चैतन्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४७४ । ॐ ह्रीं साधुचैतन्यगुणाय नमः स्वाहा । ४७५ ॐ ह्रीं साधुपरमात्म-प्रकाशाय नमः स्वाहा । ४७६ । ॐ ह्रीं साधुज्योतीरूपाय नमः स्वाहा । ४७७ । ॐ ह्रीं साधुज्योतिःप्रदी-पाय नमः स्वाहा । ४७८ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानदीपाय नमः स्वाहा । ४७९ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनप्रदीपाय नमः स्वाहा । ४८० । ॐ ह्रीं साधुसर्वशरणाय नमः स्वाहा । ४८१ । ॐ ह्रीं साधुलोकशरणाय नमः स्वाहा । ४८२ । ॐ ह्रीं साधुत्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । ४८३ । ॐ ह्रीं साधुससारच्छेदकाय नमः स्वाहा ।४८४। ॐ ह्रीं साधुत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । ४८५ । ॐ ह्रीं साधुएकत्वगुणाय नमः स्वाहा । ४८६ । ॐ ह्रीं



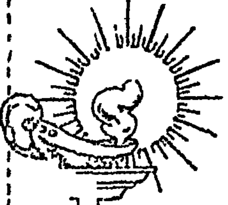




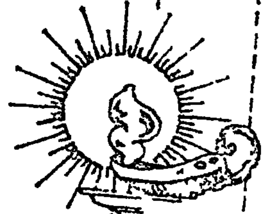


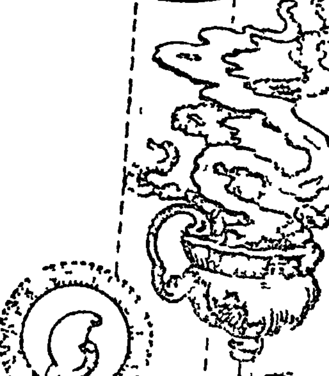



साधुएकत्वद्रव्याय नमः स्वाहा । ४८७ । ॐ ह्रीं साधुएकत्वस्वभावाय नमः स्वाहा । ४८८ । ॐ ह्रीं साधुस्याद्वादाय नमः स्वाहा ।। ४८९ । ॐ ह्रीं साधुशब्दब्रह्मणे नमः स्वाहा । ४९० । ॐ ह्रीं साधुपरब्रह्मणे नमः स्वाहा । ४९१ । ॐ ह्रीं साधुपरमागमाय नमः स्वाहा । ४९२ । ॐ ह्रीं साधुजिनागमाय नमः स्वाहा । ४९३ । ॐ ह्रीं साधुअनेकार्थाय नमः स्वाहा । ४९४ । ॐ ह्रीं साधुपरमशुचित्वगुणाय नमः स्वाहा ।४९५। ॐ ह्रीं साधुपरमपवित्राय नमः स्वाहा । ४९६ । ॐ ह्रीं साधु बंधविविक्ताय नमः स्वाहा । ४९७ । ॐ ह्रीं साधुबंधप्रतिबंधकाय नमः स्वाहा । ४९८ । ॐ ह्रीं साधुसंवरकाय नमः स्वाहा । ४९९ । ॐ ह्रीं साधुनिर्जरद्रव्याय नमः स्वाहा । ५०० । ॐ ह्रीं साधुनिर्जरगुणाय नमः स्वाहा । ५०१ । ॐ ह्रीं साधुबोधगुणधर्माय नमः स्वाहा । ५०२ । ॐ ह्रीं साधुसुगतभावाय नमः स्वाहा । ५०३ । ॐ ह्रीं साधुपरमगतभावाय नमः स्वाहा । ५०४ । ॐ ह्रीं साधुविभावरहिताय नमः स्वाहा । ५०५ । ॐ ह्रीं साधुस्वभावसहिताय नमः स्वाहा । ५०६ । ॐ ह्रीं साधुसिद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५०७ । ॐ ह्रीं साधुसूरिप्रकाशाय नमः स्वाहा ।५०८। ॐ ह्रीं साधूपाध्यायपरमेष्ठिने नमः स्वाहा । ५०९ ॐ ह्रीं साधुआत्मरतये नमः स्वाहा ।५१०। ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा ।५११। ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुरत्नत्रयात्मकानन्तगुणेभ्यो नमः स्वाहा । ५१२ ।





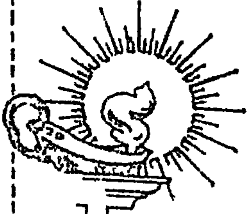



उदयति परमात्मज्योतिरुद्योति यस्माद,—
विशदविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
शुचितरघनसारोल्लासिभिश्चन्दनौघैः,—
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ २ ॥ चन्दनम् ।

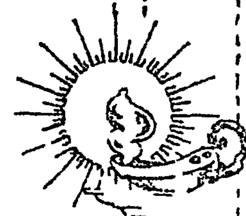
अहमहमिकयोच्चैः सम्यगाराधनायाम्,
सुरनरखचरेन्द्राः यस्य भक्त्या यतन्ते ।
ललितसदकपुंजैः केवलज्ञानहेतो,—
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ३ ॥ अक्षतान् ।

भवभयगुरुपारावारपारं लभन्ते,
विहितशिवसमृद्धेः सेवया यस्य संतः ।
कमलबकुलकुंदोदारमंदारपूरैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ।

जननवनहुताशं छिन्नसन्मोहपाशम्,
शमितमदनमानं विश्वविद्यानिदानम् ।





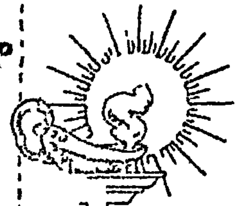



चरुभिरुरुगुणौघं प्रीणितप्राणिसंघम्,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ।

चिदचिदखिलजीवाजीवभेदादिवेद्यम्,
सकलभुवननेत्रम् ज्ञानमाविष्करोति ।
स्मरणमपि यदीयं दीप्रदीपप्रभौघैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ६ ॥ धूपम् ।

भवति न भवभाजां ध्यानतो यस्य पीडा,
ग्रहदितिसुतरक्षःप्रेतभूतप्रसूता ।
अगुरुतुहिनभास्वच्चन्दनोद्भूतधूपैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ७ ॥ दीपम् ।

फलमतुलमनन्तं मुक्तिसौख्यप्रतीपम्,
फलति विपुलसेवा सम्यगाविष्कृतोच्चैः ।
असदृशमहिमश्रीमन्दिरं मातुलिंगैः,
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ८ ॥ फलम् ।





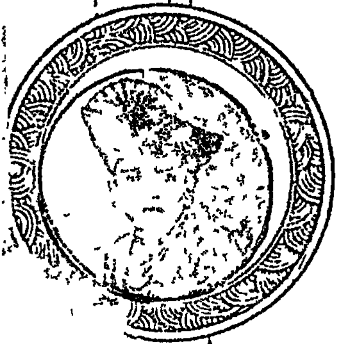

अभिनवजलगंधामंदमन्दारमाला,—
ललितममलमर्घं संददाम्यादरेण ।
गणधरवलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी,
सुरहरिमहिताय प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः ॥ ९ ॥ अर्घम् ।

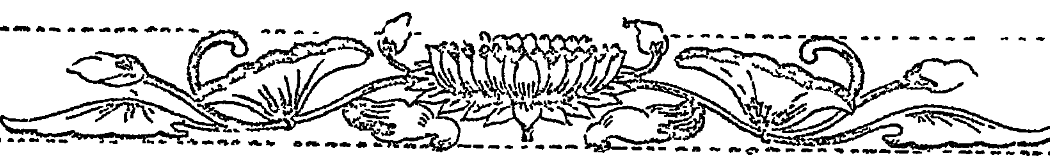
ॐ ह्रीं असिआउसा नमः, एतन्मन्त्रेणाष्टोत्तरं शतम् जाप्यं देयम्

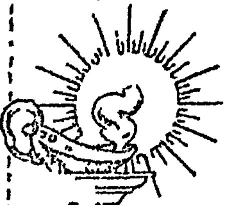
अथ जयमाला ।

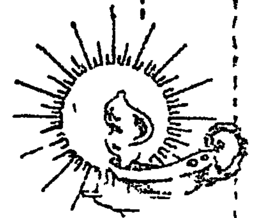
देवाधीशैर्महीशैः फणपतिभिरिह प्रत्यहं पूज्यपादा,—
नर्हत्सिद्धानदेहांस्त्रिविधमुनिवरान् सूर्युपाध्यायसाधून् ।
दोषांतैस्तैर्गरिष्ठान् निजसुगुणवरैर्भूषणैर्भूषितांश्च,
नत्वा दृग्बोधवृत्तादिभिरपि सहितान् संस्तुवे तद्गुणाप्त्यै ॥ १ ॥

सदनंतचतुष्टयगुणविलास, हतघातिचतुष्टयकर्मपाश ।
सकलातिशयादिसुगुणसमृद्ध, त्वं हेऽर्हन् जिन जय जय समृद्ध ॥ २ ॥

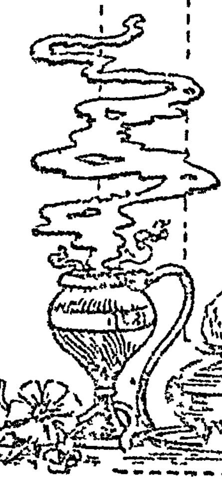





जय कृतकर्माष्टकवैरिदूर, जय विश्वालोकनपरमसूर ।
जय सर्वोत्तम वसुगुणसमृद्ध, त्वं सिद्धदेव जय जय समृद्ध ॥ ३ ॥
जय पंचाचारसुचरणधीर जय शिष्यानुग्रहकरणवीर ।
स्थितिकल्पदशाऽऽदिशगुणसमृद्ध, त्वं सूरे जिन जय२समृद्ध ॥ ४ ॥
एकादशांगकृतकंठहार, जय लब्धचतुर्दशपूर्वपार ।
सर्व श्रुतजलनिधिगुणसमृद्ध, त्वं पाठक जय२सुतपबृद्ध ॥ ५ ॥
आरंभपरिग्रहनिखिलमुक्त, सद्दर्शनबोधचरित्ररक्त ।
जय मूलोत्तरगुणनिधिसमृद्ध, साधो जय२सततं प्रबुद्ध ॥ ६ ॥
सम्यग्दर्शनसंविच्चरित्र—, तपसाञ्चित रत्नत्रयपवित्र ।
व्यवहारपरमगुणभेदपूर्ण, त्वं जय मुनिवर कृतकर्मचूर्ण ॥ ७ ॥

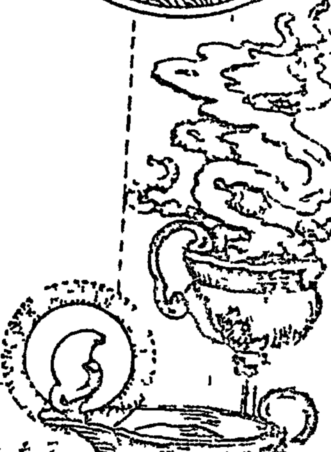
पंचैतान् परमेष्ठिनः सुतपसा रत्नत्रयेणान्वितान्,
संसाराम्बुधितारकान् भविजना ध्यायन्ति ये नित्यशः ।
ते देवेन्द्रपदं नरेन्द्रपदवीं संप्राप्य, भद्रैर्गुणैः—,
सार्धं, जन्मजरादिदुःखरहितं पश्चाल्लभंते शिवम् ॥ ८ ॥

" पूर्णार्घम् " ।







सप्तम जयमालाका अर्थ

देवेन्द्रो, नरेद्रो और भवनवासियोके अधिपतियों-असुरेद्रोंके द्वारा जिनके चरण प्रतिदिन पूजे जाते है, ऐसे अर्हन् परमेष्ठी तथा अशरीर सिद्धपरमात्मा और आचार्य उपाध्याय साधु इस तरह तीन प्रकारके मुनिवरोको जो कि दोपोंके विनाशसे महान्, अपने २ समीचीन गुणरूपी भूषणोसे भूपित, और दर्शनज्ञान चारित्र आदिसे युक्त हैं, नमस्कार करके मै उनके गुणोकी प्राप्तिके लिये उनका स्तवन करता हूं ॥ १ ॥

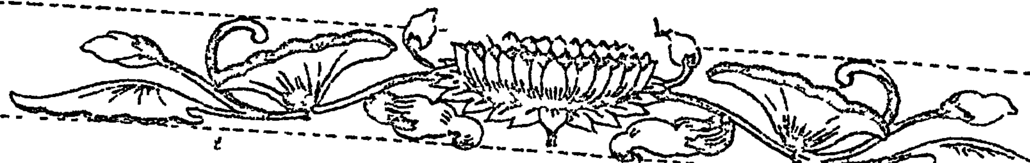
अनन्त चतुष्टयरूप गुण जिनमे विलास कर रहे है, चार घातिया कर्मोंका जाल जिन्होने तोड़ दिया है, समस्त अतिशय आदि सद्गुणोसे समृद्ध है ऐसे हे अर्हंन् जिन भगवन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ २ ॥

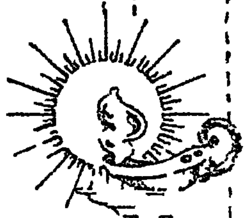
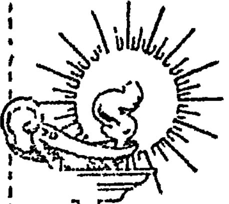
आठ कर्मरूपी शत्रुओको जिन्होने दूर कर दिया है, विश्व मात्रको देखनेमे जो उत्कृष्ट सूर्यके समान है, जो सबसे उत्तम आठ गुणोसे पूर्ण है ऐसे हे सिद्धदेव आप जयवन्त रहे ॥ ३ ॥

पंचाचारका पालन करनेमे धोर, शिष्योका अनुग्रह करनेमें वीर, और स्थितिकल्प नामक दश गुणोका उपदेश करनेवाले गुणोसे समृद्ध हे आचार्य परमेष्ठिन् आप सदा जयवन्त रहे ॥ ४ ॥

ग्यारह अगोको जिन्होने अपने कण्ठका हार बना लिया है, और जिन्होने चतुर्दश पूर्वोंका पार प्राप्त कर लिया है, तथा समस्त श्रुतसमुद्ररूपीगुणसे समृद्ध है ऐसे हे उपाध्याय परमेष्ठिन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ ५ ॥





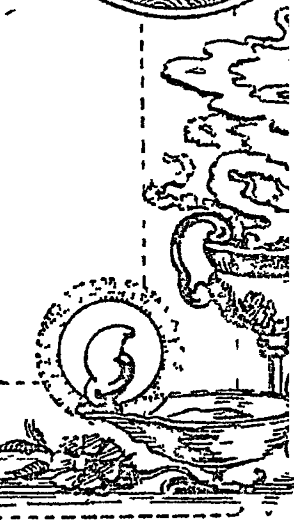





आरम्भ और परिग्रहसे सर्वथा रहित, सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रमे अनुरक्त, मूलगुण और उत्तरगुण रूप निधिसे समृद्ध निरंतर प्रवुद्ध रहनेवाले हे साधु परमेष्ठिन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ ६ ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र और तपरूप आराधनाओसे युक्त और रत्नत्रयसे पवित्र, व्यवहाररूप परम गुणोके भेदोसे पूर्ण कर्मोंको चूर्ण करनेवाले हे मुनिवर आप सदा जयवन्त रहे ॥ ७ ॥

समीचीन तप और रत्नत्रयसे युक्त, संसारसमुद्रसे तारनेवाले इन पंचपरमेष्ठियोंका जो प्राणी नित्य ध्यान करते है वे देवेन्द्र और नरेन्द्रपदको प्राप्त कर भद्र—समीचीन गुणोके साथ जन्मजरादिके दुःखोसे रहित शिवपदको अंतमे प्राप्त किया करते है ॥ ८ ॥




अथ चतुर्विंशत्यधिकसहस्रकमलोपर्यष्टमी पूजा ।

ऊर्ध्वाधोरयुतं साविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ।
अंतःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टिम्,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ १ ॥

(पुष्पं दत्वा स्थापनां कुर्यात्)

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥
सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्
" " " " " अत्र तिष्ठ २ ठः ठः
" " " " " अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्






अथाष्टकम् ।

सकलजनकलंकं क्षालयद्भिः सुनीरै,—
त्रिदिवसरितिजातैर्जैनवाक्योपमानैः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनंतं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनवारं पूजये सिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

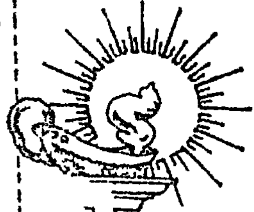
ॐ ह्रीं सिद्धाधिपतिभ्यो नमः स्वाहा, जलम् ।

अथ प्रत्येकमंत्राणि ।

ॐ ह्रीं जिनाय नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं जिनेन्द्राय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं जिनाधिपाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं जिनराजे नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं जिनप्रष्ठाय नम. स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं जिनोत्तमाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं जिनाधीशाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं जिनस्वामिने नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं जिननाथाय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं जिनपतये नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं जिनराजाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं जिनाधिराजे नमः स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं जिनप्रभवे नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं जिनविभवे नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं जिनभर्त्रे नमः स्वाहा । १६ ।

ॐ ह्रीं जिनाधिभुवे नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं जिननेत्रे नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं जिनेशानाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं जिनेनाय[1] नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं जिननायकाय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं जिनेशे[2] नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं जिनपरिवृढाय[3] नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं जिनदेवाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं जिनेशित्रे नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं जिनाधिराजाय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं जिनपाय[4] नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं जिनेशिने नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं जिनशासित्रे नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं जिनाधिनाथाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं जिनाधिपतये नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं जिनपालकाय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं जिनचन्द्राय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं जिनादित्याय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं जिनार्काय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं जिनकुंजराय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं जिनेन्दवे नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं जिनधौरेयाय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं जिनधुर्याय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं जिनोत्तराय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं जिनवर्याय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं जिनवराय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं जिनसिंहाय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं जिनोद्वहाय[5] नमः स्वाहा । ४४ ॐ ह्रीं जिनर्षभाय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं जिनवृषाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं जिनरत्नाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं जिनोरसे[6] नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं जिनेशाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं जिनशार्दूलाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं जिनाग्र्याय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं जिनपुंगवाय नमः स्वाहा

१—इनः स्वामी, २—ईष्टे इति ईट् तस्मै । ३—परिवृढ.—प्रभुः । ४—जिनान् पातीति जिनपः । ५—जिना' उद्वहाः—पुत्रा यस्य सः अथवा जिनान् उद्वहति—ऊर्ध्वं नयतीति जिनोद्वहः तस्मै । ६—उर.—प्रधानः ।

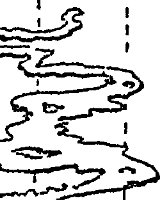





। ५२ । ॐ ह्री जिनहंसाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्री जिनोत्तंसाय नमः स्वाहा । ५४ ॐ ह्रीं जिननागाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं जिनाग्रण्यै नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं जिनप्रवेकाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं जिनग्रामण्यै नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्री जिनसत्तमाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं जिनप्रवर्हाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं परमजिनाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं जिनपुरोगमाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं जिनश्रेष्ठाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं जिनज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं जिनमुख्याय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्री जिनाग्रिमाय नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं श्रीजिनाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्री उत्तमजिनाय नम स्वाहा । ६८ । ॐ ह्री जिनवृन्दारकाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं अरिजिते नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं विरजसे नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं निस्तरस्काय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं घातिकर्मान्तकाय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं कर्ममर्माविधे[5] नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं अनघाय नम स्वाहा । ७९ ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं अक्षुधे नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं अद्वेषाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्री निर्मदाय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्री अगदाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्री वितृष्णाय नमः स्वाहा । ८६ ।

१—हसो भास्करः । २—उत्तसो-मुकुटः । ३—प्रवेक-प्रधानः । ४—परया-उत्कृष्टया, मया-लक्ष्म्या, उपलक्षितः=परमः सचासौ जिनश्च तस्मै । ५—कर्मणा मर्म-जीवस्थानम् आ समन्तात् विध्यति इति स, तस्मै ।





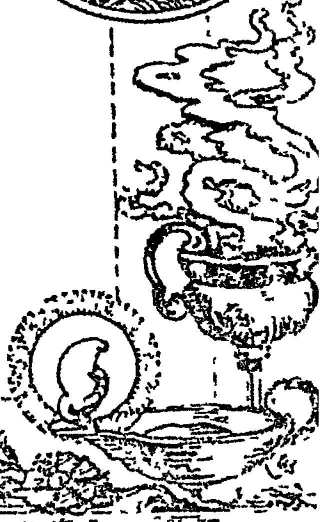




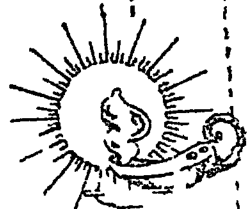

ॐ ह्रीं निर्ममायै नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं असंगाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं निर्भयायै नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं वीतविस्मयाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं अस्वप्नाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं निश्रमायै नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अजन्मने नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं निःस्वेदाय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं निर्जराय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं अमराय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं अरत्यतीताय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं निश्चिंताय नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं निर्विषादायै नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं त्रिषष्ठि-जिते नमः स्वाहा । १०० ।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं सर्व-दर्शिने नमः स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं सर्वावलोकनाय नमः स्वाहा । १०४ । ॐ ह्रीं अनन्तविक्रमाय नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं अनन्तसुखात्मकाय नमः स्वाहा ।

१—निर्गत मम यस्य स, अथवा निः—निश्चितं मा—प्रमाणं यस्य स एवंभूतः सन् यः पदार्थान् माति—मिनोतीति निर्ममः । २—निर्गत भयं यस्य, वा भव्याना यस्मात् स, यद्वा निश्चिता भा दीप्तिर्यस्य तन्निर्भ—केवलाख्य ज्योतिः तत् याति—प्राप्नोति इति निर्भयः । ३—वीतो विनष्टोऽद्भुतरसो मदो वा यस्य, अथवा वीतो वेर्गरुडस्य स्मयो—गर्वोयस्मात्, गरुडादप्यधिकतर विषहरणसामर्थ्यवत्वाद्भगवतः । ४—अविद्यमानः स्वप्नः निद्रा प्रमादो वा यस्य, अथवा असून् प्राणिनोऽपो जीवन नयतीति अस्वप्नः । ५—निर्गतः श्रमात्—खेदात्, निश्चितः श्रमस्तपो यस्येति वा । ६—स्वेदरहितः, निःस्वाना—दरिद्राणामिम् काम ददातीति वा । ७—पश्चात्तापरहितः, निर्विष पापरहितं सुखमानन्दामृतमत्तीति वा निर्विषादः । ८—त्रिषष्ठिकर्मणा जेता । ९—अनन्तपराक्रमः, अनते अलोके विक्रमो ज्ञानद्वारा गमनं यस्य, अनन्ताः शेषनागा धरणीन्द्रादयो विशेषेण क्रमयोर्नम्रीभूता यस्येति वा १०—अनंतसुखमात्मा यस्य, अनन्तसुखमात्मानं कायति—कथयति ।







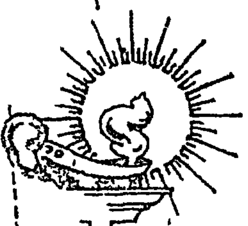



। १०७ । ॐ ह्रीं अनन्तसौख्याय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्रीं विश्वज्ञाय नमः स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं
विश्वदृश्वने नमः स्वाहा । ११० । ॐ ह्रीं अखिलार्थदृशे नमः स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं न्यक्षदृशे नमः स्वाहा
। ११२ । ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः स्वाहा । ११३ । ॐ ह्रीं विश्वचक्षुषे नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं
अशेषविदे नमः स्वाहा । ११५ । ॐ ह्रीं आनन्दाय नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्रीं परमानन्दाय नमः
स्वाहा ।११७। ॐ ह्रीं सदानन्दाय नमः स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं सदोदयाय² नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं
नित्यानन्दाय नमः स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं महानन्दाय³ नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं परानन्दाय नमः
स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं परोदयाय नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं परमोजसे नमः स्वाहा । १२४ । ॐ
ह्रीं परंतेजसे नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं परधाम्ने नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं परंमहसे नमः स्वाहा
। १२७ । ॐ ह्रीं प्रत्यग्ज्योतिषे नमः स्वाहा । १२८ । ॐ ह्रीं परज्योतिषे नमः स्वाहा । १२९ । ॐ ह्रीं
परंब्रह्मणे नमः स्वाहा । १३० । ॐ ह्रीं परंरहसे नमः स्वाहा । १३१ । ॐ ह्रीं प्रत्यगात्मने नमः स्वाहा
। १३२ । ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः स्वाहा । १३३ । ॐ ह्रीं महात्मने नमः स्वाहा ।१३४। ॐ ह्रीं आत्ममहो-
दयाय नमः स्वाहा । १३५ । ॐ ह्रीं परमात्मने नमः स्वाहा । १३६ । ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः स्वाहा ।१३७।
ॐ ह्रीं परात्मने नमः स्वाहा । १३८ । ॐ ह्रीं आत्मनिकेतनाय नमः स्वाहा । १३९ । ॐ ह्रीं परमेष्ठिने
नमः स्वाहा । १४० । ॐ ह्रीं महिष्ठात्मने नमः स्वाहा । १४१ । ॐ ह्रीं श्रेष्ठात्मने नमः स्वाहा । १४२ ।

१—अतीन्द्रियदृष्टा । २—सदा उदयो यस्य, सदाउत्–उत्कृष्टम् अयः शुभावहो विधिर्यस्येति वा ।
३—महान् आनन्दः सौख्यं यस्य, महेन–पूजया आनन्दः यस्मादिति वा ।





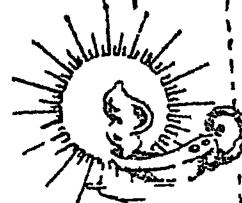



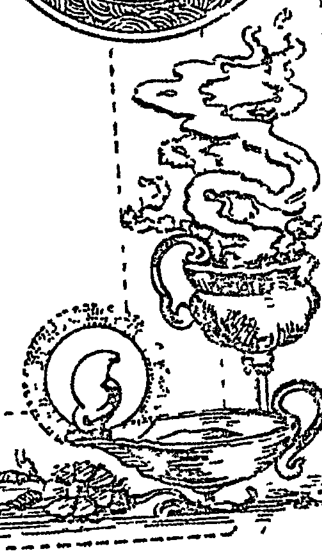
ॐ ह्रीं स्वात्मनिष्ठिताय नमः स्वाहा । १४३ । ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः स्वाहा । १४४ । ॐ ह्रीं महानिष्ठाय नमः स्वाहा । १४५ । ॐ ह्रीं निरूढात्मने नमः स्वाहा । १४६ । ॐ ह्रीं दृढात्मदृशे नमः स्वाहा । १४७ । ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः । १४८ । ॐ ह्रीं महाविद्याय नमः स्वाहा । १४९ । ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः स्वाहा । १५० । ॐ ह्रीं पञ्चब्रह्ममयाय नमः स्वाहा । १५१ । ॐ ह्रीं सार्वाय नमः स्वाहा । १५२ । ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वराय नमः स्वाहा । १५३ । ॐ ह्रीं सुभुवे नमः स्वाहा । १५४ । ॐ ह्रीं अनन्तधिये नमः स्वाहा । १५५ । ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः स्वाहा । १५६ । ॐ ह्रीं अनन्तशक्तये नमः स्वाहा । १५७ । ॐ ह्रीं अनन्तदृशे नमः स्वाहा । १५८ । ॐ ह्रीं अनन्तानन्तधीशक्तये नमः स्वाहा । १५९ । ॐ ह्रीं अनन्तविदे नमः स्वाहा । १६० । ॐ ह्रीं अनन्तमुदे नमः स्वाहा । १६१ । ॐ ह्रीं सदाप्रकाशाय नमः स्वाहा । १६२ । ॐ ह्रीं सर्वार्थसाक्षात्कारिणे नमः स्वाहा । १६३ । ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः स्वाहा । १६४ । ॐ ह्रीं कर्मसाक्षिणे नमः स्वाहा । १६५ । ॐ ह्रीं जगच्चक्षुषे नमः स्वाहा । १६६ । ॐ ह्रीं अलक्ष्यात्मने नमः स्वाहा । १६७ । ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः स्वाहा । १६८ । ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः स्वाहा । १६९ । ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः स्वाहा । १७० । ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः स्वाहा । १७१ । ॐ ह्रीं विदाम्वराय नमः स्वाहा । १७२ । ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः स्वाहा । १७३ । ॐ ह्रीं सहजज्योतिषे नमः स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय नमः स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं केवलिने नमः स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं केवलालोकाय नमः स्वाहा ।

१—शोभना–समवसरणरूपा, मोक्षरूपा, ईषत्प्राग्भारनाम्नी भूः स्थानं यस्य ।





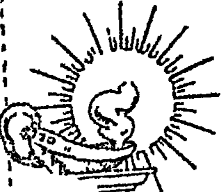




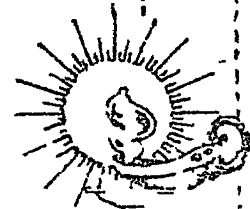
पू० ८

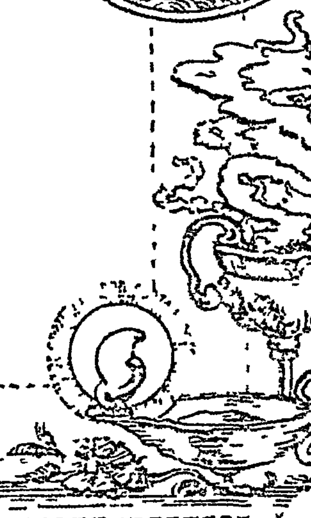
१७८ । ॐ ह्रीं लोकालोकविलोकनाय नम. स्वाहा । १७९ । ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः स्वाहा । १८० ।
ॐ ह्रीं केवलार्य नमः स्वाहा । १८१ । ॐ ह्रीं अव्यक्ताय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ ह्रीं शरण्याय नमः
स्वाहा । १८३ । ॐ ह्रीं अचिन्त्यवैभवाय नमः स्वाहा । १८४ । ॐ ह्रीं विश्वभृते नम· स्वाहा । १८५ ।
ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नम स्वाहा । १८६ । ॐ ह्रीं विश्वात्मने नम· स्वाहा । १८७ । ॐ ह्री विश्वतो-
मुखाय नमः स्वाहा । १८८ । ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः स्वाहा ।
१९० । ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नम· स्वाहा । १९? । ॐ ह्रीं अमितप्रभाय नमः स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं
महौदार्याय नम. स्वाहा । १९३ । ॐ ह्रीं महाबोधये नमः स्वाहा । १९४ ॐ ह्री महालाभाय नमः स्वाहा
। १९५ । ॐ ह्रीं महोदयाय नम. स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं महोपभोगाय नम स्वाहा । १९७ । ॐ ह्रीं
सुगतये नमः स्वाहा । १९८ । ॐ ह्रीं महाभोगाय नमः स्वाहा । १९९ । ॐ ह्रीं महाबलाय नमः स्वाहा । २०० ।
ॐ ह्रीं यज्ञार्हाय नम. स्वाहा । २०१ । ॐ ह्रीं भगवते नम स्वाहा । २०२ । ॐ ह्रीं अर्हते
नमः स्वाहा । २०३ । ॐ ह्रीं महार्हाय नमः स्वाहा । २०४ । ॐ ह्रीं मघवार्चिताय नमः स्वाहा । २०५ ।
ॐ ह्रीं भूतार्थयज्ञपुरुषाय नमः स्वाहा । २०६ । ॐ ह्रीं भूतार्थक्रतुपुरुषाय नमः स्वाहा । २०७ । ॐ

१—असहायः–सर्वथा स्वतन्त्रः, के–आत्मनि बल यस्येतिवा । २—विश्वतः–चतुर्दिक्षु मुख यस्य, अथवा विश्वतोमुख जलमुच्यते तद्धर्म साधर्म्यात् भगवानपि विश्वतोमुखः अमितपातकप्रक्षालनात् विषयसुखदाहनिवारकत्वात् प्रसत्तिरूपत्वाच्च, विश्व तस्यनि स्वर्मोक्षयोर्नयति मुखं यस्य, विश्वतः सर्वांगेपु मुख यस्येतिवा, सहस्रशीर्षः सहस्रपा-दित्यभिधानात् ।









स्वाहा । २४० । ॐ ह्रीं सर्वशक्रनमस्कृताय नमः स्वाहा । २४१ । ॐ ह्रीं हर्षाकुलामरखगाय नमः स्वाहा । २४२ । ॐ ह्रीं चारणर्षिमतोत्सवाय नमः स्वाहा । २४३ । ॐ ह्रीं व्यवार्य नमः स्वाहा । २४४ । ॐ ह्रीं विष्णुपदारक्षार्ये नमः स्वाहा । २४५ । ॐ ह्रीं स्नानपीठायिताद्रिराजे नमः स्वाहा । २४६ । ॐ ह्रीं तीर्थेशंमन्यदुग्धाब्धये नमः स्वाहा । २४७ । ॐ ह्रीं स्नानाम्बुस्नातवासवाय नमः स्वाहा । २४८ । ॐ ह्रीं गंधाम्बुपूतत्रैलोक्याय नमः स्वाहा । २४९ । ॐ । ह्रीं वज्रसूचीशुचिश्रवसे नमः स्वाहा । २५० । ॐ ह्रीं कृतार्थितशचीहस्ताय नम स्वाहा । २५१ । ॐ ह्रीं शक्रोद्घुष्टेष्टनामकाय नमः स्वाहा । २५२ । ॐ ह्रीं शक्रारब्धानन्दनृत्याय नमः स्वाहा । २५३ । ॐ ह्रीं शचीविस्मापिताम्बिकाय नमः स्वाहा । २५४ । ॐ ह्रीं इन्द्रनृत्यन्तपितृकाय नम. स्वाहा । २५५ । ॐ ह्रीं रैदैपूर्णमनोरथाय नमः स्वाहा । २५६ । ॐ ह्रीं आज्ञार्थीन्द्रकृतासेवाय

१—श्रुतसागरटीकाया "व्योम" शब्द उपलभ्यते, तैः स, विशेषेण अवति–रक्षति प्राणिगणानिति व्योम इति निरुक्तश्च । किन्तु विपूर्वकादव् धातोर्व्यवशब्द एव भवितुमर्हति न व्योम इति । अतएवेह व्यवशब्द एव व्यवहृत. । "व्योम" इति मूलपाठे तु एव निरुक्ति. संभवति—"व्यो" इति वीजार्थकोऽव्ययः, त–ससारमोक्षयोर्मूल मन्यते जानातीति व्योम इति । २ अस्य, "विष्णुपदा रक्षा" इत्यस्मिन्शब्दस्य च श्रुतसागरैराविष्ट लिंगत्व सूचितम् । वेवेष्टि–व्याप्नोति लोकमिति विष्णु'–प्राणिवर्ग. तेषा पदानि–गुणस्थानानि मार्गणास्थानानि वा तेषामासमन्ताद् रक्षा, करुणारूपत्वाद्भगवतः । ३—शक्रेणोद्घुष्टमुच्चरितम् इष्ट–सर्वमानित नाम यस्य । ४—इन्द्रस्य नृतिर्नर्तनम् अन्ते अग्रे पितुर्यस्य । यस्य भगवतः पितुरग्रे इन्द्र. नृत्यति तस्मै इत्यर्थः । भगवतोऽभिषेकात्प्राक् पश्चाच्चेति वारद्वयं पितुरग्रे इन्द्रः नृत्य करोतीति सूचनार्थं नामद्वयेनेह स्मरणम् । ५—रैदेन—कुबेरनामकेन यक्षेन्द्रेण पूर्णाः–पूर्तिनीता मनोरथाः (भोगोपभोगसम्बन्धिनः) यस्य । ६—आज्ञाया अर्थी–अभिलाषकः सचासौ इन्द्रश्च तेन कृता–विहिता आ–समन्तात् सेवा–पर्युपासन यस्य स ।





नमः स्वाहा । २५७ । ॐ ह्रीं देवाधिदेवाय नमः स्वाहा । २५८ । ॐ ह्रीं [illegible] नमः स्वाहा । २५९ । ॐ ह्रीं [illegible] नमः स्वाहा । २६० । ॐ ह्रीं [illegible] नमः स्वाहा । २६१ । ॐ ह्रीं श्रीयुजे नमः स्वाहा । २६२ । ॐ ह्रीं [illegible] नमः स्वाहा । २६३ । ॐ ह्रीं त्रयीनाथाय नमः स्वाहा । २६४ । ॐ ह्रीं त्रयीदृशे नमः स्वाहा । २६५ । ॐ ह्रीं वेदाय नमः स्वाहा । २६६ । ॐ ह्रीं याज्याय नमः स्वाहा । २६७ । ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः स्वाहा । २६८ । ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः स्वाहा । २६९ । ॐ ह्रीं यज्ञाङ्गाय नमः स्वाहा । २७० । ॐ ह्रीं अमृताय नमः स्वाहा । २७१ । ॐ ह्रीं यज्ञाय नमः स्वाहा । २७२ । ॐ ह्रीं हविषे नमः स्वाहा । २७३ । ॐ ह्रीं स्तुत्याय नमः स्वाहा । २७४ । ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय नमः स्वाहा । २७५ । ॐ ह्रीं भावाय नमः स्वाहा । २७६ । ॐ ह्रीं महामहपतये नमः स्वाहा । २७७ । ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः स्वाहा । २७८ । ॐ ह्रीं [illegible] नमः स्वाहा । २७९ । ॐ ह्रीं दयायागाय नमः स्वाहा । २८० । ॐ ह्रीं [illegible] नमः स्वाहा । २८१ । ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः स्वाहा । २८२ । ॐ ह्रीं जगदर्चिताय नमः स्वाहा । २८३ । ॐ ह्रीं देवाधिदेवाय नमः स्वाहा । २८४ । ॐ ह्रीं शक्रार्च्याय नमः स्वाहा । २८५ । ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः स्वाहा । २८६ । ॐ ह्रीं जगद्गुरवे नमः स्वाहा । २८७ । ॐ ह्रीं [illegible] नमः स्वाहा । २८८ ।

१ [illegible] । २—[illegible] । ३—[illegible] ।

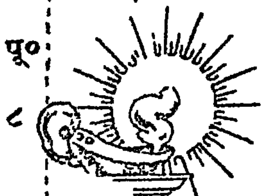




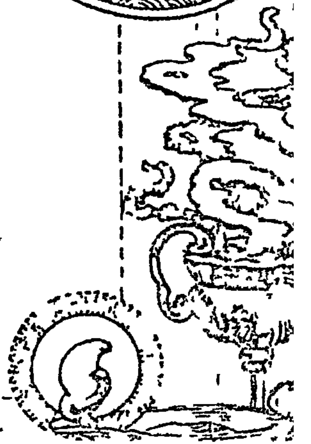

ॐ ह्रीं पद्मयानाय नमः स्वाहा । २८९ । ॐ ह्रीं जयध्वजिने नमः स्वाहा । २९० । ॐ ह्रीं भामण्डलिने नम. स्वाहा । २९१ । ॐ ह्रीं चतुःपष्टिचामराय नम· स्वाहा । २९२ । ॐ ह्रीं देवदुन्दुभये नमः स्वाहा । २९३ । ॐ ह्रीं वागस्पृष्टासनाय नम. स्वाहा । २९४ । ॐ ह्रीं छत्रत्रयराजे नम· स्वाहा । २९५ । ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिभाजे नमः स्वाहा । २९६ । ॐ ह्रीं दिव्याशोकाय नमः स्वाहा । २९७ । ॐ ह्रीं मानमर्दिने नमः स्वाहा । २९८ । ॐ ह्रीं संगीतार्हाय नम· स्वाहा । २९९ । ॐ ह्रीं अष्टमगलाय नमः स्वाहा । ३०० ।

ॐ ह्रीं तीर्थकृते नम. स्वाहा । ३०१ । ॐ ह्रीं तीर्थसृजे नमः स्वाहा । ३०२ । ॐ ह्रीं तीर्थकराय नमः स्वाहा । ३०३ । ॐ ह्रीं तीर्थंकराय नमः स्वाहा । ३०४ । ॐ ह्रीं सुदृशे नमः स्वाहा । ३०५ । ॐ ह्रीं तीर्थकर्त्रे नमः स्वाहा ३०६ । ॐ ह्रीं तीर्थभर्त्रे नम स्वाहा । ३०७ । ॐ ह्रीं तीर्थेशाय नमः स्वाहा । ३०८ । ॐ ह्रीं तीर्थनायकाय नमः स्वाहा । ३०९ । ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकराय नमः स्वाहा । ३१० । ॐ ह्रीं तीर्थप्रणेत्रे नमः स्वाहा । ३११ । ॐ ह्रीं तीर्थकारकाय नमः स्वाहा । ३१२ । ॐ ह्रीं तीर्थप्रवर्तकाय नम· स्वाहा । ३१३ । ॐ ह्रीं तीर्थवेधसे नमः स्वाहा । ३१४ । ॐ ह्रीं तीर्थविधायकाय नमः स्वाहा । ३१५ । ॐ ह्रीं सत्यतीर्थकराय नमः स्वाहा । ३१६ । ॐ ह्रीं तीर्थसेव्याय नम स्वाहा । ३१७ । ॐ ह्रीं तैर्थिकतारकाय नमः स्वाहा । ३१८ । ॐ ह्रीं सत्यवाक्याधिपाय नम स्वाहा । ३१९ । ॐ ह्रीं

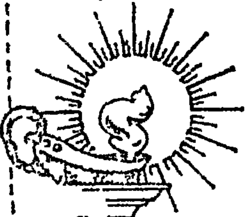
१—वाग्भिरस्पृष्टमासनमुर. प्रभृत्युच्चारणस्थान यस्य (अष्टौ स्थानानि) वर्णानामुर· कण्ठ शिरस्तथा जिह्वामूलं-चदन्ताश्च नासिकोष्ठौच ताल्वच "। २—ये तीर्थे-शास्त्रे नियुक्ताः, ये च तीर्थे-गुरौ नियुक्ताः सेवापरा., यद्वा तीर्थे-जिनपूजने नियुक्ताः अथवा तीर्थे-पुण्यक्षेत्रे नियुक्ता—यात्राकारका·, तथैव तीर्थे-पात्रं तस्य दानादिकर्मणि ये नियुक्ता· ते सर्वे तैर्थिका उच्यन्ते । तेषा तारकस्तस्मै ।

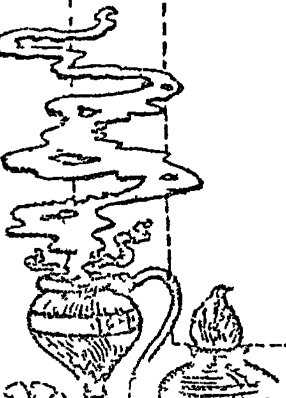


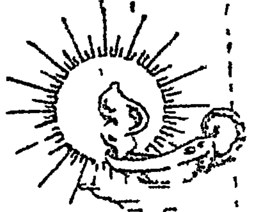


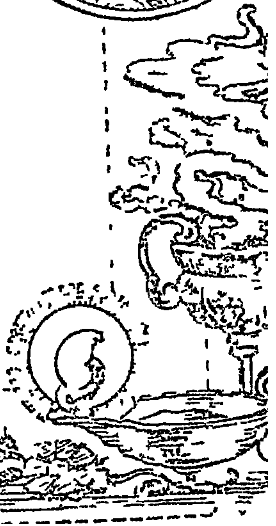



सत्यशासनाय नमः स्वाहा । ३२० । ॐ ह्रीं अप्रतिशासकाय नमः स्वाहा । ३२१ । ॐ ह्रीं स्याद्वादिने नमः स्वाहा । ३२२ । ॐ ह्रीं दिव्यगिरे नमः स्वाहा । ३२३ । ॐ ह्रीं दिव्यध्वनये नमः स्वाहा । ३२४ । ॐ ह्रीं अव्याहतार्थवाचे नमः स्वाहा । ३२५ । ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः स्वाहा । ३२६ । ॐ ह्रीं अर्थ्यवाचे नमः स्वाहा । ३२७ । ॐ ह्रीं अर्द्धमागधीयोक्तये नमः स्वाहा । ३२८ । ॐ ह्रीं इद्धवाचे नमः स्वाहा । ३२९ । ॐ ह्रीं अनेकान्तदिशे नमः स्वाहा । ३३० । ॐ ह्रीं एकान्तध्वान्तभिदे नमः स्वाहा । ३३१ । ॐ ह्रीं दुर्नयान्तकृते नमः स्वाहा । ३३२ । ॐ ह्रीं सार्थवाचे नमः स्वाहा । ३३३ । ॐ ह्रीं अप्रयत्नोक्तये नमः स्वाहा । ३३४ । ॐ ह्रीं प्रतितीर्थमदघ्नवाचे नमः स्वाहा । ३३५ । ॐ ह्रीं स्यात्कारध्वजवाचे नमः स्वाहा । ३३६ । ॐ ह्रीं ईहापेतवाचे नमः स्वाहा । ३३७ । ॐ ह्रीं अचलौष्ठवाचे नमः स्वाहा । ३३८ । ॐ ह्रीं अपौरुपेयवाक्छास्त्रे नमः स्वाहा । ३३९ । ॐ ह्रीं रुद्धवाचे नमः स्वाहा । ३४० । ॐ ह्रीं सप्तभंगिवाचे नमः स्वाहा । ३४१ । ॐ ह्रीं अवर्णगिरे नमः स्वाहा । ३४२ । ॐ ह्रीं सर्वभाषामयगिरे नमः स्वाहा । ३४३ । ॐ ह्रीं व्यक्तवर्णगिरे नमः स्वाहा । ३४४ । ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः स्वाहा । ३४५ । ॐ ह्रीं अक्रमवाचे नमः स्वाहा । ३४६ । ॐ ह्रीं अवाच्यानन्तवाचे नमः स्वाहा । ३४७ । ॐ ह्रीं अवाचे नमः स्वाहा । ३४८ । ॐ ह्रीं अद्वैतगिरे नमः स्वाहा । ३४९ । ॐ ह्रीं सूनृतगिरे नमः स्वाहा । ३५० । ॐ ह्रीं सत्यानुभयगिरे नमः स्वाहा । ३५१ । ॐ ह्रीं सुगिरे नमः स्वाहा । ३५२ । ॐ ह्रीं योजनव्यापिगिरे नमः स्वाहा । ३५३ । ॐ ह्रीं क्षीरगौरगिरे नमः स्वाहा । ३५४ । ॐ ह्रीं तीर्थकृत्वगिरे नमः स्वाहा । ३५५ । ॐ ह्रीं भव्यैकश्रव्यगवे नमः स्वाहा । ३५६ । ॐ ह्रीं सद्गवे नमः स्वाहा । ३५७ । ॐ ह्रीं

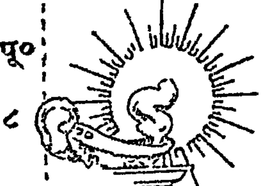








ॐ ह्रीं परमार्थगवे नमः स्वाहा । ३५९ । ॐ ह्रीं प्रशातगवे नमः स्वाहा
चित्रगवे नमः स्वाहा । ३५८ । ॐ ह्रीं सुगवे नम· स्वाहा । ३६२ । ॐ ह्रीं नियत-
। ३६० । ॐ ह्री प्राश्निकगवे नमः स्वाहा । ३६१ । ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः स्वाहा ।३६५।
कालगवे नमः स्वाहा । ३६३ । ॐ ह्रीं सुश्रुतये नमः स्वाहा । ३६४ । ॐ ह्रीं महाश्रुतये
ॐ ह्रीं याज्यश्रुतये नमः स्वाहा ।३६६। ॐ ह्रीं सुश्रुते नम· स्वाहा । ३६७ ।ॐ ह्रीं श्रुतिपतये नमः स्वाहा । ३७० ।
नमः स्वाहा । ३६८ । ॐ ह्रीं धर्मश्रुतये नमः स्वाहा । ३६९ । ॐ ह्रीं निर्वाणमार्गेदिशे
ॐ ह्रीं श्रुत्युद्धर्त्रे नम स्वाहा । ३७१ । ॐ ह्रीं ध्रुवश्रुतये नम स्वाहा । ३७२ ।ॐ ह्री सर्वमार्गदिशे नमः स्वाहा ।
नमः स्वाहा । ३७३ । ॐ ह्रीं मार्गदेशकाय नम· स्वाहा । ३७४ । ॐ ह्रीं तीर्थपरमोत्तमतीर्थकृते नमः स्वाहा ।३७७।
। ३७५ । ॐ ह्रीं सारस्वतपथाय नमः स्वाहा ।३७६। ॐ ह्रीं धर्मशासकाय
ॐ ह्री देष्ट्रे नमः स्वाहा । ३७८ । ॐ ह्रीं वाग्मीश्वराय नमः स्वाहा । ३७९ । ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः स्वाहा । ३८२ ।
नमः स्वाहा । ३८० । ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नम· स्वाहा । ३८१ । ॐ ह्रीं गिरापतये
ॐ ह्रीं त्रयीनाथाय नम. स्वाहा । ३८३ । ॐ ह्रीं त्रिभंगीशाय नमः स्वाहा । ३८४ । ॐ ह्रीं सिद्धवाचे नम. स्वाहा । ३८७ ।
नमः स्वाहा । ३८५ । ॐ ह्रीं सिद्धाज्ञाय नमः स्वाहा । ३८६ । ॐ ह्रीं जगत्प्रसि-
ॐ ह्रीं आज्ञासिद्धाय नमः स्वाहा । ३८८ ।ॐ ह्रीं सिद्धैकशासनाय नम स्वाहा । ३८९ । ॐ ह्रीं सुसिद्धवाचे नमः
द्धसिद्धान्ताय नम· स्वाहा । ३९० । ॐ ह्रीं सिद्धमंत्राय नम· स्वाहा । ३९१ । ॐ ह्रीं निरुक्तये नम. स्वाहा । ३९४ । ॐ
स्वाहा । ३९२ । ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नम स्वाहा । ३९३ । ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे नमः
ह्रीं तन्त्रकृते नमः स्वाहा । ३९५ । ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः स्वाहा । ३९६ ।





स्वाहा । ३९७ । ॐ ह्रीं महानादाय नमः स्वाहा । ३९८ । ॐ ह्रीं कवीन्द्राय नमः स्वाहा । ३९९ । ॐ ह्रीं दुंदुभिस्वनाय नमः स्वाहा । ४०० ।

ॐ ह्रीं नाथा(था)य नमः स्वाहा । ४०१ । ॐ ह्रीं पतये नमः स्वाहा । ४०२ । ॐ ह्रीं परिवृढाय नमः स्वाहा । ४०३ । ॐ ह्रीं स्वामिने नमः स्वाहा । ४०४ । ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः स्वाहा । ४०५ । ॐ ह्रीं विभवे नमः स्वाहा । ४०६ । ॐ ह्रीं प्रभवे नमः स्वाहा । ४०७ । ॐ ह्रीं ईश्वराय नमः स्वाहा । ४०८ । ॐ ह्रीं अधीश्वराय नमः स्वाहा । ४०९ । ॐ ह्रीं अधीशाय नमः स्वाहा । ४१० । ॐ ह्रीं अधीशानाय नमः स्वाहा । ४११ । ॐ ह्रीं अधीशित्रे नमः स्वाहा । ४१२ । ॐ ह्रीं ईशित्रे नमः स्वाहा । ४१३ । ॐ ह्रीं ईशाय नमः स्वाहा । ४१४ । ॐ ह्रीं अधिपतये नमः स्वाहा । ४१५ । ॐ ह्रीं ईशानाय नमः स्वाहा । ४१६ । ॐ ह्रीं इनाय नमः स्वाहा । ४१७ । ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः स्वाहा । ४१८ । ॐ ह्रीं अधिपाय नमः स्वाहा । ४१९ । ॐ ह्रीं अधिभुवे नमः स्वाहा । ४२० । ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः स्वाहा । ४२१ । ॐ ह्रीं महेशानाय नमः स्वाहा । ४२२ । ॐ ह्रीं महेशाय नमः स्वाहा । ४२३ । ॐ ह्रीं परमेशित्रे नमः स्वाहा । ४२४ । ॐ ह्रीं अधिदेवाय नमः स्वाहा । ४२५ । ॐ ह्रीं महादेवाय नमः स्वाहा । ४२६ । ॐ ह्रीं देवाय नमः स्वाहा । ४२७ । ॐ ह्रीं त्रिभुवनेश्वराय नमः स्वाहा । ४२८ । ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः स्वाहा । ४२९ । ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः स्वाहा । ४३० । ॐ ह्रीं विश्वेशे नमः स्वाहा । ४३१ । ॐ ह्रीं विश्वेश्वराय नमः स्वाहा । ४३२ । ॐ ह्रीं अधिराजे नमः स्वाहा । ४३३ । ॐ ह्रीं लोकेश्वराय नमः स्वाहा । ४३४ । ॐ ह्रीं लोकपतये नमः स्वाहा

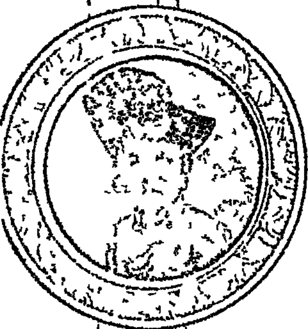
पू० ८

| ४३५ | ॐ ह्रीं लोकनाथाय नम. स्वाहा | ४३६ | ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः स्वाहा | ४३७ | ॐ ह्रीं
त्रैलोक्यनाथाय नमः स्वाहा | ४३८ | ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः स्वाहा | ४३९ | ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः
स्वाहा | ४४० | ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः स्वाहा | ४४१ | ॐ ह्रीं पित्रे नमः स्वाहा | ४४२ | ॐ ह्रीं
पराय नमः स्वाहा | ४४३ | ॐ ह्रीं परतराय नमः स्वाहा | ४४४ | ॐ ह्रीं जेत्रे नमः स्वाहा | ४४५ |
ॐ ह्रीं जिष्णवे नम स्वाहा | ४४६ | ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः स्वाहा | ४४७ | ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः स्वाहा |
४४८ | ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः स्वाहा | ४४९ | ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः स्वाहा | ४५० | ॐ ह्रीं प्रभ-
विष्णवे नम. स्वाहा | ४५१ | ॐ ह्री स्वयंप्रभवे नम' स्वाहा | ४५२ | ॐ ह्रीं लोकजिते नमः स्वाहा |
४५३ | ॐ ह्री विश्वजिते नमः स्वाहा | ४५४ | ॐ ह्रीं विश्वविजेत्रे नमः स्वाहा | ४५५ | ॐ ह्रीं
विश्वजित्वराय नमः स्वाहा | ४५६ | ॐ ह्रीं जगज्जेत्रे नमः स्वाहा | ४५७ | ॐ ह्रीं जगज्जैत्राय नमः स्वाहा |
४५८ | ॐ ह्रीं जगज्जिष्णवे नमः स्वाहा | ४५९ | ॐ ह्रीं जगज्जयिने नमः स्वाहा | ४६० | ॐ ह्रीं
अग्रण्यै नमः स्वाहा | ४६१ | ॐ ह्रीं ग्रामण्यै[1] नम. स्वाहा | ४६२ | ॐ ह्रीं नेत्रे नमः स्वाहा | ४६३ |
ॐ ह्रीं भूर्भुवःस्वरधीश्वराय नमः स्वाहा | ४६४ | ॐ ह्रीं धर्मनायकाय नमः स्वाहा | ४६५ | ॐ ह्रीं
ऋद्धीशाय नमः स्वाहा | ४६६ | ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः स्वाहा | ४६७ | ॐ ह्रीं भूतभृते नमः स्वाहा |
४६८ | ॐ ह्रीं गतये[2] नम' स्वाहा | ४६९ | ॐ ह्रीं पात्रे[3] नमः स्वाहा | ४७० | ॐ ह्री वृषाय नमः

१—ग्राम–सिद्धसमूह नमतीति ग्रामणीः । २—गमन, ज्ञानमात्र, सर्वेषामर्तिहरणसमर्थो वा गतिः ।
आविष्ठलिंग गतिः–शरणम् । ३—पानि–रक्षतिदु खातिपाता तस्मै ।

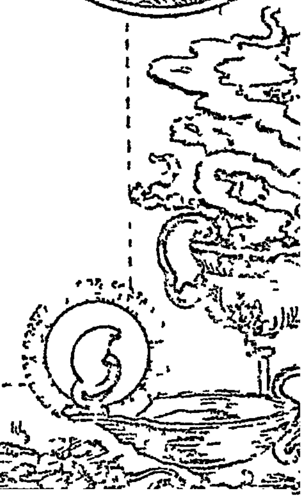








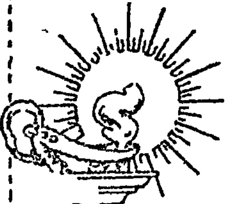




पू० ८

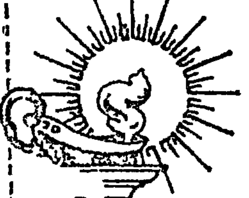
साम्यारोहणतत्पराय नम स्वाहा । ५०३ । ॐ ह्रीं सामायिकिने नमः स्वाहा । ५०४ । ॐ ह्रीं सामायिकाय
नमः स्वाहा । ५०५ । ॐ ह्रीं निःप्रमादाय नमः स्वाहा । ५०६ । ॐ ह्रीं अप्रतिक्रमाय नमः स्वाहा
। ५०७ । ॐ ह्रीं यमाय नमः स्वाहा । ५०८ । ॐ ह्रीं प्रधाननियमाय नम. स्वाहा । ५०९ । ॐ ह्रीं
स्वभ्यस्तपरमासनाय नमः स्वाहा । ५१० । ॐ ह्रीं प्राणायामचरणाय[1] नमः स्वाहा । ५११ । ॐ ह्रीं सिद्ध-
प्रत्याहाराय नम. स्वाहा । ५१२ । ॐ ह्रीं जितेन्द्रियाय नम. स्वाहा । ५१३ । ॐ ह्रीं धारणाधीश्वराय
नमः स्वाहा । ५१४ । ॐ ह्रीं धर्मध्याननिष्ठाय नमः स्वाहा । ५१५ । ॐ ह्रीं समाधिराजे नम. स्वाहा
। ५१६ । ॐ ह्रीं स्फुरत्समरसीभावाय नमः स्वाहा । ५१७ । ॐ ह्रीं एकिने नमः स्वाहा । ५१८ । ॐ ह्रीं
करणनायकाय नमः स्वाहा । ५१९ । ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थनाथाय नमः स्वाहा । ५२० । ॐ ह्रीं योगीन्द्राय
नम. स्वाहा । ५२१ । ॐ ह्रीं ऋषये नमः स्वाहा । ५२२ । ॐ ह्रीं साधवे नमः स्वाहा । ५२३ ।
ॐ ह्रीं यतये नमः स्वाहा । ५२४ । ॐ ह्रीं मुनये नमः स्वाहा । ५२५ । ॐ ह्रीं महर्षये नमः स्वाहा
। ५२६ । ॐ ह्रीं साधुधौरेयाय नमः स्वाहा । ५२७ । ॐ ह्रीं यतिनाथाय नमः स्वाहा । ५२८ । ॐ ह्रीं
मुनीश्वराय नमः स्वाहा । ५२९ । ॐ ह्रीं महामुनये नमः स्वाहा । ५३० । ॐ ह्रीं महामौनिने नमः स्वाहा
। ५३१ । ॐ ह्रीं महाध्यानिने नमः स्वाहा । ५३२ । ॐ ह्रीं महाव्रतिने नमः स्वाहा । ५३३ । ॐ ह्रीं
महाक्षमाय नमः स्वाहा । ५३४ । ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः स्वाहा । ५३५ । ॐ ह्रीं महाशान्ताय नमः
स्वाहा । ५३६ । ॐ ह्रीं महादमाय नमः स्वाहा । ५३७ । ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः स्वाहा । ५३८ । ॐ ह्रीं

१—हस्तलिखित कापीमें 'चणाय' ऐसा पाठ है।





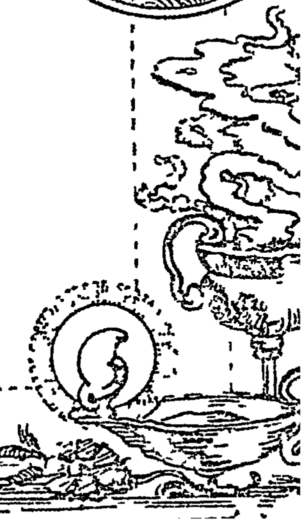


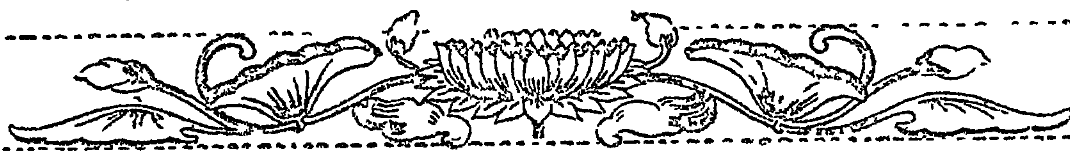




निर्ममस्वान्ताय नमः स्वाहा। ५३९। ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः स्वाहा। ५४०। ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः स्वाहा। ५४१। ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नम स्वाहा। ५४२। ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नम स्वाहा। ५४३। ॐ ह्रीं ब्रह्मज्ञाय नमः स्वाहा। ५४४। ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वविदे नमः स्वाहा। ५४५। ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः स्वाहा। ५४६। ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः स्वाहा। ५४७। ॐ ह्रीं दान्ताय नमः स्वाहा। ५४८। ॐ ह्रीं भदन्ताय नमः स्वाहा। ५४९। ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः स्वाहा। ५५०। ॐ ह्रीं धर्मवृक्षायुधाय नमः स्वाहा। ५५१। ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः स्वाहा। ५५२। ॐ ह्रीं प्रपूतात्मने नमः स्वाहा। ५५३। ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः स्वाहा। ५५४। ॐ ह्रीं मंत्रमूर्त्तये नमः स्वाहा। ५५५। ॐ ह्रीं स्वसौम्यात्मने नमः स्वाहा। ५५६। ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः स्वाहा। ५५७। ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नम स्वाहा। ५५८। ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः स्वाहा। ५५९। ॐ ह्रीं गुणाम्भोधये नमः स्वाहा। ५६०। ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यविरोधकाय नमः स्वाहा। ५६१। ॐ ह्रीं सुसवृत्ताय नमः स्वाहा। ५६२। ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः स्वाहा। ५६३। ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः स्वाहा। ५६४। ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः स्वाहा। ५६५। ॐ ह्रीं महोदर्काय नम स्वाहा। ५६६ ॐ ह्रीं महोपायाय नमः स्वाहा। ५६७। ॐ ह्रीं जगदेकपितामहाय नमः स्वाहा। ५६८। ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः स्वाहा। ५६९। ॐ ह्रीं गुण्याय नमः स्वाहा। ५७०। ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय नमः स्वाहा। ५७१। ॐ ह्रीं शुचये नमः स्वाहा। ५७२। ॐ ह्रीं अरिंजयाय नमः स्वाहा। ५७३। ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः स्वाहा। ५७४। ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः स्वाहा। ५७५। ॐ ह्रीं सदाधृतये नमः स्वाहा। ५७६। ॐ ह्रीं परमोदासित्रे





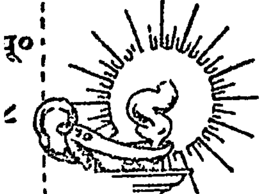


नमः स्वाहा । ५७७ । ॐ ह्रीं अनायुषे नमः स्वाहा । ५७८ । ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः स्वाहा । ५७९ । ॐ ह्रीं शातनायकाय नमः स्वाहा । ५८० । ॐ ह्रीं अपूर्ववैद्याय नमः स्वाहा । ५८१ । ॐ ह्रीं योगज्ञाय नमः स्वाहा । ५८२ । ॐ ह्रीं धर्ममूर्तये नमः स्वाहा । ५८३ । ॐ ह्रीं अधर्मदहे नम· स्वाहा । ५८४ । ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः स्वाहा । ५८५ । ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नम. स्वाहा । ५८६ । ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः स्वाहा । ५८७ । ॐ ह्रीं कृतकृतवे नमः स्वाहा । ५८८ । ॐ ह्रीं गुणाकराय नमः स्वाहा । ५८९ । ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नम· स्वाहा । ५९० । ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः स्वाहा । ५९१ । ॐ ह्रीं निराश्रयाय नम. स्वाहा । ५९२ । ॐ ह्रीं सूरये नमः स्वाहा । ५९३ । ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वज्ञाय नमः स्वाहा । ५९४ । ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नम. स्वाहा । ५९५ । ॐ ह्रीं शमिने नमः स्वाहा । ५९६ । ॐ ह्रीं प्रक्षीणबन्धाय नमः स्वाहा । ५९७ । ॐ ह्रीं निर्द्वन्द्वाय नमः स्वाहा । ५९८ । ॐ ह्रीं परमर्षये नमः स्वाहा । ५९९ । ॐ ह्रीं अनन्तगाय नमः स्वाहा । ६०० ।

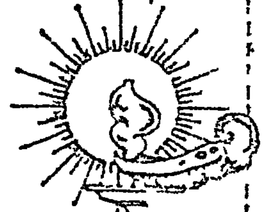
ॐ ह्रीं निर्वाणाय[1] नमः स्वाहा । ६०१ । ॐ ह्रीं सागराय[2] नमः स्वाहा । ६०२ । ॐ ह्रीं महासाधवे नमः स्वाहा । ६०३ । ॐ ह्रीं विमलाभाय[3] नम. स्वाहा । ६०४ । ॐ ह्रीं शुद्धाभाय नमः स्वाहा । ६०५ । ॐ ह्रीं श्रीधराय नमः स्वाहा । ६०६ । ॐ ह्रीं दत्ताय नम· स्वाहा । ६०७ । ॐ ह्रीं अमला-

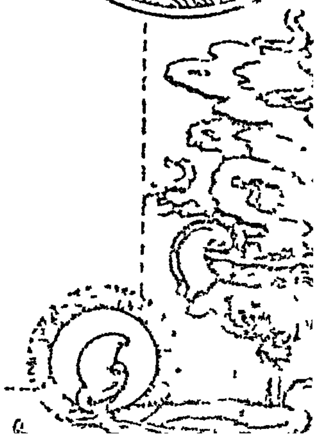
---

१—सुखीभूतः, कामवाणरहितः, आयुधरहित·, निश्चितो वन एव निवासोपस्य स जिनकल्पित्वात्। २—सा—लक्ष्मी गरः विषसदृग्गी यस्य, सगरो धरणेन्द्रस्तेनोत्सगे धृत., सया लक्ष्म्योपलक्षितोऽगः—मेरुस्तंराति गृह्णाति, सागा दरिद्रास्तान् राति। ३—विमला—कर्ममलरहिता आभा यस्य, वि—विशिष्टा मा—लक्ष्मीर्यत्र स एवंभूतो लाभोयस्य, उपराग-र हिता आ समंतात् मा—दीप्तिर्यस्य स।



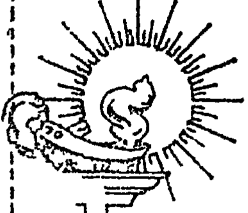


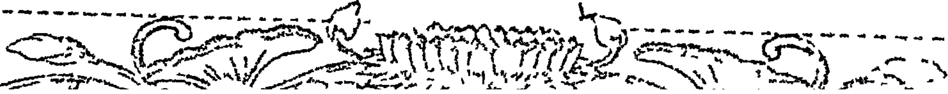


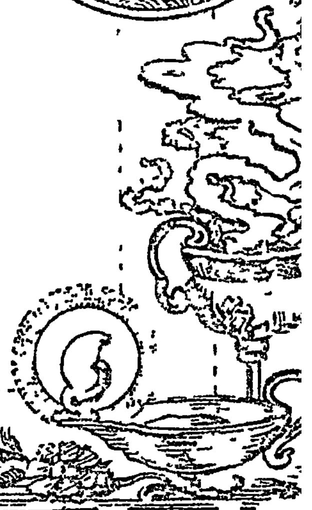
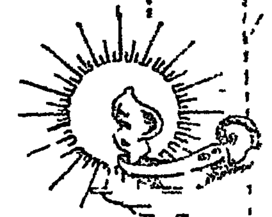
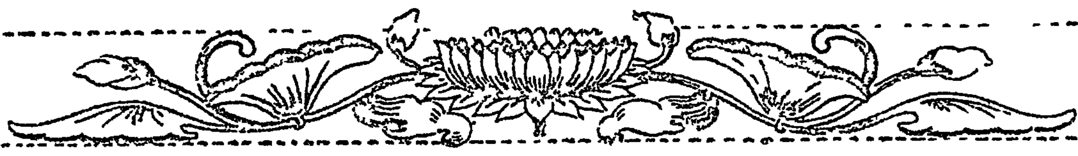


मीय नमः स्वाहा । ६०८ । ॐ ह्रीं उद्धराय नमः स्वाहा । ६०९ । ॐ ह्रीं अग्नये नमः स्वाहा । ६१० । ॐ ह्रीं संयमाय नमः स्वाहा । ६११ । ॐ ह्रीं शिवाय नमः स्वाहा । ६१२ । ॐ ह्रीं पुष्पाञ्जलये नमः स्वाहा । ६१३ । ॐ ह्रीं शिवगणाय नमः स्वाहा । ६१४ । ॐ ह्रीं उत्साहाय नमः स्वाहा । ६१५ । ॐ ह्रीं ज्ञानसंज्ञकाय नमः स्वाहा । ६१६ । ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः स्वाहा । ६१७ । ॐ ह्रीं विमलेशाय नमः स्वाहा । ६१८ । ॐ ह्रीं यशोधराय नमः स्वाहा । ६१९ । ॐ ह्रीं कृष्णार्यै नमः स्वाहा । ६२० । ॐ ह्रीं ज्ञानमतये नमः स्वाहा । ६२१ । ॐ ह्रीं शुद्धमतये नमः स्वाहा । ६२२ । ॐ श्रीभद्राय नमः स्वाहा । ६२३ । ॐ ह्रीं शान्ताय नमः स्वाहा । ६२४ । ॐ ह्रीं वृषभाय नमः स्वाहा । ६२५ । ॐ ह्रीं अजिताय नमः स्वाहा । ६२६ । ॐ ह्रीं सम्भवाय नमः स्वाहा । ६२७ । ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय नमः स्वाहा । ६२८ । ॐ ह्रीं सुमतये नमः स्वाहा । ६२९ । ॐ ह्रीं पद्मप्रभाय नमः स्वाहा । ६३० । ॐ ह्रीं सुपार्श्वाय नमः स्वाहा । ६३१ । ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभाय नमः स्वाहा । ६३२ । ॐ ह्रीं पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा । ६३३ । ॐ ह्रीं शीतलाय नमः स्वाहा । ६३४ । ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः स्वाहा । ६३५ । ॐ ह्रीं वासुपूज्याय नमः स्वाहा । ६३६ । ॐ ह्रीं विमलाय नमः स्वाहा । ६३७ । ॐ ह्रीं अनन्तजिते नमः स्वाहा

१—अविद्यमानः मलस्य-पापस्याभा-अशोपियस्य, अमा दीनास्तेषा लाभो यस्मात्, अमान्-निर्ग्रंथान् मुनीनलाति-स्वीकुर्वन्ति तैर्गणधरैर्योयाति-शोभते । २—अगति-ऊर्ध्वंव्रजतीति अग्निः । ३—पुष्पवत्-कमलवत् अञ्जलिः-इन्द्रादीना करसपुटो य प्रति स, पुष्पाणामञ्जलय. यस्मिन्-द्वादशयोजनप्रमाणपुष्पवृष्टि । ४—कर्पति-यानिकर्माणि नलादुन्मूलयति । ५— स-समीचीनो भवो-जन्म यस्य, सभव इत्यपि पाठस्तत्र स-सुखमवति यस्मात् इति । ६—यो-मत्र ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्याय नमः इति मंत्रेण सुष्ठु पूज्यः ।

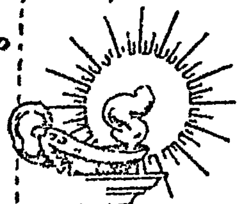




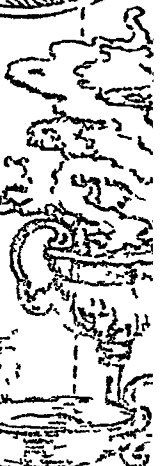
। ६३८ । ॐ ह्रीं धर्माय नमः स्वाहा । ६३९ । ॐ ह्रीं शातये नमः स्वाहा । ६४० । ॐ ह्रीं कुंथवे[1] नमः
स्वाहा । ६४१ । ॐ ह्रीं अराय[2] नमः स्वाहा । ६४२ । ॐ ह्रीं मल्लये[3] नम. स्वाहा । ६४३ । ॐ ह्रीं
सुव्रताय नमः स्वाहा । ६४४ । ॐ ह्रीं नमये[4] नमः स्वाहा । ६४५ । ॐ ह्रीं नेमये नमः स्वाहा । ६४६ ।
ॐ ह्रीं पार्श्वाय नमः स्वाहा । ६४७ । ॐ ह्रीं वर्धमानाय नमः स्वाहा । ६४८ । ॐ ह्रीं महावीराय नमः
स्वाहा । ६४९ । ॐ ह्रीं वीराय नमः स्वाहा । ६५० । ॐ ह्रीं सन्मतये नमः स्वाहा । ६५१ । ॐ ह्रीं
महतिमहावीराय नमः स्वाहा । ६५२ । ॐ ह्रीं महापद्माय नमः स्वाहा । ६५३ । ॐ ह्रीं सूरदेवाय[6] नमः
स्वाहा । ६५४ । ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः स्वाहा । ६५५ । ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नम· स्वाहा । ६५६ ।
ॐ ह्रीं सर्वायुधाय नम स्वाहा । ६५७ । ॐ ह्रीं जयदेवाय नमः स्वाहा । ६५८ । ॐ ह्री उदयदेवाय नमः
स्वाहा । ६५९ । ॐ ह्रीं प्रभादेवाय नमः स्वाहा । ६६० । ॐ ह्रीं उदंकाय नमः स्वाहा । ६६१ ।
ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तये नमः स्वाहा । ६६२ । ॐ ह्रीं जयाय नमः स्वाहा । ६६३ । ॐ ह्री पूर्णबुद्धये नमः
स्वाहा । ६६४ । ॐ ह्रीं नि.कषायाय नमः स्वाहा । ६६५ । ॐ ह्रीं विमलप्रभाय नम· स्वाहा
। ६६६ । ॐ ह्रीं वहलाय[7] नमः स्वाहा । ६६७ । ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः स्वाहा । ६६८ । ॐ ह्रीं

१—कुंथति–तपः करोतीति कुथु.। २ अरति–लोकालोक जानाति इयर्ति–त्रैलोक्यशिखरमारोहतीति, अर्यते–मोक्षार्थिभिः प्राप्यते इतिवाअर । धर्मरथप्रवृत्तिहेतुत्वादरश्चक्राग भूतोवा । ३—मल्लते–भव्यजीवान् धारयति, मोक्षे स्थापयतीतिवा मल्लिः। देवेंद्रादिभिर्मल्ल्यते–धार्यते इतिवा । ४—नम्यते देवेन्द्राभिरिति नमिः। ५—मस्य–मलस्य पापस्य वा हतिर्विध्वसनतत्र महावीर.–महासुभटः। ६—सूराणा देवः आराध्यः। शूरदेव इत्यपि पाठः। ७—वहं–स्कन्ध-देशंलाति–ददाति इतिवहल:–सयमभारोद्धरणे शक्तः। वहति–मोक्ष प्रापयति इतिवा।



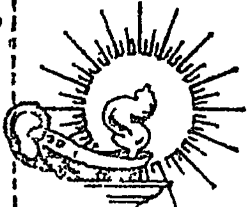







चित्रगुप्ताय नमः स्वाहा । ६६९ । ॐ ह्रीं समाधिगुप्ताय नमः स्वाहा । ६७० । ॐ ह्रीं स्वयभुवे नमः स्वाहा । ६७१ । ॐ ह्रीं कन्दर्पाय नमः स्वाहा । ६७२ । ॐ ह्रीं जयनाथाय नमः स्वाहा । ६७३ । ॐ ह्रीं श्रीविमलाय नमः स्वाहा । ६७४ । ॐ ह्रीं दिव्यवादाय नम स्वाहा । ६७५ । ॐ ह्रीं अनन्तवीराय नम स्वाहा ।६७६। ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः स्वाहा । ६७७ । ॐ ह्रीं सुविधये नमः स्वाहा । ६७८ । ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः स्वाहा । ६७९ । ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः स्वाहा । ६८० । ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः स्वाहा । ६८१ । ॐ ह्रीं धर्मसारथये नमः स्वाहा । ६८२ । ॐ ह्रीं शिवकीर्तनाय नम स्वाहा । ६८३ । ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः स्वाहा । ६८४ । ॐ ह्रीं अक्षराय नमः स्वाहा । ६८५ । ॐ ह्रीं अच्छद्मने नमः स्वाहा । ६८६ । ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमःस्वाहा । ६८७ । ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः स्वाहा । ६८८ । ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः स्वाहा । ६८९ । ॐ ह्रीं निरातकाय नमः स्वाहा । ६९० । ॐ ह्रीं निरारेकाय नम स्वाहा । ६९१ । ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः स्वाहा । ६९२ । ॐ ह्रीं दृढव्रताय नमः स्वाहा । ६९३ ।

१—चित्रवत्–आकाशवत् गुप्तः–अलक्ष्यः । चित्राः–विचित्राः–मुनीनामथाश्चर्यकारिण्योगुप्तयो यस्य सा । चित्रं–तिलकदान प्रतिष्ठावसरे गुप्त–गुरूपदेशप्राप्यं यस्य स, चित्रा आश्चर्यकरा गुप्तयः समवसरणेत्रिस्रः प्राकारा यस्य स इति वा । २—दिव्यः–अमानुषः वादो–ध्वनिर्यस्य, दिव्या–देवानामपि वा–वेदना अति–खण्डयति, दिव्यं वा मंत्रंददाति–इति वा दिव्यवादः । ३—पुरुर्महान् देवानामप्याराध्यो देवः, पुरवः–प्रचुरा देवा यस्य–असख्यातदेवसेवितः, पुरोः–स्वर्गस्यदेवः इति वा । ४—धर्मस्याहिंसालक्षणस्य सारथिः–प्रवर्तकः, धर्माणा मध्ये सारः–उत्कृष्टस्तत्र तिष्ठति स्थाधातोः मकारलोपः कि प्रत्ययश्च । ५—विश्वं कृच्छ्र कष्टमेव कर्म यस्य मते, विश्वेसु–देवविशेषेसु कर्म–सेवा यस्य, विश्वस्मिन्–कर्म–लोकजीवनकरी क्रिया यस्येति वा । ६—विश्वस्मिन्भवति–विश्वभूः । " सत्ताया मगले वृद्धौ निवासे व्याप्तिसंपदोः । अभिप्राये च शक्तौच प्रादुर्भावे गतौ च भूः "

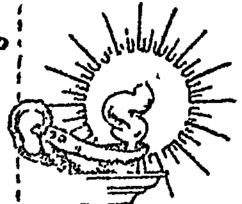






ॐ ह्रीं नयोत्तुंगाय नमः स्वाहा । ६९४ । ॐ ह्रीं निःकलंकाय नमः स्वाहा । ६९५ । ॐ ह्रीं अकलाधराय[1] नमः स्वाहा । ६९६ । ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहाय नमः स्वाहा । ६९७ । ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः स्वाहाः । ६९८ । ॐ ह्रीं क्षान्ताय नमः स्वाहा । ६९९ । ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः स्वाहा । ७०० ।

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः स्वाहा । ७०१ । ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः स्वाहा । ७०२ । ॐ ह्रीं धात्रे नमः स्वाहा । ७०३ । ॐ ह्रीं विधात्रे नमः स्वाहा । ७०४ । ॐ ह्रीं कमलासनाय नमः स्वाहा । ७०५ । ॐ ह्रीं अब्जभुवे[2] नमः स्वाहा । ७०६ । ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः स्वाहा । ७०७ । ॐ ह्रीं स्रष्ट्रे नमः स्वाहा । ७०८ । ॐ ह्रीं सुरज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ७०९ । ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः स्वाहा । ७१० । ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः स्वाहा । ७११ । ॐ ह्रीं वेदज्ञाय नमः स्वाहा । ७१२ । ॐ ह्रीं वेदांगाय नमः स्वाहा । ७१३ । ॐ ह्रीं वेदपारगाय नमः स्वाहा । ७१४ । ॐ ह्रीं अजाय नमः स्वाहा । ७१५ । ॐ ह्रीं मनवे नमः स्वाहा । ७१६ । ॐ ह्रीं शतानन्दाय नमः स्वाहा । ७१७ । ॐ ह्रीं हंसयानाय[3] नमः स्वाहा । ७१८ । ॐ ह्रीं त्रयीमयाय नमः स्वाहा । ७१९ । ॐ ह्रीं विष्णवे नमः स्वाहा । ७२० । ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय नमः

१—न कला धारयति–केनापि य कलयितु न शक्यः। अक–दुःख लाति–ददाति=अकलः–ससार त न धरति अकलः–ससारो–अधरो नीचो यस्य, न कल–शरीरम् आ समतात् धरति, न कला–चन्द्रकला शिरसि धरति । २—अब्जैः–कमलैरुपलक्षिता भू–र्जन्म भूमिर्यस्य, मातुरुदरे योनिमप्यस्पृष्ट्वा अष्टदलकमलकर्णिकाया नवमासान् स्थित्वा वृद्धिंगत इति अब्जभू, अब्जस्य,—चन्द्रस्य भूः–सेवास्थान, अब्जस्य–धन्वन्तरे भूः स्थानमायुर्वेदगुरुत्वात् । ३—हसे–परमात्मनि यान–गमन यस्य, हसैः–श्रेष्ठैः सह यान-विहारो यस्य, हसः–श्रेष्ठं यानं यस्य, हंसः सूर्यस्तद्वत् यान विहारोयस्य, हंसवत्–मद गमन यस्य ।

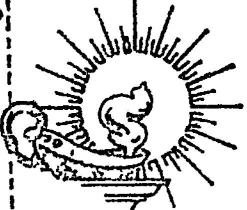






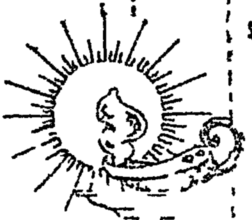
स्वाहा । ७२१ । ॐ ह्रीं सौरये नमः स्वाहा । ७२२ । ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः स्वाहा । ७२३ । ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय नमः स्वाहा । ७२४ । ॐ ह्रीं वैकुंठाय नमः स्वाहा । ७२५ । ॐ ह्रीं पुंडरीकाक्षाय नमः स्वाहा । ७२६ । ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः स्वाहा । ७२७ । ॐ ह्रीं हरये नमः स्वाहा । ७२८ । ॐ ह्रीं स्वभुवे नमः स्वाहा । ७२९ । ॐ ह्रीं विश्वंभराय नमः स्वाहा । ७३० । ॐ ह्रीं असुरध्वंसिने नमः स्वाहा । ७३१ । ॐ ह्रीं माधवाय नमः स्वाहा । ७३२ । ॐ ह्रीं बलिबंधनाय नमः स्वाहा । ७३३ । ॐ ह्रीं अधोक्षजाय नमः स्वाहा । ७३४ । ॐ ह्रीं मधुद्वेषिणे नमः स्वाहा । ७३५ । ॐ ह्रीं केशवाय नमः स्वाहा । ७३६ । ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः स्वाहा । ७३७ । ॐ ह्रीं श्रीवत्सलाञ्छनाय नमः स्वाहा । ७३८ । ॐ ह्रीं श्रीमते नमः स्वाहा । ७३९ । ॐ ह्रीं अच्युताय नमः स्वाहा । ७४० । ॐ ह्रीं नरकांतकाय नमः स्वाहा । ७४१ । ॐ ह्रीं विष्वक्सेनाय नमः स्वाहा । ७४२ । ॐ ह्रीं चक्रपाणये नमः स्वाहा । ७४३ । ॐ ह्रीं

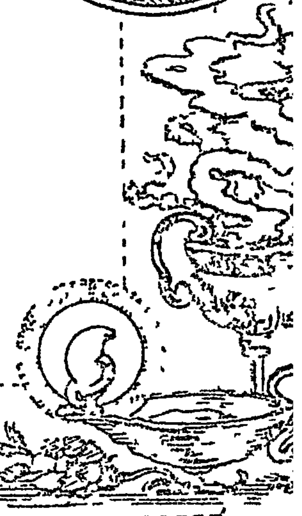
१—सूरस्य-सुभटस्य-क्षत्रियस्यापत्य सौरिः । २—विकुंठा—तीर्थंकरमाता तस्याअपत्य, ३—पुंडरिकवत् अक्षिणी यस्य, पुंडरीकः—प्रधानभूत अक्ष आत्मा यस्य । ५— जितेन्द्रियः । ४—असुरोमोहस्तन्नमने, असून्-प्राणान् राति-गृह्णाति असुरोयमस्तं ध्वसते । ६—यस्य मते जीवस्य बलेः-कर्मणः बंधन भवतीति प्रतिपादितम् । बलिन —बलवत्तरस्य-त्रैलोक्यक्षोभकारिण तीर्थंकरास्योच्चगोत्रकर्मणश्च बंधन यस्य, बलिर्नृपदेयकरस्तस्य बंधन-निर्धारण यस्यावसरे । ७—अक्षज ज्ञानमधोमस्य । ८—प्रशस्ताकेशा यस्य केशाद्वोऽन्यतरस्यामिति व प्रत्ययः, के —परमब्रह्मणि ईशते महामुनयस्तेषा वो वासो यत्र । ९—विष्टर इव श्रवसी-कर्णौ यस्य, विस्तरे-सकलश्रुतज्ञाने श्रवसी यस्य । १०—विष्वक-समंतात् सेना-द्वादशविधो गणो यस्य, विश्वक्समंतात् मा-लोकत्रयवर्णिनी लक्ष्मीस्तस्या इनः । ११—चक्रं-लक्षणविशेष उपलक्षणत्वाद्वज्री-न्द्रकुलिशादिनि लक्षणानि च पाणौ यस्य, चक्राणि-चक्रा राजानस्तेषामणि.सीमा, चक्रपान् अणति-धर्मोपदेश करोति ।





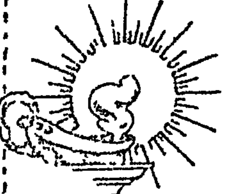






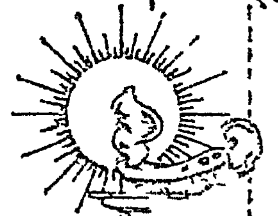
पद्मनाभाय नमः स्वाहा । ७४४ । ॐ ह्रीं जनार्दनाय नमः स्वाहा । ७४५ । ॐ ह्रीं श्रीकंठाय नमः स्वाहा । ७४६ । ॐ ह्रीं शकराय नमः स्वाहा । ७४७ । ॐ ह्रीं शंभवे नमः स्वाहा । ७४८ । ॐ ह्रीं कैपालिने नमः स्वाहा । ७४९ । ॐ ह्रीं बृषकेतनाय नमः स्वाहा । ७५० । ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः स्वाहा । ७५१ । ॐ ह्रीं विरूपाक्षाय नमः स्वाहा । ७५२ । ॐ ह्री वामदेवाय नमः स्वाहा । ७५३ । ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः स्वाहा । ७५४ । ॐ ह्री उमापतये नमः स्वाहा । ७५५ । ॐ ह्रीं पशुपतये नम' स्वाहा । ७५६ । ॐ ह्रीं स्मरारये नमः स्वाहा । ७५७ । ॐ ह्रीं त्रिपुरार्तकाय नमः स्वाहा । ७५८ ।

१—जनान्–जनपदलोकान् अर्दति–सबोधनार्थं गच्छति, जना–भव्या अर्दना मोक्षयाचका यस्य, जनान् अर्दयति–मोक्ष गमयति । २—कम्–आत्मानं पालयति, क–ब्रह्मस्वरूपमात्मान पाति-रक्षन्ति ससारपतनादितिकपास्तानासमतात् लाति–भूषयतीति कपाली । ३—विरूप–सूक्ष्मस्वभावम्–अक्षि–केवलज्ञानलक्षणलोचनं यस्य "सक्थ्यक्ष्णीस्वागे" इत्यत् प्रत्ययः, विशिष्टरूपे–कर्णांतविश्राते अक्षिणी यस्य, विरूपः केवलज्ञानगम्यः अक्ष,–आत्मा यस्य । विर्गरुङ्स्तस्य रूप, ससारत्रिपनिषेधक एवंभूतोऽक्ष, आत्मा यस्य । ४—वामो–मनोहरो देवः, वामस्य-प्रतिकूलस्य–शत्रोरपिदेव आराध्यः, इत्यादि । ५—त्रयाणालोकत्रयवर्तिभव्याना नेत्रस्थानीयः, त्रिपुलोकेषुलोचने–ज्ञानदर्शनरूपे नेत्रे यस्य, जन्मारम्य मतिश्रुतावधिज्ञानानित्रीणिलोचनानि यस्य, त्रिषु–मनोवचनकायेषु त्रिकरणशुद्धं वा लोचन–केशोत्पाटो यस्य, इत्यादि । ६—उमा–कान्तिः कीर्तिश्च अथवा उः—क्षीरसागरो मेरुर्वा तयोर्मा–लक्ष्मीः तस्याःपतिः । ७—पश्यन्तिकर्मबन्धनैरिति पशवः ससारिणो जीवा वा पशवस्तेषापतिः । ८—तिसृणा–जन्मजरामरणरूपाणा पुरामन्तको–विनाशकः, परमौदारिकतैजसकार्मणशरीराणामन्तकः, त्रिपुरं–त्रैलोक्यं तस्याते क आत्मा यस्य ।



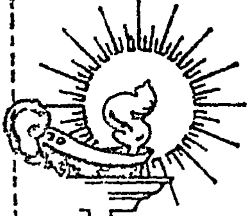


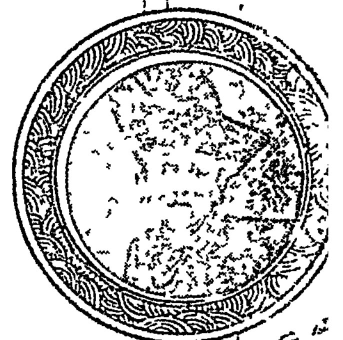


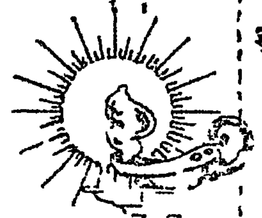



ॐ ह्रीं अर्धनारीश्वराय नमः स्वाहा । ७५९ । ॐ ह्रीं रुद्राय नमः स्वाहा । ७६० । ॐ ह्रीं भवाय नमः स्वाहा । ७६१ । ॐ ह्रीं भर्गाय नमः स्वाहा । ७६२ । ॐ ह्रीं सदाशिवाय नम. स्वाहा । ७६३ । ॐ ह्रीं जगत्कर्त्रे नमः स्वाहा । ७६४ । ॐ ह्रीं अंधकारांतये नम॰ स्वाहा । ७६५ । ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः स्वाहा । ७६६ । ॐ ह्रीं हराय नमः स्वाहा । ७६७ । ॐ ह्रीं महासेनाय नमः स्वाहा । ७६८ । ॐ ह्रीं तारकजिते नमः स्वाहा । ७६९ । ॐ ह्रीं गणनाथाय नम. स्वाहा । ७७० । ॐ ह्रीं विनायकाय नमः स्वाहा । ७७१ । ॐ ह्रीं विरोचनाय नमः स्वाहा । ७७२ । ॐ ह्रीं वियद्रत्नाय नमः स्वाहा । ७७३ । ॐ ह्रीं द्वादशात्मने नमः स्वाहा । ७७४ । ॐ ह्रीं विभावसवे नमः स्वाहा । ७७५ । ॐ ह्रीं द्विजाराध्याय

१—अर्द्ध न अरयो घातिकर्माणि यस्य सचासौ ईश्वरः । २ कर्मणा रौद्रमूर्तित्वाद्रौद्रः, आत्मदर्शने सति रोदिति–आनदाश्रूणिमुचति स । ३—भृज्यंते कामक्रोधादयो येन, बिभर्ति-वारयति पोषयतीति वा भर्गः " स्वसृत्यागः " इति औणादिकः गप्रत्ययः । ४—सदा–सर्वकालं शिव परमकल्याण यस्य, सदा–दिवा रात्रौ चाश्नंतिते सदाशिनः तेषा वः समुद्र.—संसारः पतनमितिवचन यस्य । ५—जगता कर्ता–मर्यादाकारकः, जगतः कंसुखमिर्यातजानाति । ६—अंधः-सम्यग्दर्शनरहितः कः स्वरूपं यस्य तत् मोहकर्म तस्यारातिः शत्रु. । ७—अनतभवोपार्जितानिपापानिजीवाना हरति, हं–हर्षमनन्तसुखं हारविशेषं राति–ददाति धारयति वा, हस्य–हिमायाः रः–निरोधक. । ८—महती–द्वादशलक्षणा सेना यस्य, महस्य–पूजाया आसमंतात् सा–लक्ष्मीस्तस्या इनःस्वामी, मह्य आस–आसनं तत्र इनः । ९—तारकान्–गणधरादीन् जितवान्, तारमत्युच्चैः शब्द कायति–ध्वनति स मेघोऽथवा सगर्जनः सागरः तान् निजेन ध्वनिना जितवान् । इत्यादि १०—विशिष्टाना गणधरादीना नायकः । विगतोनायको यस्य । ११—विशिष्ट रोचनसम्यक्त्वं यस्य, विशिष्टारोचना–मुक्तिस्त्री यस्य, विगत रोचन ससारप्रीतिर्यस्य । १२—कर्मेन्धनदहनत्वादग्निः, मोहांधकारविनाशित्वात्सूर्यः, नेत्रामृतवर्षित्वाद्विभावसुश्चन्द्रः, केवलज्ञानधन इत्यादि ।









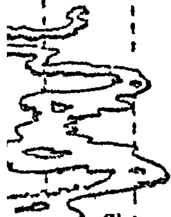
नमः स्वाहा । ७७६ । ॐ ह्रीं बृहद्भानये[1] नमः स्वाहा । ७७७ । ॐ ह्रीं चित्रमानवे[2] नमः स्वाहा । ७७८ । ॐ ह्रीं तनूनपाते[3] नमः स्वाहा । ७७९ । ॐ ह्रीं द्विजराजाय नम स्वाहा । ७८० । ॐ ह्रीं सुधाशोचये नमः स्वाहा । ७८१ । ॐ ह्रीं औषधीशाय नमः ७८२ । ॐ ह्रीं कलानिधये नमः स्वाहा । ७८३ । ॐ ह्रीं नक्षत्रनाथाय नमः स्वाहा । ७८४ । ॐ ह्रीं शुभ्राशवे नमः स्वाहा । । ७८५ । ॐ ह्रीं सोमाय नमः स्वाहा । ७८६ । ॐ ह्रीं कुमुदबांधवाय नमः स्वाहा । ७८७ । ॐ ह्रीं लेखर्षभाय नमः स्वाहा । ७८८ । ॐ ह्रीं अनिलाय नमः स्वाहा । ७८९ । ॐ ह्रीं पुण्यजनाय नमः स्वाहा । ७९० । ॐ ह्रीं पुण्यजनेश्वराय नमः स्वाहा । ७९१ । ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः स्वाहा । ७९२ । ॐ ह्रीं भोगिराजाय नमः स्वाहा । ७९३ । ॐ ह्रीं प्रचेतसे[11] नमः स्वाहा । ७९४ । ॐ ह्रीं भूमिनन्दनाय[12]

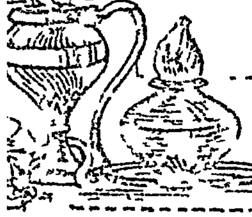


१—बृहत्-महत्तरोभानुः दिन पुण्यं यस्य, इत्यादि । २—आश्चर्यकारिणो मानवः-ज्ञानकिरणा यस्य । ३—तनूं-काय न पातयति-छद्मस्थावस्थायामनुपवासात् केवलज्ञाने जाते तु आहारमगृहीत्वापि न पातयति । ४—शारीरादिरोगनिवारण समर्थः । दुर्मरणहेतून् स्यति-इति वा । ५—सूतेऽमृतं-मोक्षमिति, सूयते मेरुमस्तकेऽभिषिच्यते इति वा सोमः, सा-लक्ष्मी सरस्वती च ताभ्यामुमा कीर्तिर्यस्य, उमया-कान्त्या सहवर्तमानः सोम इतिवा । ६—भव्यकैरवाणामुपकारकः, कुपु-तिसृषु पृथिवीषु मुदा हर्षोयेषा ते कुमुदाइन्द्रादयस्तेषामुपकारकः, कुत्सितेकर्मणि मुत् हर्षोयेषाते-षामबाधवः । ७—लेखेसु-देवेषु ऋषभ. श्रेष्ठः ८—न विद्यते इला-भूमिर्यस्य त्यक्तराज्यः तनुवातवलये निराधार स्थायी । ९—पुण्या जनाः सेवका यस्य, पुण्यजनमयतीतिवा । १०—भोगिनामिन्द्राणाचक्रिणा वा राजा । ११—प्रकृष्टं सर्वेषा-दारिद्र्यादिनाशनपरचेतो यस्य, प्रणष्टचेता-विकल्परहितो वा । १२—भूमी-लोकत्रयवर्तिजनान् नदयति ।

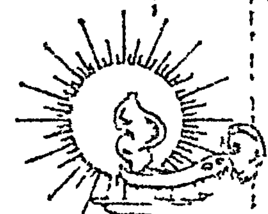


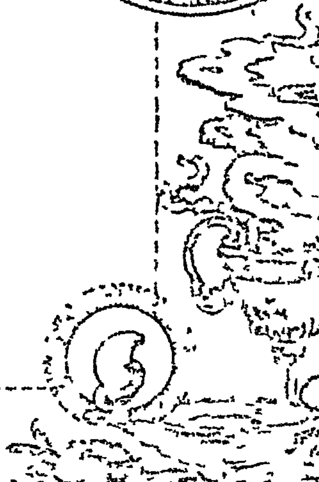








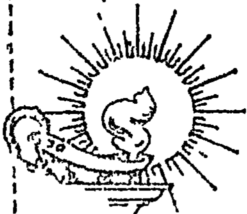




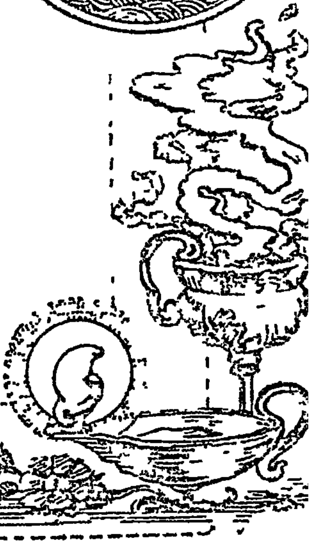
नमः स्वाहा । ७९५ ॐ ह्रीं सिंहिकातनयाय नमः स्वाहा । ७९६ । ॐ ह्रीं छायानन्दनाय नमः स्वाहा । ७९७ । ॐ ह्रीं बृहत्तापनये नम स्वाहा । ७९८ । ॐ ह्रीं पूर्वदेवोपदेष्ट्रे नम स्वाहा । ७९९ । ॐ ह्रीं द्विजराजसमुद्भवाय नमः स्वाहा । ८०० ।

ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः स्वाहा । ८०१ ॐ ह्रीं दशबलाय नमः स्वाहा । ८०२ । ॐ ह्रीं शाक्याय नमः स्वाहा । ८०३ । ॐ ह्रीं षडभिज्ञाय नम स्वाहा । ८०४ । ॐ ह्रीं तथागताय नम स्वाहा ।८०५। ॐ ह्रीं समन्तभद्राय नमः स्वाहा । ८०६ । ॐ ह्रीं सुगताय नमः स्वाहा । ८०७ । ॐ ह्रीं श्रीवनाय नम स्वाहा । ८०८ । ॐ ह्रीं भूतकोटिदिशे नम स्वाहा । ८०९ । ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः स्वाहा । ८१० ।

१—सिंहिका-तीर्थंकर-जननीस्तस्यास्तनय । सिंहिकातनयो राहुरिति वा-पापकर्मसु क्रूरचित्तत्वात्। २—छाया-शोभा नन्दयति-वर्धयति, अशोकतरुछायायालोकनन्दयति । ३—बृहता-नरेन्द्रसुरेन्द्रमुनीन्द्राणा पतिः । ४—पूर्वदेवानाम्-असुराणामुपदेष्टा-सल्लेशनिषेधकः, पूर्वैश्चतुर्दशभिः—श्रुतार्थविशेषैरुपदेष्टा, पूर्वं-प्रथमदेवानामिन्द्रियाणा मुपदेष्टा—तद्विषय-निवर्तकः, गणधराणामुपदेष्टा इतिवा । ५—द्विजाना राजा च समुत्-सहर्षो भवोजन्म यस्य, द्विजेषुराजन्ते तानि सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तेभ्य. समुद्भवो यस्य-रत्नत्रययोनिः—अयोनिसंभवः इत्यर्थः । ६—दशाना धर्माणामुत्तमक्षमादीना बलं यस्य, दः—दया बोधश्चतेन शवलः-समर्थः । ७—शक्नोतीति शकः-तीर्थंकरपिता तस्यापत्यम् , शम्—अनन्तसुखम् आकः केवलज्ञानंतयोर्नियुक्तः । ८—षट्-द्रव्यसज्ञान् अभितो जानाति । ९—तथा-सत्यभूतं गतं-ज्ञान यस्य । १०—भूताना प्राणिना कोटीः दिशति, भूतानामतीतभवान्तराणा कोटीः दिशति, भूतान-जीवान् कोटयन्तिकुटिलान् कुर्वन्ति-मिथ्यात्वं कारयन्ति ते जैमिनिकपिलादयस्तान् दिशति, भूतकोटीना विश्रामस्थान, भूताना-जीवाना कोटिं-परमप्रकर्षं गुणातिशयं दिशति ।



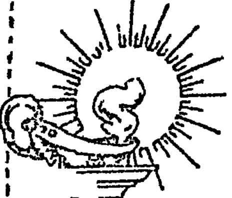


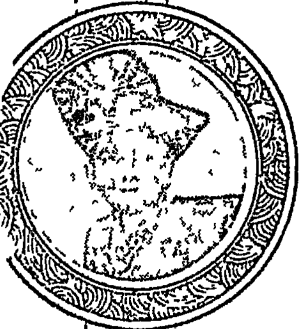


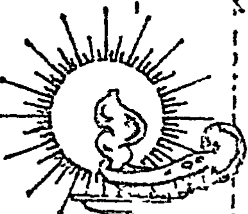
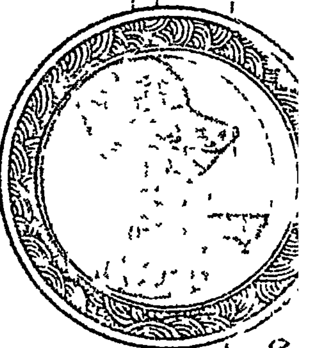
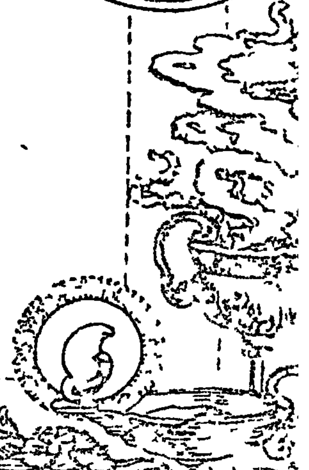


ॐ ह्रीं मारजिते नमः स्वाहा । ८११ । ॐ ह्रीं शाक्ले नम. स्वाहा । ८१२ । ॐ ह्री दाणिकैंकसुलक्षणाय नम. स्वाहा ।८१३। ॐ ह्रीं बोधिसत्त्वाय नमः स्वाहा ।८१४। ॐ ह्रीं निर्विकल्पदर्शनाय नमः स्वाहा ।८१५। ॐ ह्रीं अद्वैयवादिने नमः स्वाहा । ८१६ । ॐ ह्रीं महाकृपालवे नमः स्वाहा । ८१७ । ॐ ह्रीं नैरात्म्यवादिने नमः स्वाहा । ८१८ । ॐ ह्रीं संतानशाँसकाय नमः स्वाहा । ८१९ । ॐ ह्रीं सामन्य-लक्षणचणाय नमः स्वाहा । ८२० । ॐ ह्रीं पंचस्कन्धमयात्मदृशे नम· स्वाहा । ८२१ । ॐ ह्री भूतार्थ-भावनासिद्धाय नमः स्वाहा । ८२२ । ॐ ह्रीं चतुर्भूमिकशासनाय नमः स्वाहा । ८२३ । ॐ ह्री चतुरार्य सत्यवक्त्रे नमः स्वाहा । ८२४ । ॐ ह्रीं निराश्रयाचिते नमः स्वाहा । ८२५ । ॐ ह्री अँन्वयाय नमः स्वाहा । ८२६ । ॐ ह्रीं योर्गाय नमः स्वाहा । ८२७ । ॐ ह्री वैशेपिकाय नमः स्वाहा । ८२८ । ॐ ह्रीं तुच्छाभावभिदे नमः स्वाहा । ८२९ । ॐ ह्री पट्पदार्थदृशे नमः स्वाहा । ८३० । ॐ ह्रीं नैयायिकाय नमः

१—सर्वे पदार्था एकस्मिन् क्षणे उत्पादव्ययध्रौवालक्षणेनयुक्ताः क्षणिकाश्च इति मतं यस्य, क्षणिक एकमद्वितीय शोभन लक्षणं यस्येतिवा २—निर्विकल्प दर्शनं यस्य, निर्विकल्पानि दर्शनानि–अपरमतानि यस्य। ३—मोक्षप्राप्तये रागद्वेषयोर्द्वयन वदति, "बन्धमोक्षावितिद्वेषौ कर्मात्मानौ शुभाशुभौ, इति द्वैताश्रितावुद्धिरसिद्धिरभिधीयते"। ४—नीरस्य-जलस्य भावो नैर–तत्र उपलक्षणात्स्थावरेपु शक्तिरूपतया केवलज्ञानादिलक्षण आत्मास्ति–इति वदतीति। ५—अनादि सतानवान् जीव इति शास्ति। ६—निश्चयनयेन सामान्यलक्षणेचणः—विचक्षणः। ७—अनु–पृष्ठतोलग्न. अयः पुण्य यस्य। ८—ध्यानयोगात् मनोवाकाययोगाद्वा योगः, याः सूर्यचन्द्रादयः उः–शकर एते य गच्छन्तिइतिवा। ९—विशेपेण–केवलज्ञानेन (ऐन्द्रियजानस्यसामान्यात्मकत्वात्) ससृष्टो भगवान् वैशेपिकः। १०-न्याये–स्याद्वादे नियुक्तः।

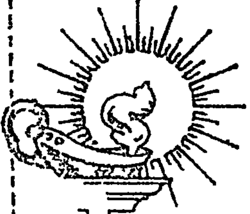




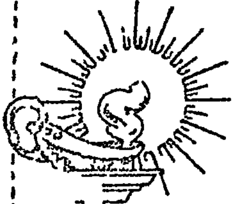
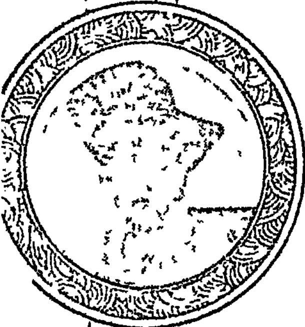





स्वाहा । ८३१ । ॐ ह्रीं पोडशार्थवादिने नमः स्वाहा । ८३२ । ॐ ह्रीं पंचार्थवर्णकाय नमः स्वाहा । ८३३ । ॐ ह्रीं ज्ञानान्तराव्यक्तबोधाय नमः स्वाहा ।८३४। ॐ ह्रीं समवायवशार्थभिदे नमः स्वाहा ।८३५। ॐ ह्रीं भुक्तैकसाध्यकर्मान्ताय नमः स्वाहा । ८३६ । ॐ ह्रीं निर्विशेषगुणामृताय नमः स्वाहा । ८३७ । ॐ ह्रीं साख्यार्य नमः स्वाहा । ८३८ । ॐ ह्रीं समीक्ष्याय नम. स्वाहा । ८३९ । ॐ ह्रीं कपिलाय नमः स्वाहा । ८४० । ॐ ह्रीं पंचविंशतितत्त्वविदे नमः स्वाहा । ८४१ । ॐ ह्रीं व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानिते नमः स्वाहा । ८४२ । ॐ ह्रीं ज्ञानचैतन्यभेददृशे नमः स्वाहा । ८४३ । ॐ ह्रीं अस्वसंविदितज्ञानवादिने नमः

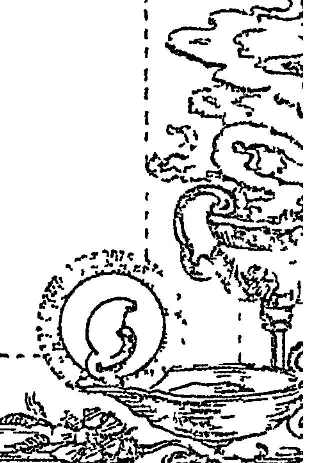
१— दर्शनविशुद्ध्यादीन् शोडपार्थान् यो वदति । २—कुदादिकः शुभ्र' नीलमण्यादिः कृष्ण' वन्धूकपुष्पादी रक्तः प्रियंगुपरिणतादिर्नीलः सततकनकच पचमोऽर्थ इति पंचार्थः समानो वर्णो यस्य, पचानामर्थानामस्तिकायाना वर्णक' प्रतिपादकः, पचाना नैयायिकादिमिथ्यादर्शनानामपिवर्णक. । ३—भुक्तेन–अनुभवनेन एकेन–अद्वितीयेन साध्य' कर्मणामन्तः स्वभावो यस्य । यद्वा अनादौ ससारे कर्मफलं भुजानो जीव' कदाचित्सामग्रीविशेष प्राप्य कर्मणामन्त करोतीति मत यस्य । ४—तीर्थंकराणामन्येपाच्चकेवलिना निर्विशेषा गुणाएव अमृतं यस्य जरामरणादिनिवारकत्वात् । ५—सख्यायानियुक्त' साख्यः " स साख्यो यः प्रसंख्यावान् " इति निरुक्तिः सख्याते प्रथमोमध्यमोऽन्त्यो भगवानेव । ६—सम्यक्–ईक्षितु योग्य', समिनामीक्ष्य इति वा । ७—कपिरिव कपि'–मनोमर्कटस्तलाति–कषायेपुगच्छन्त निश्चलीकरोति यः, क–परमंब्रह्मस्वरूपमपिलाति गृह्णाति इति वा अपेरलोप' ८—अहिंसादिमहाव्रतेपुप्रत्येकस्यपच२इति मिलितः पंचविशतिभावना', त्रयोदशक्रिया (पडावश्यकानि पंच नमस्कारा निसही असहीचेति) द्वादश तपासि इतिवा, तासा पचविंशतिक्रियाणा वा य. तत्व वेति । ९—व्यक्ता. ससारिणः अव्यक्ताः केवलज्ञानगम्याः ज्ञा जीवातेषा विशिष्ट ज्ञान यस्य । १०—चेतना त्रिविधा–ज्ञानकर्मकर्मफलभेदात्, तत्र ज्ञानस्य चैतन्यस्यच यः भेद पश्यति, उभयत्र सामान्यविशेषादिकृतं भेदं यः पश्यतीत्यादि वा । ११—न स्वो विदितो येन (निर्विकल्पसमाधिदशापन्नेनज्ञानेन) एवंभूत ज्ञान यः वदति ।





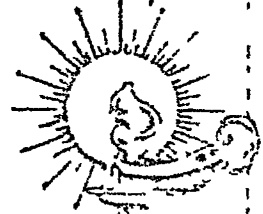




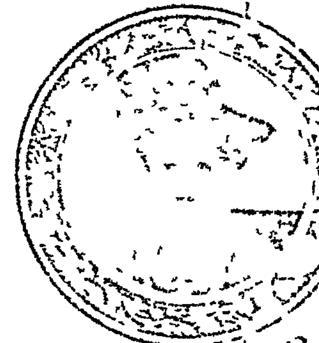




स्वाहा । ८४४ । ॐ ह्रीं सत्कार्यवादसात् नमः स्वाहा । ८४५ । ॐ ह्री त्रिप्रमाणाय नमः स्वाहा । ८४६ । ॐ ह्री अध्यक्षप्रमाणाय नमः स्वाहा । ८४७ । ॐ ह्री स्याद्वाहंकारिकाक्षदिशे नम॰ स्वाहा । ८४८ । ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः स्वाहा । ८४९ । ॐ ह्रीं आत्मने नमः स्वाहा । ८५० । ॐ ह्री पुरुषाय नम॰ स्वाहा । ८५१ । ॐ ह्री नराय नमः स्वाहा । ८५२ । ॐ ह्री ने नमः स्वाहा । ८५३ ॐ ह्रीं चेतनाय नमः स्वाहा । ८५४ । ॐ ह्रीं पुसे नमः स्वाहा । ८५५ । ॐ ह्री अकर्त्रे नम॰ स्वाहा । ८५६ । ॐ ह्री निर्गुणाय नमः स्वाहा । ८५७ । ॐ ह्री अमूर्ताय नम॰ स्वाहा । ८५८ । ॐ ह्रीं भोक्त्रे नम. स्वाहा । ८५९ । ॐ ह्रीं सर्वगताय नम. स्वाहा । ८६० । ॐ ह्री अक्रियाय नमः स्वाहा । ८६१ । ॐ ह्री द्रष्ट्रे नम॰ स्वाहा । ८६२ । ॐ ह्री तटस्थाय नमः स्वाहा । ८६३ । ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः स्वाहा । ८६४ । ॐ ह्री ज्ञात्रे नमः स्वाहा । ८६५ । ॐ ह्रीं निर्बंधनाय नमः स्वाहा । ८६६ । ॐ ह्री अभवाय नमः स्वाहा । ८६७ । ॐ ह्री बहिर्विकाराय नमः स्वाहा । ८६८ । ॐ ह्रीं निर्मोक्षाय नमः स्वाहा । ८६९ । ॐ ह्री प्रधानाय नम॰ स्वाहा । ८७० । ॐ ह्री बहुधानकाय नम. स्वाहा

१—सत् समीचीन कार्य–सवरादि लक्षण तस्य वादः शास्त्र यस्य । असत्कार्यवाद॰ सन् सत्कार्यवादोभवतीति सत्कार्यवादसात् भगवान् । सात् प्रत्ययान्तत्वेनाव्ययत्वम् । २—स्याद्वाहकारिकमक्षमात्मान य दिशति । (स्याच्छब्दपूर्वकमहमहमित्याकारेणान्तर्मुखज्ञानेन वेद्य अक्ष या दिशति ।) ३—पुरुणि–महति–इन्द्रादिपूजिते पदे शेते । ४—नृणाति–नयकरोति, न राति-न किमपि गृह्णाति प्रतिहार्येष्वपि निरतत्वात्, न रा–रमणीया यस्येतिवा । ५—नयति–समर्थतया भव्य जीव मोक्षमिति ना । ६—निश्चितोमोक्षोयस्य–स्तद्भव एव मोक्ष्यमाणः । ७—बहु–प्रचुरनिर्जरोपलक्षित धानक शुक्लध्यानम् तद्योगात् भगवानपि तथोच्यते, बहुधा–बहुप्रकारा आनकाः पटहा यत्र समवसरणे, तद्योगाद्भगवानपि तथा, इत्यादि ।

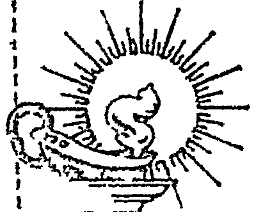






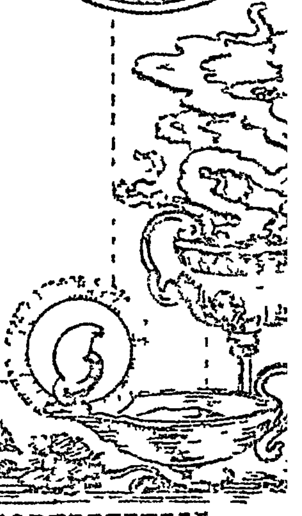
। ८७१ । ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः स्वाहा ।८७२। ॐ ह्रीं ख्यातये नमः स्वाहा ।८७३। ॐ ह्रीं आरूढप्रकृतये नमः स्वाहा । ८७४ । ॐ ह्रीं प्रकृतिप्रियाय नमः स्वाहा । ८७५ । ॐ ह्रीं प्रधानभोज्याय नमः स्वाहा । ८७६ । ॐ ह्रीं अप्रकृतये नमः स्वाहा । ८७७ । ॐ ह्रीं निरम्याय नमः स्वाहा । ८७८ । ॐ ह्रीं विकृतये नमः स्वाहा । ८७९ । ॐ ह्रीं कृतिने नमः स्वाहा । ८८० । ॐ ह्रीं मीमांसकाय नमः स्वाहा । ८८१ । ॐ ह्रीं अंतसर्वज्ञाय नमः स्वाहा । ८८२ । ॐ ह्रीं श्रुतिपूताय नमः स्वाहा । ८८३ । ॐ ह्रीं सदोत्सवाय नमः स्वाहा । ८८४ । ॐ ह्रीं परोक्षज्ञानवादिने नमः स्वाहा । ८८५ । ॐ ह्रीं इष्टपावकाय नमः स्वाहा । ८८६ । ॐ ह्रीं सिद्धकर्मकाय नमः स्वाहा । ८८७ । ॐ ह्रीं चौर्वाकाय नमः स्वाहा

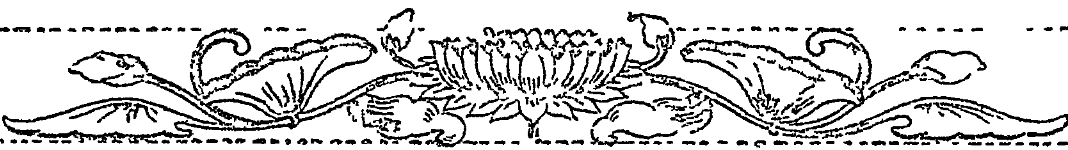
१—प्रकृत्या-त्रैलोक्यलोकहितकारिणी कृति. तीर्थप्रवर्तन यस्येत्यादि । २—ख्यान-प्रकृष्ट कथन-यथावस्तु-स्वरूपनिरूपण ख्याति, आविष्टलिंगमिदं नाम । ३—आ-समतात् रूढा-त्रिभुवन प्रसिद्धा प्रकृति –तीर्थंकरनामकर्म यस्य । ४—प्रकृत्या-स्वभावेन प्रिय., प्रकृतीना-सर्वलोकाना प्रिय ,-त्रिजगद्वल्लभ. । ५—प्रकृष्ट धानमं तागन्वितन भोज्यमास्वा यस्य । ६—दुष्टाना त्रिषष्ठिप्रकृतीनाक्षयात् अघातिप्रकृतीना न सत्त्वेऽप्यसमर्थत्वात् संपा प्रभुत्वाद्वा भगवानप्रकृति. । ७—विशेषेण रम्यः । ८—विशिष्टा कृतिर्यस्य, विनष्टा कृति. कर्म यस्येति वा कृतकृत्य इत्यर्थ. । ९—स्वसमयपरसमय-तत्वानि मीमांसते इति मीमांसक (षड्द्रव्याणि पंचास्तिकाया. मनतत्त्वानि नवपदार्था इतिस्वनमयतत्वानि, नैयायिकमते प्रमाणप्रमेयादिषोडशतत्वानि–बौद्धमते चत्वार्यार्यसत्यनामानितत्त्वानि–काणादे–द्रव्यगुणादिषट् तत्त्वानि–जैमिनीये चोदना-लक्षणो धर्मस्तत्त्व, सांख्ये प्रकृत्यादिपंचविंशतितत्त्वानि–नास्तिके चत्वारि भूतानि)। १०—सर्वज्ञाः सर्व-विद्वान्सः । अस्ता.-प्रत्युक्ताः सर्वज्ञाः–सर्वविद्वान्सः–कपिलकणचरादयो येन । ११—इन्द्रियाणा पर परोक्ष केवलज्ञान वदतीति । १२—इष्टाः-अभीष्टाः पावका-पवित्रताकारका. गणधरादयो देवा यस्य, अथवा भगवानेव. सन् पावक. । १३—सिद्ध-समाप्तिं गतं कर्म-क्रिया-चारित्र यस्य । १४—चारु-मलापहरः—सर्वमलचितानदकारको वा आक.-केवलज्ञान यस्य (अकनमाक. –भ्वादिगणे गत्यर्थकादक् धातो.) ।











। ८८८ । ॐ ह्रीं भौतिकज्ञानाय नम. स्वाहा । ८८९ । ॐ ह्रीं भूताभिव्यक्तचेतनाय नम॰ स्वाहा । ८९० । ॐ ह्रीं प्रत्यक्षैकप्रमाणाय नम. स्वाहा ।८९१। ॐ ह्रीं अस्तपरलोकाय नमः स्वाहा ।८९२। ॐ ह्रीं गुरुश्रुतये नमः स्वाहा । ८९३ । ॐ ह्रीं पुरंदरविद्धकर्णाय नमः स्वाहा ।८९४। ॐ ह्रीं वेदान्तिने नम. स्वाहा ।८९५। ॐ ह्रीं संविदद्वयिने नम. स्वाहा ।८९६। ॐ ह्रीं शब्दाद्वैतिने नमः स्वाहा ।८९७। ॐ ह्रीं स्फोटवादिने नमः स्वाहा । ८९८ । ॐ ह्रीं पाषंडघ्नाय नम॰ स्वाहा । ८९९ । ॐ ह्रीं नयौघयुजे नमः स्वाहा । ९०० ।

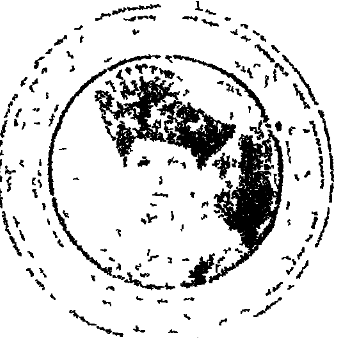
ॐ ह्रीं अन्तकृते नमः स्वाहा । ९०१ । ॐ ह्रीं पारकृते नमः स्वाहा । ९०२ । ॐ ह्रीं तीरप्राप्ताय नमः स्वाहा । ९०३ । ॐ ह्रीं परेतमःस्थिताय नमः स्वाहा । ९०४ । ॐ ह्रीं त्रिदंडिने[५] नमः स्वाहा । ९०५ । ॐ ह्रीं दडितारातये नमः स्वाहा । ९०६ । ॐ ह्रीं ज्ञानकर्मसमुच्चयिने[६] नमः स्वाहा । ९०७ । ॐ ह्रीं संहृतध्वनये नमः स्वाहा । ९०८ । ॐ ह्रीं उत्सन्नयोगाय नमः स्वाहा । ९०९ । ॐ ह्रीं सुप्तार्णवोपमाय[७] नमः स्वाहा । ९१० । ॐ ह्रीं योगस्नेहापहाय नमः स्वाहा । ९११ । ॐ ह्रीं योगकिट्टिनिर्लेपनोद्यताय नमः स्वाहा । ९१२ । ॐ ह्रीं स्थितस्थूलवपुर्योगाय नम॰ स्वाहा । ९१३ । ॐ ह्रीं गीर्मनोयोगकार्श्यकाय

१—भौतिक समवसरणादिविभूतियुक्त ज्ञान यस्य। २—भूतेपु अभिव्यक्ता प्रकटीकृताचेतना येन। ३—सर्वमपि पुद्गलद्रव्य शब्द एवेति यो वदति। शक्तिरूपतयाशब्दहेतुत्वात्तस्य। ४—स्फुटति–प्रकटीभवति केवलज्ञान यस्मादिति शुद्धबुद्धैकस्वभावतयात्मानमेव यो मोक्षहेतुतया वदति। ५—त्रीणि शल्यानि (योगत्रय वा) दण्डयति। ६—ज्ञानस्य यथाख्यातचारित्रस्य च समुच्चयो विद्यते यस्य। ७—सुप्तः–कल्लोलरहितः सचासौ अर्णवः–समुद्रस्तस्योपमा यस्य मनोवाक्कायव्यापाररहितत्वात्।



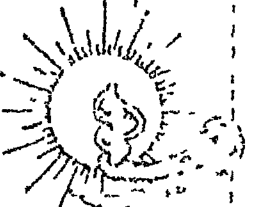


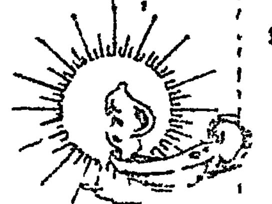


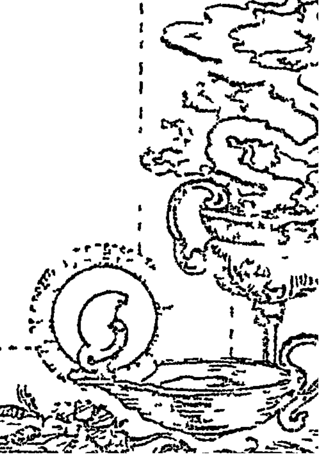



नमः स्वाहा । ९१४ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मवाक्चित्तयोगस्थाय नमः स्वाहा । ९१५ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मीकृतवपुःक्रियाय नमः स्वाहा । ९१६ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मकायक्रियास्थायिने नमः स्वाहा । ९१७ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मवाक्चित्तयोगघ्ने नमः स्वाहा । ९१८ । ॐ ह्रीं ऐकदण्डिने नमः स्वाहा । ९१९ । ॐ ह्रीं परमहंसाय नमः स्वाहा । ९२० । ॐ ह्रीं परमसंवराय नमः स्वाहा । ९२१ । ॐ ह्रीं नैष्कर्म्यसिद्धाय नमः स्वाहा । ९२२ । ॐ ह्रीं परमनिर्जराय नमः स्वाहा । ९२३ । ॐ ह्रीं प्रज्वलत्प्रभाय नमः स्वाहा । ९२४ । ॐ ह्रीं मोघकर्मणे नमः स्वाहा । ९२५ । ॐ ह्रीं त्रुटत्कर्मपाशाय नमः स्वाहा । ९२६ । ॐ ह्रीं शैलेश्यलंकृताय नमः स्वाहा । ९२७ । ॐ ह्रीं एकाकाररसास्वादाय नमः स्वाहा । ९२८ । ॐ ह्रीं विश्वाकाररसाकुलाय नमः स्वाहा । ९२९ । ॐ ह्रीं अजीवते नमः स्वाहा । ९३० । ॐ ह्रीं अमृताय नमः स्वाहा । ९३१ । ॐ ह्रीं अजाग्रते नमः स्वाहा । ९३२ । ॐ ह्रीं असुप्ताय नमः स्वाहा । ९३३ । ॐ ह्रीं शून्यतामयाय नम. स्वाहा । ९३४ । ॐ ह्रीं प्रेयसे नम स्वाहा । ९३५ । ॐ ह्रीं अयोगिने नमः स्वाहा । ९३६ । ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षगुणाय नमः स्वाहा । ९३७ । ॐ ह्रीं अगुणाय नमः स्वाहा । ९३८ । ॐ ह्रीं नि.पीतानन्तपर्याय नमः स्वाहा । ९३९ । ॐ ह्रीं अविद्यासंस्कारनाशकाय नम. स्वाहा । ९४० ।

१—एक -असहाय· दण्डः-सूक्ष्मकाययोगो यस्य । २—मोघानि-फलदानासमर्थानि कर्माणि-असद्वेद्यादीनि यस्य । ३—जीवनाधार प्राणवायुरहितत्वात् । ४—न जागर्ति-योगनिद्रास्थितत्वात् । ५—आत्मस्वरूपैकावधानत्वात् यो न मोहनिद्रा प्राप्त. । ६—अतिशयेन प्रियः । ७—न विद्यन्ते गुणाः-विभावपरिणतिरूपारागादयो यस्य । ८—नि पीताः केवलज्ञाने प्रवेशिता अनन्तपर्याया येन । ९—अविद्या अज्ञानं तस्य संस्कारः अनुभवन तस्य नाशकः । (अविद्यानाशकाः संस्कारा अपि द्वीचत्वारिंशद्विज्ञेयाः)।

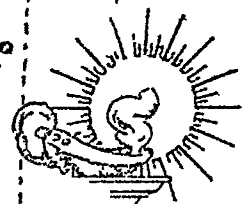


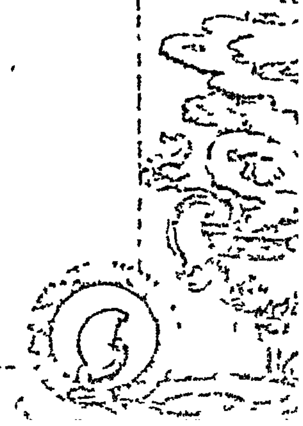


ॐ ह्रीं बृंद्राय नमः स्वाहा । ९४१ । ॐ ह्रीं निर्वचनीयाय नमः स्वाहा । ९४२ । ॐ ह्रीं अणवे[3] नमः स्वाहा । ९४३ । ॐ ह्रीं अणीयसे नमः स्वाहा । ९४४ । ॐ ह्रीं अनणुप्रियाय नमः स्वाहा । ९४५ । ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नमः स्वाहा । ९४६ । ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः स्वाहा । ९४७ । ॐ ह्रीं स्थिराय नमः स्वाहा । ९४८ । ॐ ह्रीं निष्ठाय नमः स्वाहा । ९४९ । ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः स्वाहा । ९५० । ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ९५१ । ॐ ह्रीं सुनिष्ठिताय नमः स्वाहा । ९५२ ॐ ह्रीं भूतार्थशूराय नमः स्वाहा । ९५३ । ॐ ह्रीं भूतार्थदूराय नमः स्वाहा । ९५४ । ॐ ह्रीं परमनिर्गुणाय नमः स्वाहा । ९५५ । ॐ ह्रीं व्यवहार-सुषुप्ताय नमः स्वाहा । ९५६ । ॐ ह्रीं अतिजागरूकाय नमः स्वाहा । ९५७ । ॐ ह्रीं अतिसुस्थिताय नमः स्वाहा । ९५८ । ॐ ह्रीं उदितोदितमाहात्म्याय नमः स्वाहा । ९५९ । ॐ ह्रीं निरुपाधये नमः स्वाहा । ९६० । ॐ ह्रीं अकृत्रिमाय नमः स्वाहा । ९६१ । ॐ ह्रीं अमेयमहिम्ने नमः स्वाहा । ९६२ । ॐ ह्रीं अत्यन्तशुद्धाय नमः स्वाहा । ९६३ । ॐ ह्रीं सिद्धिस्वयंवराय नमः स्वाहा । ९६४ । ॐ ह्रीं सिद्धानुजाय

१—केवलज्ञानापेक्षया लोकालोक व्याप्य व्याप्नोति स, समुद्घातापेक्षया लोकप्रमाण यो वर्द्धते स। २—निर्वक्तुं-निरुक्तिमानेतु शक्यः, निर्गतंवचनीयमपकीर्तिर्यस्येति वा। ३—अणति-शब्द करोति इति अणुः, अणुसदृशत्वाद् वा अणु. —अविभागित्व परमसूक्ष्मत्वाद्योगिनामप्यगम्यत्व सादृश्यम्। ४—अनणवो महान्तः इन्द्रादयस्तेषा प्रियोऽभीष्टः। अथवा न अणुः—पुद्गलकर्माणुः प्रियो यस्य परमनिर्जरकत्वात्। ५—अतिशयेन प्रियः-प्रेष्ठः ६—अतिशयेन स्थिरः स्थेयान्। ७—नि-नितरामतिशयेन वा तिष्ठति। ८—भूता-अतीता ये अर्थाः—पचेन्द्रियविषयास्तेभ्योदूरः। ९—निर्गताः गुणा रागद्वेषादयोऽशुद्धपरिणामा यस्मात्, परमश्चासौ निर्गुणश्चेति परा उत्कृष्टा मा लक्ष्मी यस्य—निश्चिता निर्धारिता वा गुणाः केवलज्ञानादयो यस्य-परमश्चासौ निर्गुणश्चेति।



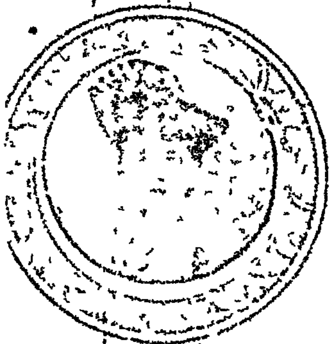


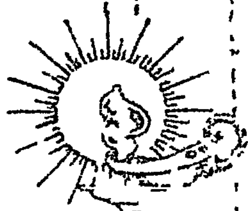
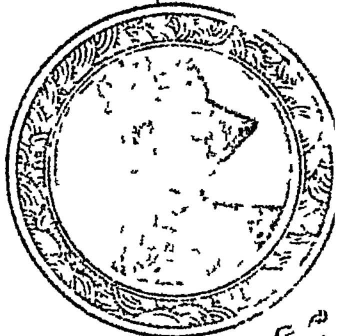
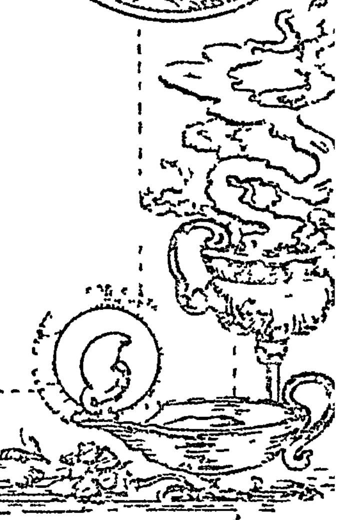


नमः स्वाहा । ९६५ । ॐ ह्रीं सिद्धपुरीपाथाय नमः स्वाहा । ९६६ । ॐ ह्रीं सिद्धगणातिथये नमः स्वाहा । ९६७ । ॐ ह्रीं सिद्धसंगोन्मुखाय नमः स्वाहा । ९६८ । ॐ ह्रीं सिद्धालिंग्याय नमः स्वाहा । ९६९ । ॐ ह्रीं सिद्धोपगूहकाय नमः स्वाहा । ९७० । ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः स्वाहा । ९७१ । ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रशीलाश्वाय नमः स्वाहा । ९७२ । ॐ ह्रीं पुण्यसंवलाय नमः स्वाहा । ९७३ । ॐ ह्रीं वृताग्रयुग्याय नमः स्वाहा । ९७४ । ॐ ह्रीं परमशुक्लेश्याय नमः स्वाहा । ९७५ । ॐ ह्रीं अपचारकृते नमः स्वाहा । ९७६ । ॐ ह्रीं क्षेपिष्ठाय नमः स्वाहा । ९७७ । ॐ ह्रीं अन्त्यक्षणसखाय नमः स्वाहा । ९७८ । ॐ ह्रीं पंचलघ्वक्षरस्थितये नमः स्वाहा । ९७९ । ॐ ह्रीं द्विसप्ततिप्रकृत्यासिने नमः स्वाहा । ९८० । ॐ ह्रीं त्रयोदशकलिप्रणुते नमः स्वाहा । ९८१ । ॐ ह्रीं अवेदाय नमः स्वाहा । ९८२ । ॐ ह्रीं अयाजकाय नमः स्वाहा । ९८३ । ॐ ह्रीं अयज्याय नमः स्वाहा । ९८४ । ॐ ह्रीं अयाज्याय नमः स्वाहा । ९८५ । ॐ ह्रीं अनग्निपरिग्रहाय नमः स्वाहा । ९८६ ।

१—अश्नुवते-क्षणेन स्वामिनमभीष्टस्थान नयन्तीति अश्वाः अष्टादशसहस्रशीलान्येव अश्वा यस्य। २—पुण्य सद्वेद्यादि एव सबल—पथ्यदन यस्य। ३—वृत्तं चारित्रमग्र मुख्य युग्यं वाहन यस्य। ४—अपचरणमपचारो मारण यः कर्मशत्रूणा मारणाध्यानमन्त्रविषप्रयोगेण मारणमकरोत्। ५—अतिशयेन क्षिप्रः-शीघ्रतर. क्षणमात्रेण त्रैलोक्य शिखरगामित्वात्। ६—अन्त्यक्षण.—मसारस्यपश्चिमः समयस्तस्य सखा-सहगामुकः अन्त्यक्षणः सखा-मित्र यस्य। ७—न याजकः-यो निजा पूजा न कारयति। ८—यष्टु शक्यो यज्यः न यज्यः अयज्यः-अलक्ष्यरूपत्वात्स्वामिनः। ९—इज्यते इति याज्य. न याज्यः अयाज्यः। शक्यार्थे विना सामान्ये ध्यण्। हेतुस्तु अलक्ष्यरूपत्वमेव। १०—कर्मसमिधा भस्मीकरणे न अग्ने परिग्रहो यस्य, अग्निश्च परिग्रहश्च (स्त्रीच) इति अग्निपरिग्रहौ न अग्नि परिग्रहौ यस्य। अन्यर्षीणामग्ने भार्यायाश्च परिग्रहो भवति। भगवास्तु न तथा केवल ध्यानाग्निनिर्दग्धकर्मेन्धनत्वात्तस्य।



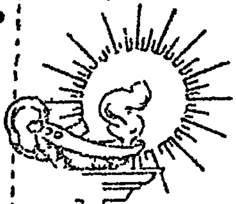
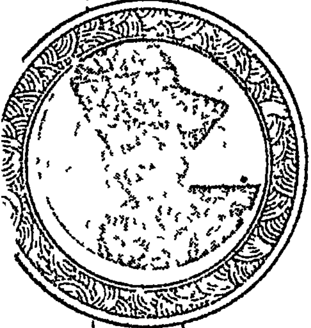
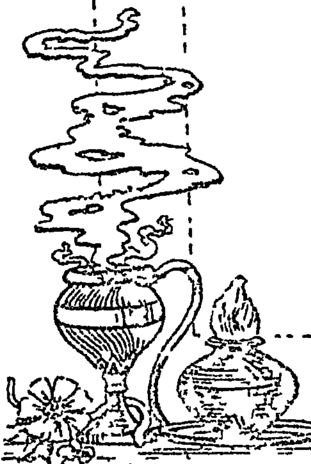


ॐ ह्रीं अनग्रिहोत्रिणे नमः स्वाहा । ९८७ । ॐ ह्रीं परमनिःस्पृहाय नमः स्वाहा । ९८८ । ॐ ह्रीं अत्यन्तनिर्दयाय नमः स्वाहा । ९८९ । ॐ ह्रीं अशिष्याय नमः स्वाहा ९९० । ॐ ह्रीं अशासकाय नमः स्वाहा । ९९१ । ॐ ह्रीं अदीक्ष्याय नमः स्वाहा । ९९२ । ॐ ह्रीं अदीक्षकाय नमः स्वाहा । ९९३ । ॐ ह्रीं अदीक्षिताय नमः स्वाहा । ९९४ । ॐ ह्रीं अक्षमाय नमः स्वाहा । ९९५ । ॐ ह्रीं अगम्याय नमः स्वाहा । ९९६ । ॐ ह्रीं अगमकाय नमः स्वाहा । ९९७ । ॐ ह्रीं अरम्याय नमः स्वाहा । ९९८ । ॐ ह्रीं अरमकाय नमः स्वाहा । ९९९ । ॐ ह्रीं ज्ञाननिर्भगाय नमः स्वाहा । १००० ।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धाय नमः स्वाहा । १००१ । ॐ ह्रीं आभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नमः स्वाहा । १००२ । ॐ ह्रीं व्यावृत्तिरूपाय नमः स्वाहा । १००३ । ॐ ह्रीं साधुसमाधये नमः स्वाहा । १००४ । ॐ ह्रीं सन्मार्गप्रभावकाय नमः स्वाहा । १००५ । ॐ ह्रीं उत्तमक्षमारूपाय नमः स्वाहा । १००६ । ॐ ह्रीं मार्दवाय नमः स्वाहा । १००७ । ॐ ह्रीं आर्जवाय नमः स्वाहा । १००८ । ॐ ह्रीं शुचिस्वरूपाय नमः स्वाहा । १००९ । ॐ ह्रीं सत्याय नमः स्वाहा । १०१० । ॐ ह्रीं संयमाय नम स्वाहा । १०११ । ॐ ह्रीं तपाय नमः स्वाहा । १०१२ । ॐ ह्रीं त्यागाय नमः स्वाहा । १०१३ । ॐ ह्रीं आकिञ्चन्याय

१—परमकारुणिकत्वाद्भागवतः कथ निर्दयत्वमितिचेत् परिह्रियते–अतिगतो–विनष्टोऽन्तो विनाशो यस्येत्यत्यन्तः–निश्चिता दया (सगुणनिर्गुण प्राणिवर्गरक्षणलक्षणा करुणा) यस्येति निर्दयः–अत्यन्तश्चासौ निर्दयश्चेत्यत्यन्तनिर्दयः । अथवा अति–अतिशयेन अन्ते–अन्तके यमे निर्दयः । यद्वा अतिशयेन अन्त विनाश प्राप्ता निर्दया यस्मात् । अथवा–अतिशयेन अन्ते मोक्षगमने निश्चिता दया यस्य । २—दर्शनविशुद्ध्यादिसमन्तभद्रान्तानि षोडशनामानि पूजापाठे उपरिष्टात् संग्रहीतानि ।

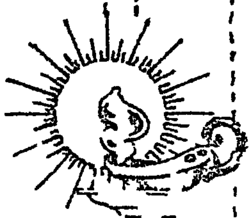




नमः स्वाहा । १०१४ । ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याय नमः स्वाहा । १०१५ । ॐ ह्रीं समन्तभद्राय नमः स्वाहा । १०१६ । ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नमः स्वाहा । १०१७ । ॐ ह्रीं द्रव्यसिद्धाय नमः स्वाहा १०१८ । ॐ ह्रीं अदेहाय नमः स्वाहा । १०१९ । ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः स्वाहा । १०२० । ॐ ह्रीं ज्ञानैकचिते नमः स्वाहा । १०२१ । ॐ ह्रीं जीवघनाय नमः स्वाहा । १०२२ । ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः स्वाहा । १०२३ । ॐ ह्रीं लोकाग्रगामुकाय नमः स्वाहा । १०२४ ।

परिमलविमलाढ्यैरिन्दुकाश्मीरमिश्रै–
निखिलमिलितद्रव्यैश्चन्दनैर्घ्राणपेयैः ।
शिवसदननिविष्टं नाथनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥ चन्दनम् ॥

सुरभितहरिताग्रैर्निस्तुषैःशालिजातैः,
रजतसदृशवर्णैरक्षतैरक्षतांगैः ।
शिवसदननिविष्टं नाथनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥ अक्षतान् ॥

सरसिजकुसुमौघैः गिञ्जयत्षट्पदौघैः,
वरनकुलसुपुष्पैः वाह्लिभूजातजातैः ।





शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ॥

रजतगिरिनिकाशैः शारदाब्जोपमानैः,
चरुभिरमृतमिश्रैर्वाष्पपूरैरुदारैः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ॥

रविभिरिवसुदीप्तैः स्वर्णकान्तैः प्रदीपैः,
रविकुकुभविलोपि त्रासितं यैस्तमौघम् ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥ दीपम् ॥

सुरभिरचितगंधै र्व्योमनीव्याप्तधूपैः
मिलितसुरभिद्रव्यैर्नासिकाप्रीणयद्भिः ।
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥ धूपम् ॥





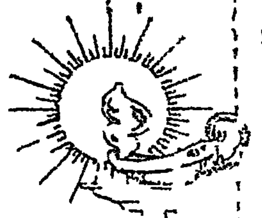


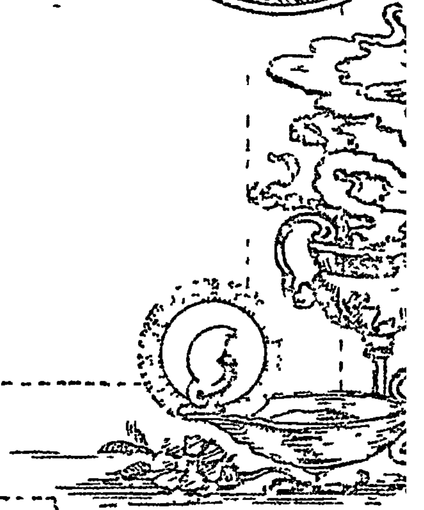
रुचिरकनकवर्णैश्चोचमोचैः फलौघै-
रभिनवफलपर्कैरूर्जितं मोदयद्भिः ।
शिवसदननिविष्टं नागनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥ फलम् ॥

वरजलफलपुष्पैश्चन्दनैरक्षतौघै,—
र्निरचितकृतभक्त्यायुक्तपुष्पांजलीभिः ।
शिवसदननिविष्टं नाग्रनन्तं प्रमुक्तम्,
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

" ३० ह्रीं अ सि आ उ सा नमः " अतिमत्रेणाष्टोत्तरशतप्रमाणं जाप्यदेयम्.

इत्थं सिद्धमुपास्य शर्मसहितं संसारत्रासापहं,
नोद्रव्याशुभभावकर्मकलितं सन्नव्यपर्यायदम् ।
योऽध्यायेत्फलमश्नुते शिवमयं सौमं स हित्वाऽशिवम्,
संभुक्त्वाखिलमंडलेशविबुधस्वामिस्थितिं सर्वतः ॥ १० ॥ पूर्णार्घम् ॥





अथ जयमाला ।

त्रिभुवनपतिपूज्यं पुण्यपापादिमुक्तं,
विगतकलुपभावं छिन्नसंसारभावम् ।
जगतिपतिसुसेव्यं संयजे भक्तिपूर्वम्,
वरशिवसुगुणं तं लोकमूर्धावभासम् ॥ १ ॥

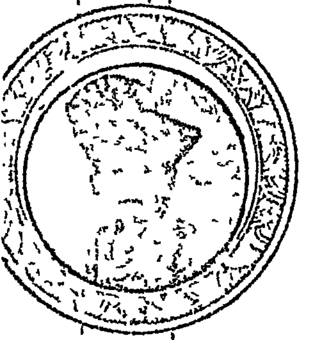
अपारजवंजवजीवनकर्मप्रभेदविदारणकेशरिधर्म ।
त्रिलोकशिरोयुतपुण्यविबुद्ध महासुखमग्नमहो जयरिद्ध ॥ २ ॥

अखण्डितचिन्मयशांतिकरण्ड घनैकपरोन्नतशक्तिसुपिंड ।
समुद्भवभीतिविमुक्त समृद्ध, महासुखमग्नमहोजयरिद्ध ॥ ३ ॥

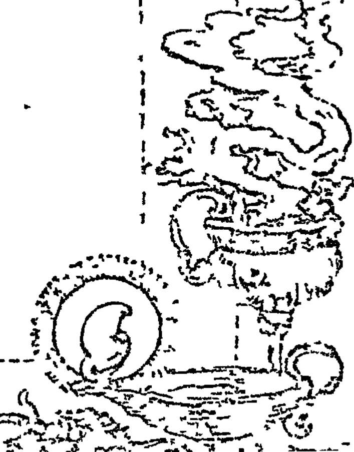
सुरासुरमानुपनागपरीज, सुदूरितदुर्भरभावसमीज ।
सुकेवलबोध सुदृष्टिसमृद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ४ ॥

दिवाकरविचन्द्रविमृष्टविकाश, महोभरभूषित सहजनिरास ।
विपत्कुलकंदकुठार विक्रुद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ५ ॥

जिनाधिपमाननिरूपितभाव सुसूक्ष्मगुणेश विरूप विराव ।
विबाध विकस्वरदूरविरुद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ६ ॥



तपांतरमूपितनिर्मलयोग, समाप्तविबाध त्रिशोक विरांग ।
प्रदुःखदवानलमेघ विरुद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ७ ॥

चिरंतनकालकलाकृतवास, भवोदधिसातनशुद्धसमास ।
मनोऽतिहृषीकाविमुक्त विशुद्ध, महामुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ८ ॥

अनादिनिरंतपदस्थितरूप, रसादिविमुक्त विविक्त विधूप ।
जरादिदशादलनार्थविशुद्ध, महामुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ९ ॥

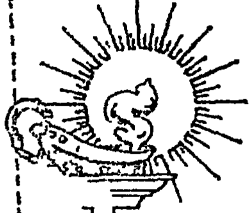
महेश सुशंकर निर्जर शक्र, मुनीन्द्र सुचन्द्र सुभास्करचक्र ।
पराच्युतभाव सुशीतलबुद्ध, महामुखमग्नमहोजयरिद्ध ॥ १० ॥

समयरससमग्रं पूर्णभाव विभावम्,
जनितशिवसुसारं यःस्मरेत् सिद्धचक्रम् ।

अखिलनरसुपूज्यं शौभचन्द्रादिसंन्यम्,
भजति शिवसुशान्ति संविभुज्याखिलार्थम् ॥ ११ ॥

इतिश्रीशुभचन्द्रकृतसहस्त्रनामगुणितपूजा संपूर्णा ॥

॥ भद्रं भूयात् ॥



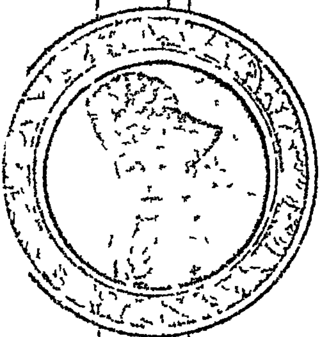




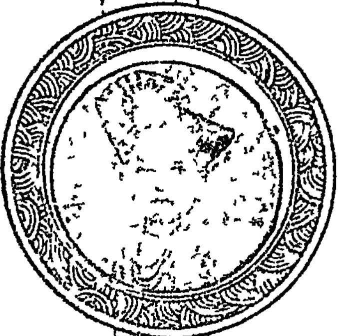
आठवीं जयमालाका अर्थ ।

मै उनकी भक्तिपूर्वक पूजा-स्तुति करता हूं जो कि त्रिभुवनके पतियों—सुरेन्द्रों व असुरेन्द्रो के द्वारापूज्य हैं, पुण्य और पाप दोनो ही से रहित है, कलुषता जिनकी नष्ट हो चुकी है, संसार पर्यायको जिन्होने छेद डाला है, जगतीपतियों नरेन्द्रोके द्वारा जो सेव्य है, उत्तम कल्याणरूप समीचीनगुणो से युक्त और लोकके शिरोभागापर प्रकाशमान है ॥ १ ॥

अपार ससारके जीवनरूप कर्मोंके समस्त भेदोंका विदारण करनेमे सिंहसमान, तीन लोकके शिखरपर विराजमान, पवित्र, विशुद्ध, महान्सुखमे निमग्न तेजःस्वरूप सिद्धपरमेष्ठिन् आप जयवन्त रहे ॥ २ ॥ कभी भी खण्डित न होनेवाली चित्स्वरूप शातिके करण्ड—पिटारे, घनरूप अद्वितीय सर्वोत्कृष्ट शक्तिके पिंड, उत्पत्तिके भयसे रहित, महासुखमे मग्न तेज· स्वरूप समृद्ध सिद्धदेव आप जयवत रहे ॥ ३ ॥ सुर असुर मनुष्य और वरणीन्द्रोके द्वारा पूज्य, दुर्भरभावोंसे दूर, भलेप्रकार पूज्य, सम्यक् केवलज्ञान दर्शनसे समृद्ध, महानसुखमें निमग्न तेज स्वरूप सिद्धभगवन् आपजयवत रहे ॥ ४ ॥ दिनमे दिखाई पड़नेवाले सूर्य और चन्द्रमाके समान या उससे भी अधिक विशुद्ध है विकाश जिनका, तेजोभारसे भूषित, स्वभावसे ही स्थिर, क्रोधरहित होकर भी विपत्तिरूपी वृक्षोके कन्द-तनेका उच्छेदन करनेके लिए कुठारके समान महान् सुखमें निमग्न तेजः स्वरूप सिद्ध परमेष्ठिन् आप जयवत रहे ॥ ५ ॥ जिनाधिप अर्हन्तके ज्ञानके द्वारा जिनके भावका निरूपण किया गया है, अतिशय सूक्ष्मत्वगुणके स्वामी, नीरूप, शब्दरहित, बाधारहित, विकस्वर-दुष्प्राप्ति या थकावट


के विरुद्ध, महानसुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्ध भगवान् आप जयवंत रहें ॥ ६ ॥ विभिन्नतपश्चरणोंके द्वारा भूषित हो चुका है योग जिनका, समाप्त हो गई हैं बाधाएँ जिनकी, वीतशोक, रोगरहित, महानदुःखस्वरूप दावानलके लिये मेघके समान, महासुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्धदेव आप जयवंत रहें ॥ ७ ॥ शाश्वतिक कालकलामें निवास करनेवाले संसाररूप समुद्रको सुखादेनेवाले शुद्ध, प्रकाशयुक्त, मन और इन्द्रियोंसे रहित, विशुद्ध महानसुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्ध भगवन् आप जयवंत रहें ॥ ८ ॥ अनादि और अनन्त पदमें स्थित है रूप-आकृति जिनकी, रसादिसेरहित, समस्त अन्यपदार्थोंसे पृथग्भूत, सब पदार्थोंको विशेषरूपसे प्रकाशित करनेवाले अथवा सम्पूर्ण विभावभावों या दोषोंको कम्पितकर देनेवाले जरा जीर्णता-वृद्धत्व आदि अवस्थाओंका दलन करनेवाले, विशुद्ध महासुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्धदेव आप जयवन्त रहे ॥ ९ ॥ हे महेश—महान् ऐश्वर्ययुक्त, हे सुशकर—समीचीन कल्याणके कर्त्ता, हे निर्जर—कभी जीर्ण न होनेवाले, हे शक्र—अनन्तशक्ति युक्त, हे मुनीन्द्र—मुनियोंके नाथ, हे सुचन्द्र—भले प्रकार सबको चन्द्रमाके समान आन्हादित करनेवाले, हे सुभास्करचक्र—कोटिसूर्यसमान तेजके धारक, हे पराच्युतभाव—उत्कृष्ट और कभी भी च्युत न होनेवाले हैं भाव जिनके, हे अत्यन्तशीतल ज्ञानस्वरूप, महान् सुखमे निमग्न तेजोरूप सिद्धपरमेष्ठिन् आप जयवत रहे ॥ १० ॥ इस तरह आत्मरससे पूर्णभावरूप, पुनरुत्पत्तिसे रहित, प्राप्त कर लिया है कल्याणरूप समीचीन सार जिन्होंने सम्पूर्ण मनुष्योंके द्वारा पूज्य तथा शुभचन्द्रादिकेद्वारा सेव्य ऐसे सिद्ध परमेष्ठियोंके समूहका जो भव्य स्मरण करता है वह समस्त अभ्युदयोंको भोगकर अन्तमे मुक्तिरूप समीचीन शान्तिको भी प्राप्त किया करता है ॥ ११ ॥

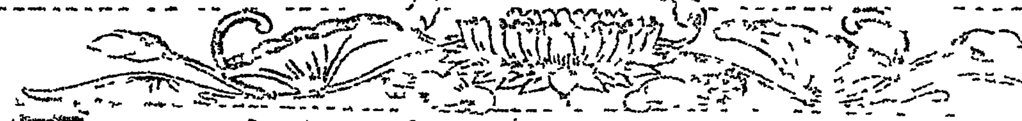





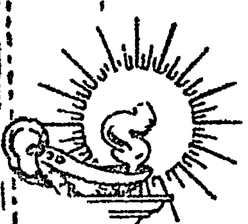
श्रीभगवज्जिनसेनाचार्यकृत–

सहस्रनामगर्भितमन्त्राणि.

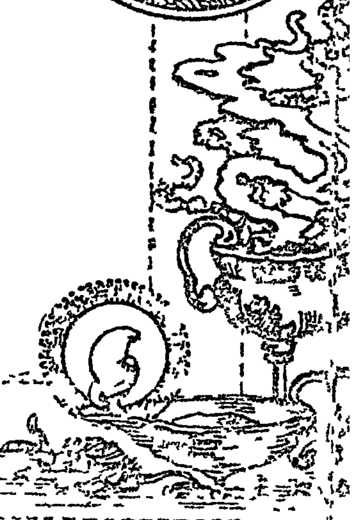
ॐ ह्रीं श्रीमते नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं वृषभाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं संभवाय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं शंभवे नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं प्रभवे नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं अक्षराय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं विभवे नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं धात्रे नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं विधये नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं वेधसे नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं जगज्ज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये नमः स्वाहा । ३२ ।



ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं विश्वदर्शे नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं जिनाय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं अमेयात्मने नम स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं जगत्पतये नम. स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं अनन्तजिते नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं भव्यबन्धवे नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं अबन्धनाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं शिवाय नमः स्वाहा । ५० ॐ ह्रीं पराय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं परतराय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं सनातनाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अजाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अजन्मने नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं जेत्रे नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं प्रशान्तारये नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं योगिने नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नम. स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नम. स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः स्वाहा । ७२ । ह्रीं शुद्धाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं



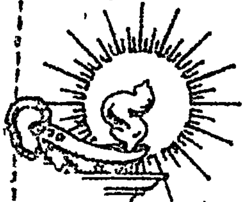






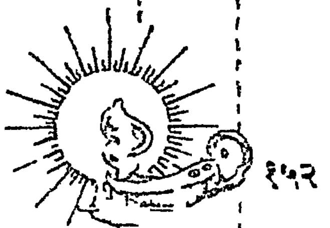
बुद्धाय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नम. स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं सिद्धाय नम. स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं सिद्धान्तविदे नम स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं ध्येयाय नम· स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नम· स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं जगद्धिताय नम. स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं सहिष्णवे नम स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं अच्युताय नम· स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं अनन्ताय नम स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नम· स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नम. स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नम. स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं अजराय नम. स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं अजय्याय नम स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नम स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं धीश्वराय नम स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अव्ययाय नम. स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं विभावसवे नम स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं असभूष्णवे नम स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं स्वयभूष्णवे नम स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं पुरातनाय नम· स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं परमात्मने नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं परज्योतिषे नम स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नम स्वाहा । १०० ।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं दिव्याय नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं पूतवाचे नम स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः स्वाहा । १०४ । ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः स्वाहा । १०७ । ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्रीं श्रीपतये नम· स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं भगवते नमः स्वाहा



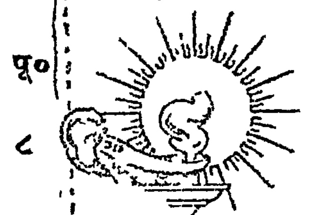


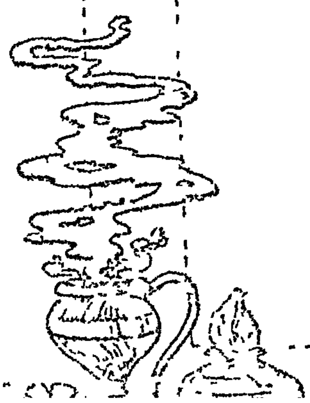


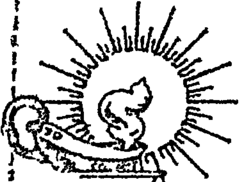




। ११० । ॐ ह्रीं अर्हते नमः स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं अरजसे नमः स्वाहा । ११२ । ॐ ह्रीं विरजसे नमः स्वाहा । ११३ । ॐ ह्रीं शुचये नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं तीर्थकृते नम. स्वाहा । ११५ । ॐ ह्रीं केवलिने नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्रीं ईशानाय नमः स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं अमलाय नमः स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं अनन्तदीप्तये नम. स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नम स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं स्वयबुद्धाय नम. स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं मुक्ताय नम· स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं शक्ताय नम. स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं निराबाधाय नम· स्वाहा । १२७ । ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः स्वाहा । १२८ । ॐ ह्रीं भुवनेश्वरार्चिताय नमः स्वाहा । १२९ । ॐ ह्रीं निरजनाय नम. स्वाहा । १३० । ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नम. स्वाहा । १३१ । ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये नमः स्वाहा । १३२ । ॐ ह्रीं अनामयाय नमः स्वाहा । १३३ । ॐ ह्रीं अचलस्थितये नम· स्वाहा । १३४ । ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नम. स्वाहा । १३५ । ॐ ह्रीं कूटस्थाय नम· स्वाहा । १३६ । ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः स्वाहा । १३७ । ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः स्वाहा । १३८ । ॐ ह्रीं अग्रण्यै नम· स्वाहा । १३९ । ॐ ह्रीं ग्रामण्यै नमः स्वाहा । १४० । ॐ ह्रीं नेत्रे नम. स्वाहा । १४१ । ॐ ह्रीं प्रणेत्रे नम. स्वाहा । १४२ । ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः स्वाहा । १४३ । ॐ ह्रीं शास्त्रे नम. स्वाहा । १४४ । ॐ ह्रीं धर्मपतये नम स्वाहा । १४५ । ॐ ह्रीं धर्म्याय नम. स्वाहा । १४६ । ॐ ह्रीं धर्मात्मने नम· स्वाहा । १४७ । ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते नमः स्वाहा । १४८ । ॐ ह्रीं वृषध्वजाय नमः स्वाहा । १४९ । ॐ ह्रीं वृषाधीशाय नमः स्वाहा । १५० ।





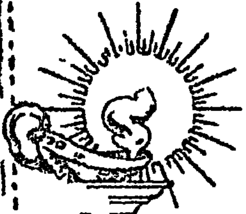





ॐ ह्रीं बृषकेतवे नम स्वाहा । १५१ । ॐ ह्रीं वृषायुधाय नम स्वाहा । १५२ । ॐ ह्रीं बृषाय नमः स्वाहा । १५३ । ॐ ह्रीं बृषपतये नम. स्वाहा । १५४ । ॐ ह्रीं भर्त्रे नम स्वाहा । १५५ । ॐ ह्रीं बृषभांकाय नम स्वाहा । १५६ । ॐ ह्रीं बृषोद्भवाय नमः स्वाहा । १५७ । ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये नम. स्वाहा । १५८ । ॐ ह्रीं भूतात्मने नम स्वाहा । १५९ । ॐ ह्रीं भूतभृते नमः स्वाहा । १६० । ॐ ह्रीं भूतभावनाय नम स्वाहा । १६१ । ॐ ह्रीं प्रभवाय नम. स्वाहा । १६२ । ॐ ह्रीं विभवाय नमः स्वाहा । । १६३ । ॐ ह्रीं भास्वते नम· स्वाहा । १६४ । ॐ ह्रीं भवाय नम स्वाहा । १६५ । ॐ ह्रीं भावाय नम· स्वाहा । १६६ । ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः स्वाहा । १६७ । ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः स्वाहा । १६८ । ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नम· स्वाहा । १६९ । ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नम· स्वाहा । १७० । ॐ ह्रीं अभवाय नमः स्वाहा । १७१ । ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः स्वाहा । १७२ । ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः स्वाहा । १७३ । ॐ ह्रीं भूतनाथाय नम. स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं सर्वादये नम. स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं सर्वदृशे नमः स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं सार्वाय नमः स्वाहा । १७८ । ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः स्वाहा । १७९ । ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः स्वाहा । १८० । ॐ ह्रीं सर्वात्मने नमः स्वाहा । १८१ । ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः स्वाहा । १८३ । ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते नमः स्वाहा । १८४ । ॐ ह्रीं सुगतये नम. स्वाहा । १८५ । ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः स्वाहा । १८६ । ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः स्वाहा । १८७ । ॐ ह्रीं सुवाचे नमः स्वाहा । १८८ । ॐ ह्रीं सूरये नम. स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं बहुश्रुताय नमः स्वाहा । १९० । ॐ ह्रीं विश्रुताय नम स्वाहा

। १९१ । ॐ ह्रीं विश्वत.पादाय नम स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय नम स्वाहा । १९३ । ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नम. स्वाहा । १९४ । ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय नम॰ स्वाहा । १९५ । ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नम. स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय नम॰ स्वाहा । १९७ । ॐ ह्रीं सहस्रपादे नम. स्वाहा । १९८ । ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नम॰ स्वाहा । १९९ । ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय नमः स्वाहा । २०० ।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय नम॰ स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं स्थविराय नम. स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं पृष्ठाय नम. स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नम. स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये नम स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं गरिष्ठाय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं बहिष्ठाय नम. स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नम स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं अणिष्ठाय नम. स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे नम. स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं विश्वमुपे नम॰ स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं विश्वसृजे नम स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं विश्वेशे नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं विश्वभुजे नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नम॰ स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं विश्वासिने नम. स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नम॰ स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं विश्वजिते नम. स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं विजितान्तकाय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं विभावाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं विभयाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं वीराय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं विशोकाय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं विजराय नम स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं जरते नम स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं विरागाय नम॰ स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं विरताय नम. स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं असङ्गाय नम. स्वाहा

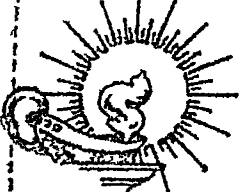


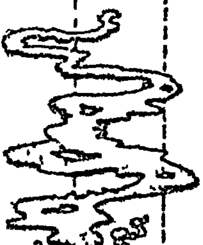


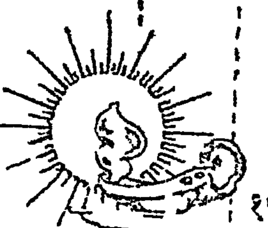





। ३० । ॐ ह्रीं विविक्ताय नम स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नम. स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं विनेयजनताबन्धवे नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय नम स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं वियोगाय नम. स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं योगविदे नम· स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं विद्रुपे नम स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं विधात्रे नम· स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं सुविधये नमः स्वाहा । ३९ ॐ ह्रीं सुधिये नम· स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं क्षान्तिभाजे नम· स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये नम. स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं शांतिभाजे नम स्वाहा । ४३ ।ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नम स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं वायुमूर्तये नम स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं असङ्गात्मने नम· स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं वह्निमूर्तये नम· स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं अधर्मदहे नम. स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं सुयज्वने नम· स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं यजमानात्मने नम स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं सुत्वने नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं सुत्रामपूजिताय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं ऋत्विजे नम· स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं यज्ञपतये नम. स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं यज्याय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं यज्ञाङ्गाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अमृताय नम. स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं हविषे नम स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं व्योममूर्तये नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने नम. स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं निर्मलाय नम. स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अचलाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं सोममूर्तये नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने नम स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं सूर्यमूर्तये नम स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं महाप्रभाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं मन्त्रविदे नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं मन्त्रकृते नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं मन्त्रिणे नम स्वाह । ७० । ॐ ह्रीं मन्त्रमूर्तये नम स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं अनन्तगाय नम. स्वाहा






| ७२ | ॐ ह्रीं स्वतन्त्राय नम स्वाहा | ७३ | ॐ ह्रीं तन्त्रकृते नमः स्वाहा | ७४ | ॐ ह्रीं स्वान्ताय नम स्वाहा | ७५ | ॐ ह्रीं कृतान्तान्ताय नमः स्वाहा | ७६ | ॐ ह्रीं कृतान्तकृते नमः स्वाहा | ७७ | ॐ ह्रीं कृतिने नमः स्वाहा | ७८ | ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः स्वाहा | ७९ | ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नम स्वाहा | ८० | ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः स्वाहा | ८१ | ॐ ह्रीं कृतक्रतवे नम स्वाहा | ८२ | ॐ ह्रीं नित्याय नम स्वाहा | ८३ | ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः स्वाहा | ८४ | ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः स्वाहा | ८५ | ॐ ह्रीं अमृतात्मने नम स्वाहा | ८६ | ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नम स्वाहा | ८७ | ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नम स्वाहा | ८८ | ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः स्वाहा | ८९ | ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः स्वाहा | ९० | ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नम स्वाहा | ९१ | ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः स्वाहा | ९२ | ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः स्वाहा | ९३ | ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः स्वाहा | ९४ | ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः स्वाहा | ९५ | ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः स्वाहा | ९६ | ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नम स्वाहा | ९७ | ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः स्वहा | ९८ | ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः स्वाहा | ९९ | ॐ ह्रीं पुराणपुरूषोत्तमाय नमः स्वाहा | २०० |

| १ ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय नम स्वाहा | २ | ॐ ह्रीं अशोकाय नमः स्वाहा | ३ | ॐ ह्रीं काय नमः स्वाहा | ४ | ॐ ह्रीं स्रष्ट्रे नमः स्वाहा | ५ | ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय नमः स्वाहा | ६ | ॐ ह्रीं पद्मेशाय नमः स्वाहा | ७ | ॐ ह्रीं पद्मसंभूतये नमः स्वाहा | ८ | ॐ ह्रीं पद्मनाभये नमः स्वाहा | ९ | ॐ ह्रीं अनुत्तराय नम स्वाहा | १० | ॐ ह्रीं पद्मयोनये नमः स्वाहा | ११ | ॐ ह्रीं जगद्योनये नमः





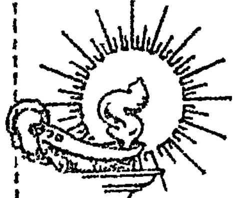




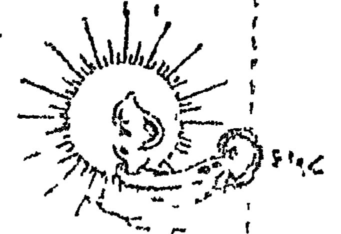
पू० ८

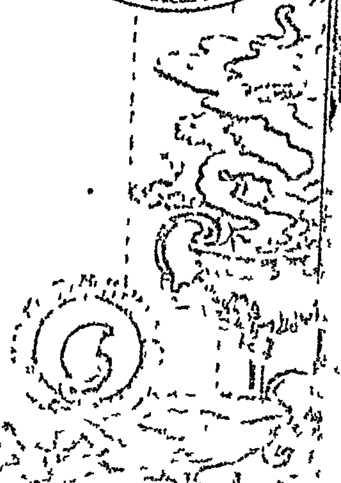



स्वाहा । १२ । ॐ ह्री इत्याय नम· स्वाहा । १३ । ॐ ह्री स्तुत्याय नम. स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं स्तुनीश्वराय नम. स्वाहा । १५ । ॐ ह्री स्तवनार्हाय नम स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्री जितजेयाय नम· स्वाहा । १८ । ॐ ह्री कृतक्रियाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्री गणाधिपाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्री गणज्येष्ठाय नम स्वाहा । २१ । ॐ ह्री गण्याय नम स्वाहा । २२ । ॐ ह्री पुण्याय नम स्वाहा । २३ । ॐ ह्री गणाग्रण्यै नम. स्वाहा । २४ । ॐ ह्री गुणाकराय नम· स्वाहा । २५ । ॐ ह्री गुणाम्भोधये नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्री गुणज्ञाय नम· स्वाहा । २७ । ॐ ह्री गुणनायकाय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्री गुणादरिणे नम· स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्री निर्गुणाय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्री पुण्यगिरे नम· स्वाहा । ३२ । ॐ ह्री गुणाय नम स्वाहा । ३३ । ॐ ह्री शरण्याय नम· स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नम· स्वाहा । ३५ । ॐ ह्री पूताय नम. स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं वरेण्याय नम स्वाहा । ३७ । ॐ ह्री पुण्यनायकाय नम स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं अगण्याय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं पुण्यधिये नम. स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं गुण्याय नम. स्वाहा । ४१ । ॐ ह्री पुण्यकृते नम. स्वाहा । ४२ । ॐ ह्री पुण्यशासनाय नम स्वाहा । ४३ । ॐ ह्री धर्मारामाय नम स्वाहा । ४४ । ॐ ह्री गुणग्रामाय नम स्वाहा । ४५ । ॐ ह्री पुण्यापुण्यनिरोधकाय नम स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं पापापेताय नम. स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं विपापात्मने नम स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं विपाप्मने नम स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय नम· स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं निर्द्वन्द्वाय नम स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं निर्मदाय नम स्वाहा । ५२ । ॐ ह्री शान्ताय नम. स्वाहा

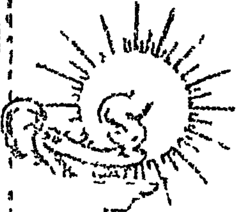


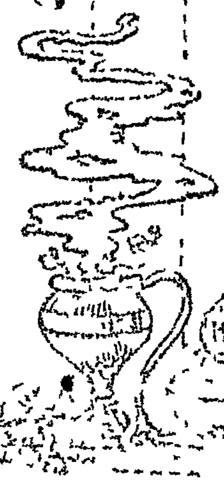


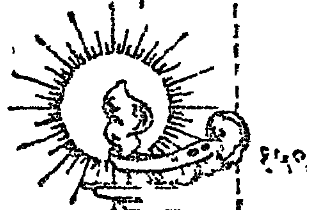




। ५३ । ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं निराहाराय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं निःक्रियाय नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं निष्कलङ्काय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं निरस्तैनसे नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं निर्धूतागसे नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं निरास्रवाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं विशालाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अतुलाय नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं अचिंत्यवैभवाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं सुसंवृत्ताय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं सुभुते नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं महाविद्याय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं मुनये नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं परिवृढाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं पत्ये नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं धीशाय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं विद्यानिधये नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं साक्षिणे नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं विनेत्रे नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं विहतान्तकाय नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं पित्रे नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं पितामहाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं पात्रे नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं पवित्राय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं पावनाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं गतये नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं त्रात्रे नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं भिषग्वराय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं वर्याय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं वरदाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं परमाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं पुंसे नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं कवये नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं वर्षीयसे







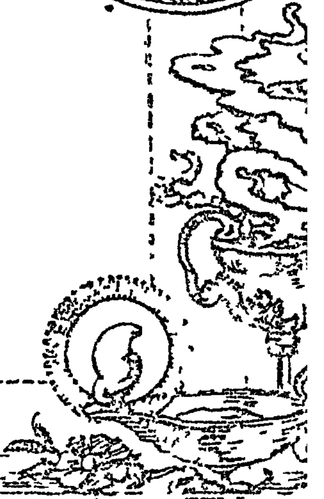


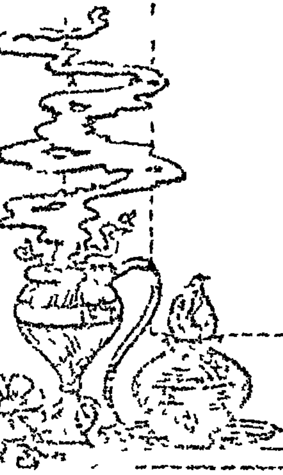
नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं वृषभाय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं पुरवे नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रभवाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं हेतवे नमः स्वाहा । १०० । ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय नमः स्वाहा । ४०० ।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं श्लक्ष्णाय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं लक्षण्याय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं निरक्षाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं पुण्डरीकाक्षाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं पुष्कलाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं सिद्धसङ्कल्पाय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं महाबोधये नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं वर्धमानाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं वेदाङ्गाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं वेदविदे नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं वेद्याय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं जातरूपाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं विदांवराय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं विवेदाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं वदतांवराय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं अव्यक्ताय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं अव्यक्तवाचे नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं युगाधाराय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं युगादये नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः स्वाहा । ३३ ।











ॐ ह्रीं अनीन्द्राय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं अनीन्द्रियाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं वीन्द्राय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदर्शे नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं अहमिन्द्रार्च्याय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं महते नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं उद्भवाय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं कारणाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं पारगाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं भवतारकाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं अगाह्याय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं गहनाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं गुह्याय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं परार्घ्याय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं अनन्तर्द्धये नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं अचिन्त्यर्द्धये नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं प्राग्रयाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं प्राग्रहराय नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं अभ्यग्रयाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं अग्र्याय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं अग्रिमाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अग्रजाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं महातपसे नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं महातेजसे नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं महोदर्काय नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं महोदयाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं महायशसे नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं महाधाम्ने नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं महासत्त्वाय नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं महाधृतये नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं महाधैर्याय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं महावीर्याय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं महासम्पदे नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं महाबलाय नमः स्वाहा

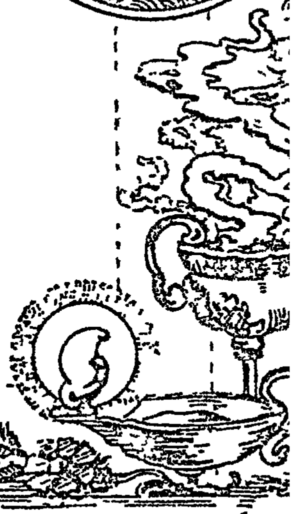




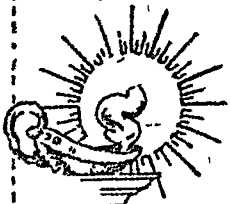






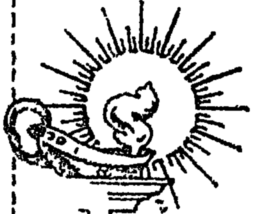


। ७५ । ॐ ह्रीं महाशक्तये नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं महाज्योतिषे नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं महाभूतये नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं महाद्युतये नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं महामतये नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं महानीतये नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं महाक्षान्तये नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं महादयाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं महाभागाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं महानन्दाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं महाक्रतये नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं महामहसे नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं महाकीर्तये नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं महाकान्तये नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं महावपुषे नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं महादानाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं महाज्ञानाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं महायोगाय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं महागुणाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं महामहपतये नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं प्राप्तमहाकल्याणपचकाय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं महाप्रभवे नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः स्वाहा । १०० ।=। ५०० ।




ॐ ह्रीं महामुनये नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं महामौनिने नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं महाध्यानिने नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं महादमाय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं महामखाय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं महाव्रतपतये नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं महाय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं महाकान्तिधराय

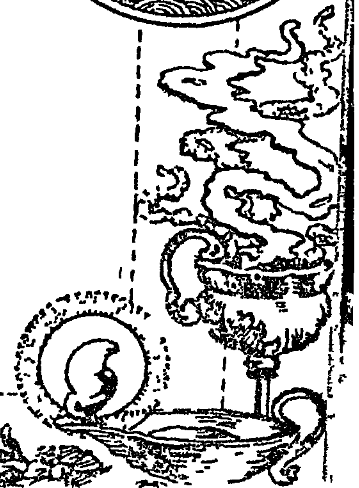




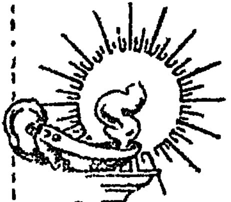
नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं अधिपाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं अमेयाय नम. स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं महोपायाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं महोमयाय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं मत्रे नम. स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं महामत्राय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं महायनये नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं महानादाय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं महाघोषाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं महेज्याय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं महसांपतये नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं महाध्वरधराय नम. स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं धुर्याय नम' स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं महौदार्याय नम. स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं महात्मने नम. स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं महसांधाम्ने नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं महर्षये नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं महितोदयाय नम. स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं महाक्लेशाकुशाय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं शूराय नम' स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं महाभूतपतये नम. स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं गुरवे नम. स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं महापराक्रमाय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं अनन्ताय नम. स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं वशिने नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं महाभवाब्धिसतारिणे नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं महामोहाद्रिसूदनाय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं महागुणाकराय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं क्षान्ताय नम स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नम. स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं शमिने नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं महाध्यानपतये नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं ध्यातमहाधर्माय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं महाव्रताय नम. स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं महाकर्मारिघ्ने नम' स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं आत्मज्ञाय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं



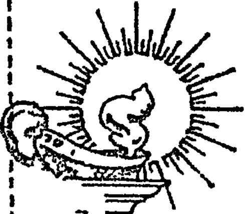





महादेवाय नम. स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं महेशित्रे नम स्वाहा । ५३ । ॐ ह्री सर्वक्लेशापहाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं साधवे नम स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं सर्वदोषहराय नम स्वाहा । ५६ । ॐ ह्री हराय नम. स्वाहा । ५७ । ॐ ह्री असंख्येयाय नम. स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने नम स्वाहा । ५९ । ॐ ह्री शमात्मने नम. स्वाहा । ६० । ॐ ह्री प्रशमाकराय नम· स्वाहा । ६१ । ॐ ह्री सर्वयोगीश्वराय नम. स्वाहा । ६२ । ॐ ह्री अचिन्त्याय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्री श्रुतात्मने नम. स्वाहा । ६४ । ॐ ह्री विष्टरश्रवसे नम स्वाहा । ६५ । ॐ ह्री दान्तात्मने नम. स्वाहा । ६६ । ॐ ह्री दमतीर्थेशाय नम. स्वाहा । ६७ । ॐ ह्री योगात्मने नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्री प्रधानाय नम. स्वाहा । ७० । ॐ ह्री आत्मने नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्री प्रकृतये नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्री परमाय नम. स्वाहा । ७३ । ॐ ह्री परमोदयाय नम· स्वाहा । ७४ । ॐ ह्री प्रक्षीणबन्धाय नम स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं कर्मारये नम. स्वाहा । ७६ । ॐ ह्री क्षेमकृते नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्री क्षेमशासनाय नम. स्वाहा । ७८ । ॐ ह्री प्रणवाय नम· स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं प्रणयाय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्री प्राणाय नम. स्वाहा । ८१ । ॐ ह्री प्राणदाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्री प्रणतेश्वराय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्री प्रमाणाय नम. स्वाहा । ८४ । ॐ ह्री प्रणिधये नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं दक्षाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्री दक्षिणाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं अध्वर्यवे नम. स्वाहा । ८८ । ॐ ह्री अध्वराय नम. स्वाहा । ८९ । ॐ ह्री आनन्दाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्री नन्दनाय नम. स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं नन्दाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं वन्द्याय नम. स्वाहा । ९३ ।





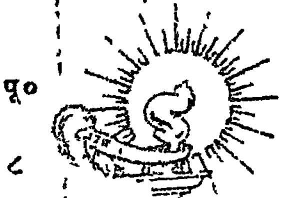





ॐ ह्री अनिन्द्याय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्री कामघ्ने नम. स्वाहा । ९६ । ॐ ह्री कामदाय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्री काम्याय नम. स्वाहा । ९८ । ॐ ह्री कामधेनवे नम स्वाहा । ९९ । ॐ ह्री अरिंजयाय नमः स्वाहा । १०० ।=६००

ॐ ह्री असंस्कृतसुसस्काराय नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्री अप्राकृताय नम. स्वाहा । २ । ॐ ह्री वैकृतान्तकृते नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्री अनन्तकृते नम. स्वाहा । ४ । ॐ ह्री कान्तगवे नम. स्वाहा । ५ । ॐ ह्री कान्ताय नम' स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं चिन्तामणये नम. स्वाहा । ७ । ॐ ह्री अभीटदाय नम' स्वाहा । ८ । ॐ ह्री अजिताय नम' स्वाहा । ९ । ॐ ह्री जितकामारये नम. स्वाहा । १० । ॐ ह्री अमिताय नम' स्वाहा । ११ । ॐ ह्री अमितशासनाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्री जितक्रोधाय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं जितामित्राय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं जितक्लेशाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्री जितान्तकाय नम' स्वाहा । १६ । ॐ ह्री जिनेन्द्राय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्री परमानन्दाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं मुनीन्द्राय नम. स्वाहा । १९ । ॐ ह्री दुन्दुभिस्वनाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्री महेन्द्रवन्द्याय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं योगीन्द्राय नम' स्वाहा । २२ । ॐ ह्री यतीन्द्राय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्री नाभिनन्दनाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं नाभेयाय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्री नाभिजाय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्री अजाताय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्री सुव्रताय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्री मनवे नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्री उत्तमाय नम स्वाहा । ३० । ॐ ह्री अभेद्याय नम. स्वाहा । ३१ । ॐ ह्री











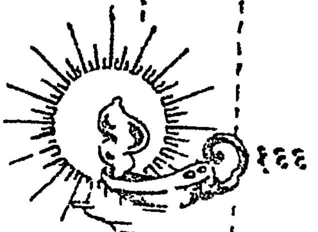




अनत्ययाय नम· स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं अनाश्वते नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं अधिकाय नमः स्वाहा
। ३४ । ॐ ह्रीं अधिगुरवे नम· स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं सुगिरे नम· स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं सुमेधसे नमः
स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं विक्रामिणे नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं स्वामिने नम स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं
दुराधर्षाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय नम स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं विशिष्टाय नमः स्वाहा
। ४२ । ॐ ह्रीं शिष्टभुजे नम. स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं शिष्टाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं प्रत्ययाय
नम. स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं कामनाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं अनघाय नम स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं
क्षेमिणे नम स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं क्षेमकराय नम स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः स्वाहा । ५० ।
ॐ ह्रीं क्षेमधर्मपतये नम स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं क्षमिणे नम. स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं अग्राह्याय नम.,
स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं ज्ञाननिग्राह्याय नम. स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं ध्यानगम्याय नमः स्वाहा । ५५ ।
ॐ ह्रीं निरुत्तराय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं सुकृतिने नम· स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं धातवे नमः स्वाहा
। ५८ । ॐ ह्रीं इज्यार्हाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं सुनयाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं चतुराननाय
नम· स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं श्रीनिवासाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय नम. स्वाहा । ६३ ।
ॐ ह्रीं चतुरास्याय नम· स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं सत्यात्मने नम·
स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं सत्यवाचे नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं

१ सहस्रनाम पूजनमे " अनघाय " की जगह " नयाय " पाठ पाया जाता है।





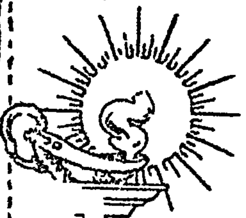


मत्यशासनाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं सत्यसंधानाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं सत्याय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं स्थवीयसे नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं नेदीयसे नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं दवीयसे नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं दूरदर्शनाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं अणोरणीयसे नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं अनणवे नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं गरीयसामाद्यगुरवे नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं सदातृप्ताय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं सदागतये नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं सदासौख्याय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं सदाविद्याय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं सदोदयाय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं सुघोषाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं सुमुखाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं सौम्याय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं सुखदाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं सुहिताय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं सुहृदे नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं सुगुप्ताय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं गुप्तिभृते नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं गोप्त्रे नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं दमेश्वराय नमः स्वाहा । १०० ।=७००

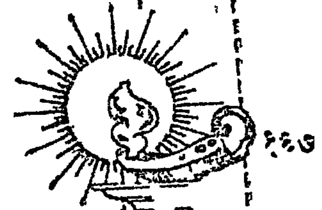
ॐ ह्रीं बृहद्बृहस्पतये नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं वाग्मिने नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं वाचस्पतये

---

१ स पूजा में बृहते और बृहस्पतये अलहदा २ नाम हैं और आगे चलकर निर्मलामोघशासनाय एकही नाम रक्खा है परन्तु आदि पुराण की हिंदी टीका बृहदबृहस्पतये एक और निर्मलाय तथा अमोघशासनाय भिन्न २ नाम हैं।



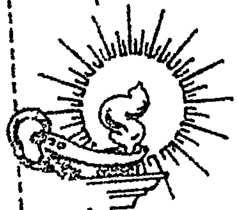


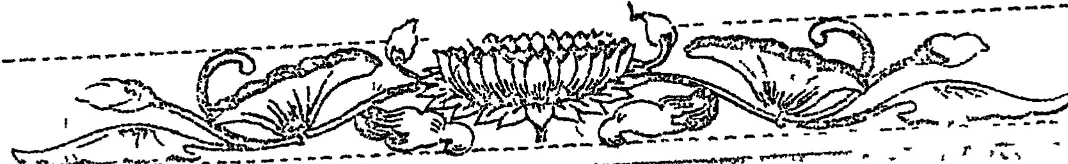


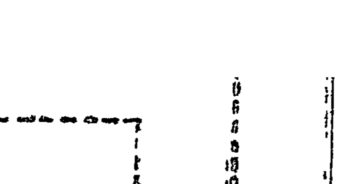



सिद्ध चक्र ह्रीं मंडल विधान

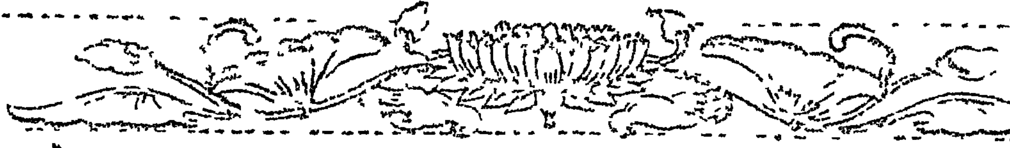
नम स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं उदारधिये नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं मनीषिणे नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं
धिषणाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्री धीमते नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्री शेमुषीशाय नमः स्वाहा । ८ ।
ॐ ह्रीं गिरॉपतये नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं नैकरूपाय नम. स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं नयोत्तुगाय नम.
स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं नैकात्मने नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्री नैकधर्मकृते नम. स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं
अविज्ञेयाय नम· स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं कृतज्ञाय नमः स्वाहा
। १६ । ॐ ह्रीं कृतलक्षणाय नम. स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं ज्ञानगर्भाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं
दयागर्भाय नम. स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं प्रभास्वराय नमः स्वाहा
। २१ । ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्री जगद्गर्भाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्री
हेमगर्भाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं सुदर्शनाय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते नमः स्वाहा
। २६ । ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षाय नम स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं. दृढीयसे नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं इनाय
नमः स्वाहा । २९. । ॐ ह्रीं ईशित्रे नम· स्वाहा ३० । ॐ ह्रीं मनोहराय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं
मनोज्ञागाय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं धीराय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं गभीरशासनाय नमः स्वाहा
। ३४ । ॐ ह्रीं धर्मयूपाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं दयायागाय नम· स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं धर्मनेमये
नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः स्वाहा । ३९ ।
ॐ ह्रीं देवाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय नमः स्वाहा
। ४२ । ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं





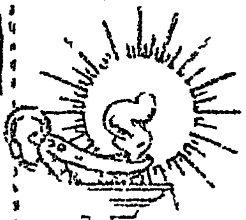




निर्मलाय नम स्वाहा । ४५ । ॐ ह्री अमोघशासनाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं सुरूपाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्री सुभगाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्री त्यागिने नम॰ स्वाहा । ४९ । ॐ ह्री समयज्ञाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्री समाहिताय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्री सुस्थिताय नम. स्वाहा । ५२ । ॐ ह्री स्वास्थ्यभाजे नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्री स्वस्थाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्री नीरजस्काय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्री निरुद्धवाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्री अलेपाय नम स्वाहा । ५७ । ॐ ह्री निष्कलङ्कात्मने नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्री वीतरागाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्री गतस्पृहाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्री वश्येन्द्रियाय नम स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्री निःसपत्नाय नम. स्वाहा । ६३ । ॐ ह्री जितेन्द्रियाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्री प्रशान्ताय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अनन्तधामर्षये नम॰ स्वाहा । ६६ । ॐ ह्री मंगलाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्री मलघ्न नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्री अनघाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्री अनीदृशे नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्री उपमाभूताय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्री दिष्टये नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्री दैवाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्री अगोचराय नम॰ स्वाहा । ७४ । ॐ ह्री अमूर्ताय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्री मूर्तिमते नम. स्वाहा । ७६ । ॐ ह्री एकस्मै नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्री नैकस्मै नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्री नानैकतत्त्वदृशे

---

१ स पूजा में इसके दो नाम पृथक् २ हैं। आदि पुराण मे एकही नाम रक्खा है, आगे चलकर आ पु. मे "मगल" नाम भी दिया है जो कि स पूजा में नहीं है।



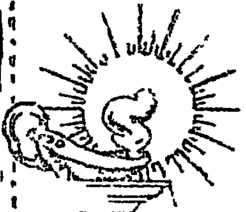


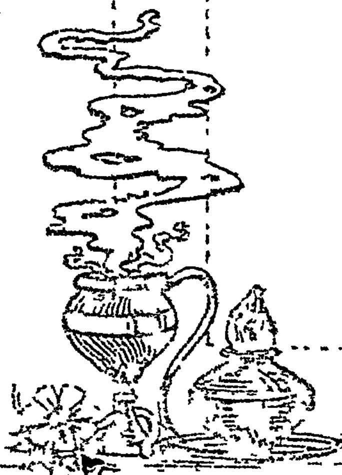




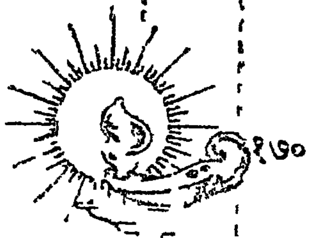
ॐ ह्रीं अगम्यात्मने नमः स्वाहा । ८१ ।
नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्याय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय नमः
ॐ ह्रीं योगविदे नम स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं योगिवन्दिताय नमः स्वाहा । ८३ ।
स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं सदाभाविने नम. स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं त्रिकालविपयार्थदशे नमः स्वाहा । ८६ ।
ॐ ह्रीं शक्राय नम स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं शब्दाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं दान्ताय नमः स्वाहा
। ८९ । ॐ ह्रीं दमिने नम. स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं क्षान्तिपरायणाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं अधिपाय
नम· स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं परमानन्दाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय नमः स्वाहा । ९४ ।
ॐ ह्रीं परात्पराय नम. स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं अभ्यर्च्या
नम. स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं त्रिजगत्मगलोदयाय नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं त्रिजगत्पातिपूज्याग्रये नम. स्वाहा
। ९९ । ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामणये नम. स्वाहा । १०० ।=८००

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने नम. स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं लोकधात्रे
नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं दृढव्रताय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय नमः स्वाहा । ५ ।
ॐ ह्रीं पूज्याय नम स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं सर्वलोकैकसारथये नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं पुराणाय नम.
स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं पुरुषाय नम. स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं पूर्वस्मै नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं कृतपूर्वाङ्ग-
विस्तराय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं आदिदेवाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं पुराणाद्याय नमः स्वाहा
। १३ । ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नम. स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं अधिदेवतायै नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं युगमुख्याय



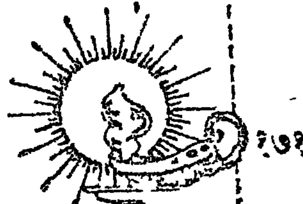


नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं कल्याणाय नम· स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं कल्याय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं दीप्तकल्याणात्मने नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं विकल्मषाय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं विकलङ्काय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं कलातीताय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं कलाधराय नम स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं जगद्बन्धवे नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं जगद्विभवे नम· स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं लोकज्ञाय नम. स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं सर्वगाय नम स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं जगदग्रजाय नम. स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं चराचरगुरवे नम· स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं गोप्याय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं गूढात्मने नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं गूढगोचराय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नम. स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय नम· स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं भर्माभाय नम स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं कनकप्रभाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं रुक्माभाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं सूर्यकोटिसमप्रभाय नम स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय नम· स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं तुंगाय नम स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं बालार्काभाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं अनलप्रभाय नमः स्वाहा । ५५ ।



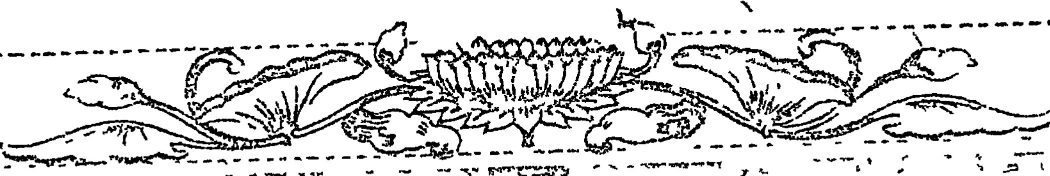
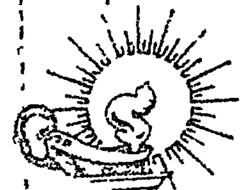




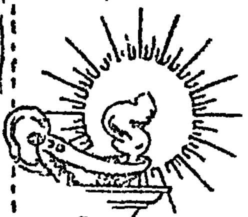



ॐ ह्रीं सन्ध्याभ्रबभ्रवे नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं हेमाभाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं तप्तचामीकरच्छवये[1] नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं कनत्काञ्चनसन्निभाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं शातकुम्भनिभप्रभाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं जातरूपाभाय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं दीप्तजाम्बूनदद्युतये नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं क्षमाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं अमोघाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं प्रशास्त्रे नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं शासित्रे नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं स्वभुवे नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं शान्तिनिष्ठाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं शिवतातये नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं शिवप्रदाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं शान्तिदाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं शान्तिकृते नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं शान्तये नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं कान्तिमते नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं कामितप्रदाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये नमः स्वाहा

१ मुद्रितादिपुराणेतु "तप्तचामीकरप्रभ", "तप्तजाम्बूनदद्युति" इतिपाठ ।



। ९१ । ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं प्रतिष्ठिताय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं स्थावराय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं प्रथीयसे नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं प्रथिताय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं पृथवे नम: स्वाहा । १०० ।=९००




ॐ ह्रीं दिग्वाससे नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं वातरशनाय नम. स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थेशाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं निरम्बराय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं निष्किञ्चनाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं निराशसाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं अमोमुहाय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं तेजोराशये नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं अनन्तौजसे नम स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धये नम स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं शीलसागराय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं तेजोमयाय नम. स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं अमितज्योतिषे नम. स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं तमोपहाय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं जगच्चूडामणये नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं दीप्ताय नम स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं शंवते नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं विघ्नविनायकाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं कलिघ्नाय नम. स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं अनिन्द्रालवे नम: स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं अतन्द्रालवे नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं जागरूकाय नम. स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं प्रामामयाय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं

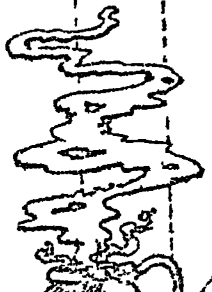


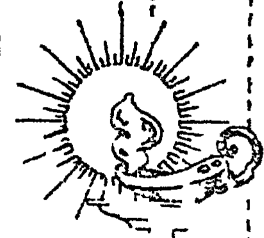


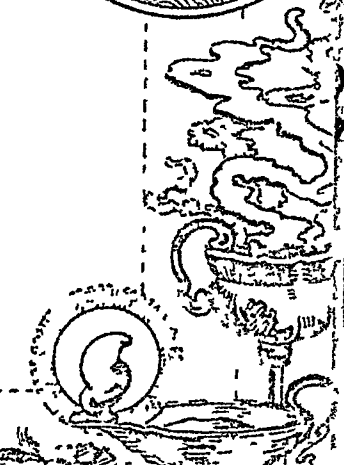


जगज्ज्योतिषे नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं प्रजाहिताय नमः स्वाहा
। ३१ । ॐ ह्रीं मुमुक्षवे नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं बन्धमोक्षज्ञाय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं जिताक्षाय
नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं जितमन्मथाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं प्रशान्तरसशैलूषाय नमः स्वाहा
। ३६ । ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकाय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं
अखिलज्योतिषे नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं मलघ्नाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः
स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं आप्ताय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं
श्रेयसे नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः स्वाहा
। ४६ । ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं मारजिते
नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं विश्वभावविदे नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं सुतनवे नमः स्वाहा । ५१ ।
ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्ताय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं सुगताय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय नमः
स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं श्रीशाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः स्वाहा । ५६ ।
ॐ ह्रीं वीतभिये नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अभयकराय नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषाय
नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं निश्चलाय नमः स्वाहा । ६१ ।
ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं लोकोत्तराय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं लोकपतये
नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अपारधिये नमः स्वाहा । ६६ ।
ॐ ह्रीं धीरधिये नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः



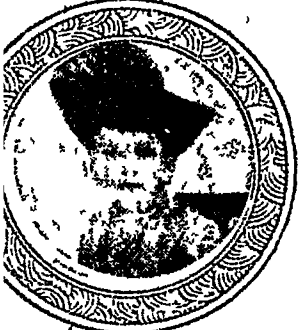



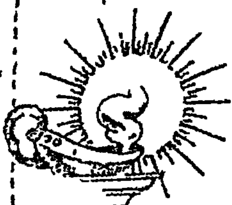


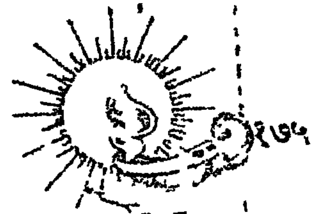


स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं मनूनपूतवाचे नम. स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्री प्राज्ञाय नम· स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं यतये नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं नियमितेन्द्रियाय नम. स्वाहा । ७४ । ॐ ह्री भदन्ताय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं भद्रकृते नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं भद्राय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्री कल्पवृक्षाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं वरप्रदाय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्री समुन्मूलितकर्मारये नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणाये नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं कर्मण्याय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्री कर्मठाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं प्राशवे नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्री हेयादेयविचक्षणाय नम. स्वाहा । ८५ । ॐ ह्री अनन्तशक्तये नम. स्वाहा । ८६ । ॐ ह्री अच्छेद्याय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं त्रिपुरारये नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नम· स्वाहा । ८९ । ॐ ह्री त्रिनेत्राय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं त्र्यम्बकाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं समन्तभद्राय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्री शान्तारये नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्री धर्माचार्याय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं दयानिधये नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्री सूक्ष्मदर्शिने नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्री जितानङ्गाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्री कृपालवे नमः स्वाहा । १०० ।=१०००

ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं शुभयवे नम· स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं पुण्यराशये नम· स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं अनामयाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं

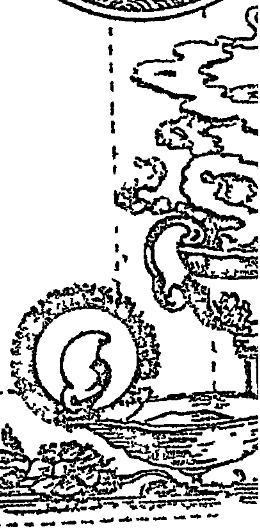



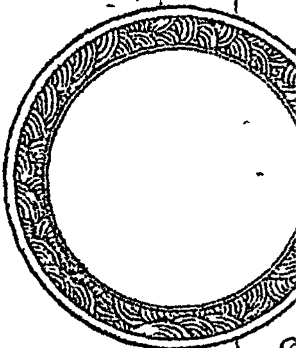



धर्मपालाय नम स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः
स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं उदितोदितमाहात्म्याय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं व्यवहारसुगुप्ताय नमः स्वाहा । १० ।
ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षगुणाय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं सिद्धिपुरीपान्थाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं
सहृतध्वनये नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं योगकिट्टिनिर्लेपनोद्यनाय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं त्रुटत्कर्मपाशाय
नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं परमनिर्जराय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं निर्णीतानन्तपर्यायाय नमः स्वाहा
। १७ । ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रशीलेशाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं पचलघ्वक्षरस्थितये नमः स्वाहा
। १९ । ॐ ह्रीं द्रव्यसिद्धाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं द्वासप्ततिप्रकृत्याशिपे नमः स्वाहा । २१ ।
ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकृतिप्रणुते नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं ज्ञाननिर्भराय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं
ज्ञानैकचिज्जीवघनाय नमः स्वाहा । २४ ।=१०२४

इत्यष्टमदले चतुर्विंशत्युत्तरसहस्रनामपूजा संपूर्णा ।

सिद्ध चक्र ह्रीं मंडल विधान











भारतीय श्रुति-दर्शन केन्द्र
जयपुर